उन जिज्ञासुओ को,
जिनकी उर्वर-मनोभूमि मे
ये बीज
अकुरित
पुष्पित
फलित हो
अपना विराट् रूप प्राप्त कर सकें !

## प्राप्ति केन्द्र

* **श्री विशनदयाल गोयल**
  'हरियाणा निवास'
  ४०, विवेकानन्द रोड
  कलकत्ता-७

* **श्री सम्पतराय बोरड़**
  C/o मदनचन्द सम्पतराय बोरड
  ४०, धानमण्डी
  श्री गंगानगर (राजस्थान)

* **श्री मोतीलाल पारख**
  दि अहमदाबाद लक्ष्मी कॉटन् मिल्स क० लि०
  पो० बाक्स नं० ४२
  अहमदाबाद-२२

# प्राक्कथन

मानव जीवन मे वाचा की उपलब्धि एक बहुत बडी उपलब्धि है। हमारे प्राचीन आचार्यों की दृष्टि मे वाचा ही सरस्वती का अधिष्ठान है, **वाचा सरस्वती भिषग्**[1]—वाचा ज्ञान की अधिष्ठात्री होने से स्वय सरस्वती रूप है, और समाज के विकृत आचार-विचार रूप रोगो को दूर करने के कारण यह कुशल वैद्य भी है।

अन्तर के भावो को एक दूसरे तक पहुचाने का एक बहुत बडा माध्यम वाचा ही है। यदि मानव के पास वाचा न होती तो, उसकी क्या दशा होती? क्या वह भी मूकपशुओ की तरह भीतर ही भीतर घुटकर समाप्त नही हो जाता? मनुष्य, जो गूगा होता है, वह अपने भावो की अभिव्यक्ति के लिए कितने हाथ-पैर मारता है, कितना छटपटाता है, फिर भी अपना [illegible] समझा पाता है दूसरो को?

बोलना वाचा का एक गुण है, किन्तु बोलना एक अलग चीज है, और वक्ता होना वस्तुत एक अलग चीज है। बोलने को हर कोई बोलता है, पर वह कोई कला नहीं है, किन्तु वक्तृत्व एक कला है। वक्ता साधारण से विषय को भी इतने सुन्दर और मनोहारी रूप से प्रस्तुत करता है कि श्रोता मन्त्रमुग्ध हो जाते है। उसके बोल श्रोता के हृदय में ऐसे उतर जाते है कि वह उन्हें जीवन भर नहीं भूलता।

कर्मयोगी श्रीकृष्ण, भगवान् महावीर, तथागत बुद्ध, व्यास और भद्रबाहु आदि भारतीय [illegible]

---

१ यजुर्वेद १९।१२

जिनकी वाणी का नाद आज भी हजारो-लाखो लोगो के हृदयो को आप्यायित कर रहा है। महाकाल की तूफानी हवाओ मे भी उनकी वाणी की दिव्य ज्योति न बुझी है और न बुझेगी।

हर कोई वाचा का धारक, वाचा का स्वामी नही बन सकता। वाचा का स्वामी ही वाग्मी या वक्ता कहलाता है। वक्ता होने के लिए ज्ञान एव अनुभव का आयाम बहुत ही विस्तृत होना चाहिए। विशाल अध्ययन, मनन-चितन एव अनुभव का परिपाक वाणी को तेजस्वी एव चिरस्थायी बनाता है। बिना अध्ययन एव विषय की व्यापक जानकारी के भाषण केवल भषण (भोकना) मात्र रह जाता है, वक्ता कितना ही चीखे-चिल्लाये, उछले-कूदे यदि प्रस्तावित विषय पर उसका सक्षम अधिकार नही है, तो वह सभा मे हास्यास्पद हो जाता है, उसके व्यक्तित्व की गरिमा लुप्त हो जाती है। इसीलिए बहुत प्राचीनयुग मे एक ऋषि ने कहा था--**वक्ता शतसहस्रेषु**, अर्थात् लाखो मे कोई एक वक्ता होता है।

शतावधानी मुनिश्री धनराज जी जैनजगत के यशस्वी प्रवक्ता। उनका प्रवचन, वस्तुत प्रवचन होता है। श्रोताओ को अपने ।वित विषय पर केन्द्रित एव मत्रमुग्ध कर देना उनका सहज कर्म ।। और यह उनका वक्तृत्व—एक बहुत बडे व्यापक एव गभीर ध्ययन पर आधारित है। उनका सस्कृत-प्राकृत आदि प्राचीन षाओ का ज्ञान विस्तृत है, साथ ही तलस्पर्शी भी। मालूम होता है, उन्होने पाडित्य को केवल छुआ भर नही है, किंतु समग्रशक्ति के साथ उसे गहराई से अधिग्रहण किया है। उनकी प्रस्तुत पुस्तक '**वक्तृत्वकला के बीज**' मे यह स्पष्ट परिलक्षित होता है।

प्रस्तुत कृति मे जैन आगम, बौद्धवाङ्मय, वेदो से लेकर उपनिषद् ब्राह्मण, पुराण, स्मृति आदि वैदिक साहित्य तथा लोककथानक, कहा-नते, रूपक, ऐतिहासिक घटनाएँ, ज्ञान-विज्ञान की उपयोगी चर्चाएँ—

इसप्रकार शृखलावद्ध रूप मे सकलित हैं कि किसी भी विपय पर हम वहुत कुछ विचार-सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। सचमुच वक्तृत्व-कला के अगणित वीज इसमे सन्निहित है। सूक्तियो का तो एक प्रकार से यह रत्नाकर ही है। अग्रेजी साहित्य व अन्य धर्मग्रथो के उद्धरण भी काफी महत्वपूर्ण हैं। कुछ प्रसग और स्थल तो ऐसे हैं, जो केवल सूक्ति और सुभाषित ही नही है, उनमे विषय की तलस्पर्शी गहराई भी है और उसपर से कोई भी अध्येता अपने ज्ञान के आयाम को और अधिक व्यापक वना सकता है। लगता है, जैसे मुनि श्री जी वाङ्मय के रूप मे विराट् पुरुष हो गए है। जहा पर भी दृष्टि पडती है, कोई-न-कोई वचन ऐसा मिल ही जाता है, जो हृदय को छू जाता है और यदि प्रवक्ता प्रसगत अपने भापण मे उपयोग करे, तो अवश्य ही श्रोताओ के मस्तक झूम उठेंगे।

प्रश्न हो मकता है—'वक्तृत्वकला के वीज' मे मुनि श्री का अपना क्या है ? यह एक सग्रह है और सग्रह केवल पुरानी निधि होती है, परन्तु मैं कहूगा—कि फूलो की माला का निर्माता माली जव विभिन्न जाति एव विभिन्न रगो के मोहक पुष्पो की माला वनाता है तो उसमें उसका अपना क्या है ? विखरे फूल, फूल है, माला नही। माला का अपना एक अलग ही विलक्षण सौन्दर्य है। रग-विरगे फूलो का उपयुक्त चुनाव करना और उनका कलात्मक रूप मे सयोजन करना—यही तो मालाकार का काम है, जो स्वय मे एक विलक्षण एव विशिष्ट कलाकर्म है। मुनि श्री जी वक्तृत्वकला के वीज मे ऐसे ही विलक्षण मालाकार हैं। विपयो का उपयुक्त चयन एव तत्सम्वन्धित सूक्तियो आदि का सकलन इतना शानदार हुआ है कि इस प्रकार का सकलन अन्यत्र इस रूप मे नही देखा गया।

एक वात और—श्री चन्दनमुनि जी की सस्कृत-प्राकृत रचनाओ ने मुझे यथावसर काफी प्रभावित किया है। मैं उनकी विद्वत्ता का प्रशसक रहा हू। श्री धनमुनि जी उनके वडे भाई हैं—जव यह मुझे

# सम्पादकीय

वक्तृत्वगुण एक कला है, और वह वहुत बडी साधना की अपेक्षा करता है। आगम का ज्ञान, लोकव्यवहार का ज्ञान, लोकमानस का ज्ञान और समय एव परिस्थितियो का ज्ञान तथा इन सबके साथ निस्पृहता, निर्भयता, स्वर की मधुरता, ओजस्विता आदि गुणो की साधना एव विकास से ही वक्तृत्वकला का विकास हो सकता है, और ऐसे वक्ता वस्तुत हजारो लाखो मे कोई एकाध ही मिलते है।

तेरापथ के अधिशास्ता युगप्रधान आचार्य श्रीतुलसी मे वक्तृत्वकला के ये विशिष्ट गुण चमत्कारी ढग से विकसित हुए है। उनकी वाणी का जादू श्रोताओ के मन-मस्तिष्क को आन्दोलित कर देता है। भारतवर्ष की सुदीर्घ पदयात्राओ के मध्य लाखो नर-नारियो ने उनकी ओजस्विनी वाणी सुनी है और उसके मधुर प्रभाव को जीवन मे अनुभव किया है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक मुनि श्री धनराजजी भी वास्तव मे वक्तृत्वकला के महान गुणो के धनी एक कुशल प्रवक्ता सत है। वे कवि भी है, गायक भी है, और तेरापथ शासन मे सर्वप्रथम अवधानकार भी है, इन सबके साथ-साथ बहुत वडे विद्वान तो है ही। उनके प्रवचन जहा भी होते है, श्रोताओ की अपार भीड उमड आती है। आपके विहार करने के वाद भी श्रोता आपकी याद करते रहते है।

आपको भावना है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी वक्तृत्वकला का विकास करे और उसका सदुपयोग करे, अत जन-समाज के लाभार्थ आपने वक्तृत्व के योग्य विभिन्न सामग्रियो का यह विशाल सग्रह प्रस्तुत किया है।

वहुत समय से जनता की, विद्वानो की और वक्तृत्वकला के अभ्यासियो की माग थी कि इस दुर्लभ सामग्री का जन-हिताय प्रकाशन किया जाय तो बहुत लोगों को लाभ मिलेगा। जनता की भावना के अनुसार हमने मुनिश्री की इस सामग्री को धारणा प्रारभ किया। इस कार्य को सम्पन्न करने मे श्री डूगरगढ, मोमासर, भादरा, हिसार, टोहाना, नरवाना, कैथल, हासी, भिवानी, तोसाम, ऊमरा, सिसाय, जमालपुर, सिरसा और भटिडा आदि के विद्यार्थियो एव युवको ने अथक परिश्रम किया है। फलस्वरूप लगभग सौ कापियो मे यह सामग्री सकलित हुई है। हम इस विशाल सग्रह को विभिन्न भागो मे प्रकाशित करने का सकल्प लेकर पाठको के समक्ष प्रस्तुत हुए है।

इस पुस्तक की महत्ता और उपयोगिता के अनुसार ही इसकी भूमिका लिखी है जैनसमाज के बहुश्रुत विद्वान तटस्थ विचारक उपाध्याय श्री अमर मुनि जी ने। उनके इस अनुग्रह का मैं हृदय से आभारी हू।

वक्तृत्वकला के बीज का यह प्रथम भाग पाठको की सेवा मे है। इसके प्रकाशन का समस्त भार हासी निवासी श्री विशनदयाल जी गोयल ने वहन किया है, इस अनुकरणीय उदारता के लिए हम उनके अत्यत आभारी हैं। साथ ही इसके प्रकाशन एव प्रूफ सशोधन आदि मे श्रीचन्द जी सुराना 'सरस' तथा श्री ब्रह्मदेवसिह जी आदि का जो हार्दिक सहयोग प्राप्त हुआ है—उसके लिए भी हम हृदय से कृतज्ञता-ज्ञापित करते हैं। आशा है यह पुस्तक जन-जन के लिए, वक्ताओ और लेखको के लिए एक सदर्भग्र थ (बिब्लोग्राफी) का काम देगी और युग-युग तक इसका लाभ मिलता रहेगा....

# आ त्म नि वे द न

'मनुष्य की प्रकृति का बदलना अत्यन्त कठिन है'—यह सूक्ति मेरे लिए सवा सोलह आना ठीक साबित हुई। बचपन मे जव मैं कलकत्ता—श्री जैनश्वेताम्बर-तेरापथी-विद्यालय मे पढता था, जहाँ तक याद है, मुझे जलपान के लिए प्राय प्रति-दिन एक आना मिलता था। प्रकृति मे सग्रह करने की भावना अधिक थी, अत मैं खर्च करके भी उसमे से कुछ न कुछ वचा ही लेता था। इस प्रकार मेरे पास कई रुपये इकट्ठे हो गये थे और मैं उनको एक डिब्बी मे रखा करता था।

विक्रम सवत् १६७६ मे अचानक माताजी की मृत्यु होने से विरक्त होकर हम (पिता श्री केवलचन्द जी, मैं, छोटी बहन दीपाजी और छोटे भाई चन्दनमल जी) परमकृपालु श्री कालूगणीजी के पास दीक्षित हो गए। यद्यपि दीक्षित होकर रुपयो-पैसो का सग्रह छोड दिया, फिर भी सग्रहवृत्ति नही छूट सकी। वह धनसग्रह से हटकर ज्ञानसग्रह की ओर झुक गई। श्री कालुगणी के चरणो मे हम अनेक वालक मुनि आगम-व्याकरण-काव्य-कोष आदि पढ रहे थे। लेकिन मेरी प्रकृति इस प्रकार की वन गई थी कि जो भी दोहा-छन्द-श्लोक-ढाल-व्याख्यान-कथा आदि सुनने या पढने मे अच्छे लगते, मैं तत्काल उन्हे लिख लेता या ससार-पक्षीय पिताजी से लिखवा लेता। फलस्वरूप उपरोक्त सामग्री का काफी अच्छा सग्रह हो गया। उसे देखकर अनेक मुनि विनोद की भाषा मे कह दिया करते थे कि "धन्न् तो न्यारा मे जाने की [अलग विहार करने की] तैयारी कर रहा है।" उत्तर मे मैं कहा करता—क्या आप गारटी दे सकते हैं कि इतने [१० या १५] साल तक आचार्य श्री हमे अपने साथ ही रखेगे ? क्या पता, कल ही अलग विहार करने

का फरमान करदे । व्याख्यानादि का सग्रह होगा तो धर्मोपदेश या धर्म-प्रचार करने मे सहायता मिलेगी ।

समय-समय पर उपरोक्त साथी मुनियो का हास्य-विनोद चल ही रहा था कि वि० स० १९८६ मे श्री कालुगणी ने अचानक ही श्रीकेवलमुनि को अग्रगण्य वनाकर रतननगर (थेलासर) चातुर्मास करने का हुक्म दे दिया । हम दोनो भाई (मै और चन्दन मुनि) उनके साथ थे । व्याख्यान आदि का किया हुआ सग्रह उस चातुर्मास मे बहुत काम आया एव भविष्य के लिए उत्तमोत्तम ज्ञानसग्रह करने की भावना बलवती वनी । हम कुछ वर्ष तक पिताजी के साथ विचरते रहे । उनके दिवगत होने के पश्चात् दोनो भाई अग्रगण्य के रूप मे पृथक्-पृथक् विहार करने लगे ।

**विशेष प्रेरणा**—एक वार मैने 'वक्ता बनो' नाम की पुस्तक पढी । उसमे वक्ता बनने के विषय मे खासी अच्छी वाते वताई हुई थी । पढते-पढते यह पक्ति दृष्टिगोचर हुई कि "कोई भी ग्रन्थ या शास्त्र पढो, उसमे जो भी वात अपने काम की लगे, उसे तत्काल लिख लो ।" इस पक्ति ने मेरी सग्रह करने की प्रवृत्ति को पूर्वापेक्षया अत्यधिक तेज वना दिया । मुझे कोई भी नई युक्ति, सूक्ति या कहानी मिलती, उसे तुरत लिख लेता । फिर जो उनमें विशेष उपयोगी लगती, उसे औपदेशिक भजन, स्तवन या व्याख्यान के रूप मे गूथ लेता । इस प्रवृत्ति के कारण मेरे पास अनेक भाषाओ मे निवद्ध स्वरचित सैकडो भजन और सैकडो व्याख्यान इकट्ठे हो गए । फिर जैन-कथा साहित्य एव तात्त्विकसाहित्य की ओर रुचि वढी । फलस्वरूप दोनो ही विषयो पर अनेक पुस्तको की रचना हुई । उनमे छोटी-वडी लगभग २० पुस्तके तो प्रकाश मे आ चुकी, शेष ३०-३२ अप्रकाशित ही है ।

एक वार सगृहीत-सामग्री के विषय मे यह सुझाव आया कि यदि प्राचीन सग्रह को व्यवस्थित करके एक ग्रन्थ का रूप दे दिया जाए, तो यह उत्कृष्ट उपयोगी चीज वन जाए। मैंने इस सुझाव को स्वीकार किया और अपने प्राचीन सग्रह को व्यवस्थित करने मे जुट गया। लेकिन पुराने सग्रह मे कौन-सी सूक्ति, श्लोक या हेतु किस ग्रन्थ या शास्त्र के है अथवा किस कवि, वक्ता या लेखक के है—यह प्राय लिखा हुआ नही था। अत ग्रन्थो या शास्त्रो आदि की साक्षिया प्राप्त करने के लिए—इन आठ-नौ वर्षों मे वेद, उपनिषद्, इतिहास, स्मृति, पुराण, कुरान, वाइबिल, जैनशास्त्र, बौद्धशास्त्र, नीतिशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, स्वप्नशास्त्र, शकुनशास्त्र, दर्शन-शास्त्र, सगीत शास्त्र तथा अनेक हिन्दी, अग्रेजी, सस्कृत, राजस्थानी, गुजराती, मराठी एव पजाबी सूक्तिसग्रहो का ध्यानपूर्वक यथासम्भव अध्ययन किया। उससे काफी नया सग्रह वना और प्राचीन सग्रह को साक्षी सम्पन्न बनाने मे सहायता मिली। फिर भी खेद है कि अनेक सूक्तिया एव श्लोक आदि बिना साक्षी के ही रह गए। प्रयत्न करने पर भी उनकी साक्षिया नही मिल सकी। जिन-जिन की साक्षिया मिली है, उन-उनके आगे वे लगा दी गई है। जिनकी साक्षिया उपलव्ध नही हो सकी, उनके आगे स्थान रिक्त छोड दिया गया है। कई जगह प्राचीन सग्रह के आधार पर केवल महाभारत, वाल्मीकिरामायण, योग-शास्त्र आदि महान् ग्रन्थो के नाममात्र लगाए है अस्तु।

इस ग्रथ के सकलन मे किसी भी मत या सम्प्रदाय विशेप का खण्डन-मण्डन करने की दृष्टि नही है, केवल यही दिखलाने का प्रयत्न किया गया है कि कौन क्या कहता है या क्या मानता है। यद्यपि विश्व के विभिन्न देशनिवासी मनीपियो के मतो का सकलन होने से ग्रन्थ मे भाषा की एकरूपता नही रह

सकी है। कही प्राकृत-सस्कृत, पारसी, उर्दू एव अग्रेजी भाषा है तो कही हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, पजाबी और वगाली भाषा के प्रयोग है, फिर भी कठिन भाषाओ के श्लोक, वाक्य आदि का अर्थ हिन्दी भाषा मे कर दिया गया है। दूसरे प्रकार से भी इस ग्रन्थ मे भाषा की विविधता है। कई ग्रन्थो, कवियो, लेखको एव विचारको ने अपने सिद्धान्त निरवद्यभाषा मे व्यक्त किए है तो कई साफ-साफ सावद्यभाषा मे ही बोले है। मुझे जिस रूप में जिसके जो विचार मिले है, उन्हे मैंने उसी रूप में अकित किया है, लेकिन मेरा अनुमोदन केवल निर्वद्य-सिद्धान्तो के साथ है।

**ग्रन्थ की सर्वोपयोगिता**—इस ग्रन्थ में उच्चस्तरीय विद्वानो के लिए जहाँ जैन-बौद्ध आगमो के गम्भीर पद्य है, वेदो, उपनिषदो के अद्भुत मत्र है, स्मृति एव नीति के हृदयग्राही श्लोक है वहाँ सर्वसाधारण के लिए सीधी-सादी भाषा के दोहे, छन्द, सूक्तिया, लोकोक्तिया, हेतु, दृष्टान्त एव छोटी-छोटी कहानिया भी है। अत यह ग्रन्थ नि सदेह हर एक व्यक्ति के लिए उपयोगी सिद्ध होगा—ऐसी मेरी मान्यता है। वक्ता, कवि और लेखक इस ग्रन्थ से विशेष लाभ उठा सकेगे क्योकि इसके सहारे वे अपने भाषण काव्य और लेख को ठोस, सजीव, एव हृदयग्राही वना सकेंगे एव अद्भुत विचारो का विचित्र चित्रण करके उनमे निखार ला सकेंगे, अस्तु!

**ग्रन्थ का नामकरण**—इस ग्रन्थ का नाम 'वक्तृत्वकला के वीज' रखा गया है। वक्तृत्वकला की उपज के निमित्त यहा केवल बीज इकट्ठे किए गए है। बीजो का वपन किसलिए, कैसे, कब और कहा करना—यह वप्ता [बीज बोनेवालो] की भावना एव बुद्धिमत्ता पर निर्भर करेगा। फिर भी मेरी मनोकामना तो यही है कि वप्ता परमात्मपदप्राप्ति रूप फलो

के लिए |शास्त्रोक्तविधि से अच्छे अवसर पर उत्तम क्षेत्रो में इन बीजो का वपन करेंगे। अस्तु ।

यहा मैं इस बात को भी कहे बिना नही रह सकता कि जिन ग्रथो, लेखो, समाचार पत्रो एव व्यक्तियो से इस ग्रथ के सकलन मे सहयोग मिला है—वे सभी सहायक रूप से मेरे लिए चिरस्मरणीय रहेगे।

यह ग्रथ कई भागो मे विभक्त है एव उनमें सैकडो विषयो का सकलन है। उक्त सग्रह बालोतरा मर्यादा-महोत्सव के समय मैंने आचार्य श्री तुलसी को भेंट किया। उन्होने देखकर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की एव फरमाया कि इसमे छोटी-छोटी कहानियाँ एव घटनाएँ भी लगा देनी चाहिये ताकि विशेष उपयोगी बन जाए। आचार्य श्री का आदेश स्वीकार करके इसे सक्षिप्त कहानियॉ तथा घटनाओ से सम्पन्न किया गया।

मुनी श्री चन्दनमलजी, डूगरमलजी, नथमलजी, नगराज जी, मधुकरजी, राकेशजी, रूपचन्दजी आदि अनेक साधु एव साध्वियो ने भी इस ग्रन्थ को विशेष उपयोगी माना। बीदासर-महोत्सव पर कई सतो का यह अनुरोध रहा कि इस सग्रह को अवश्य धरा दिया जाए !

सर्व प्रथम वि० स० २०२३ मे श्री डूँगरगढ के श्रावको ने इसे धारण शुरू किया। फिर थली, हरियाणा एव पजाब के अनेक ग्रामो-नगरो के उत्साही युवको ने तीन वर्षो के अथक-परिश्रम से धारकर इसे प्रकाशन के योग्य बनाया।

मुझे दृढविश्वास है कि पाठकगण इसके अध्ययन, चिन्तन एव मनन से अपने बुद्धि वैभव को क्रमश बढ़ाते जायेगे—

वि० स० २०२७ मृगसर वदो ४
मङ्गलवार रामामडी, (पजाब)

—धनमुनि 'प्रथम'

# अनुक्रमणिका

मे विविध, ७ असत्य के सम्बन्ध मे कहावते, ८ चोरी, ९ चोरी के कारण, १० चोरी के भेद, ११ चोरी का त्याग, १२ चोर, १३ चोरो का सुधार, १४ चोर के विषय मे कहावते, १५ मिलावट, १६ रिश्वत, १७ रिश्वत के बयान, १८ रिश्वती राज्यकर्मचारी, १९ रिश्वत न लेने वाले विरले, २० धोखा और धोखे बाज ।

---

**चारो कोष्ठको मे कुल १२९ विषय हैं ।**

---

**नोट**—(१) पहले कोष्ठक मे भूल से विषय ८ के बाद सीधा १० छप गया है, पाठको को असुविधा न हो अत अनुक्रमणिका मे भी छपे अनुसार ही रखा है ।

# पहला कोष्ठक

## १ मङ्गलाचरण

### मगल का अर्थ

१. मगिज्जएऽधिगम्मइ, जेण हिअ तेण मगल होई।
अहवा मगो धम्मो, त लाइ तय समादत्ते ॥
—विशेषावश्यक भाष्य, २२

जिसके द्वारा हित की याचना एव प्राप्ति होती है, उसे मगल कहते हैं। अथवा मगल का अर्थ धर्म है और उस धर्म को जो ग्रहण करता है वह मगल है।

२. मा गालयति भवादिति मङ्गल ससारादपनयतीत्यर्थ ।
अथवा मा भूत् शास्त्रस्य गलो विघ्नोऽस्मादिति ।
— विशेषावश्यक भाष्य २४ टीका

मुझे ससार से दूर करता है अत मगल है। अथवा 'मा' निषेधार्थ है और 'गल' विघ्न वाचक है अत मगल का अर्थ होता है मत हो विघ्न शास्त्र के प्रारम्भ मे।

# माङ्गलिक तत्त्व

१. णमो अरिहताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण।
णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहूण।

—भगवती सूत्र १।१

अरिहन्तो को नमस्कार, सिद्धो को नमस्कार, आचार्यों को नमस्कार, उपाध्यायो को नमस्कार, सर्वसाधुओ को नमस्कार।

२. एसो पच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।
मगलाण च सव्वेसि पढम हवइ मगल।

—आवश्यक मलयगिरि खण्ड-२ अ० १

इन पाँचो पदो को किया हुआ यह नमस्कार सभी पापो का नाश करने वाला है। ससार के सभी मगलो मे यह प्रथम (मुख्य) मगल है।

३. चत्तारि मगल, अरिहता मगल, सिद्धा मगल,
साहू मगल केवलिपन्नत्तो धम्मो मगल।

—आवश्यक सूत्र अ० ४

मगल चार है—अरिहन्त, सिद्ध, साधु और केवलि-प्ररूपित धर्म।

४. मङ्गल भगवान् वीरो, मङ्गल गौतमोगणी।
मङ्गल स्थूलिभद्राद्या, जैन धर्मोऽस्तु मङ्गलम्॥

भगवान महावीर, गौतम गणधर, स्थूलिभद्रादि आचार्य और जैन धर्म—ये मगलकारी है।

५. सर्वमङ्गलमाङ्गल्य, सर्वकल्याणकारणम् ।
प्रधान सर्वधर्माणा, जैन जयति शासनम् ॥

जो समस्त मगलो द्वारा मागलिक है, सभी प्रकार के कल्याणो का मूल कारण है और सभी धर्मों मे प्रधान—श्रेष्ठ है, वह जैन-शासन जगत मे विजयी हो रहा है ।

६ सर्वसुखमूलबीज, सर्वार्थविनिश्चयप्रकाशकरम् ।
सर्वगुण - सिद्धिसाधन-धनमर्हच्छाशन जयति ॥

—प्रशमरति प्रकरण ३१३

जो समस्त सुखो का मूलबीज, समस्त पदार्थो का विनिश्चयात्मक प्रकाश करनेवाला एव जो समस्त गुणो की सिद्धि के साधन रूप धन से युक्त है, वह जैनशासन विजयी हो रहा है ।

७. धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिसा सजमो तवो ।
देवावि त नमसति जस्स धम्मे सया मणो ॥

—दशवैकालिक सूत्र १।१

धर्म सब से उत्कृष्ट मगल है । धर्म है—अहिसा, सयम और तप । जो धर्मात्मा है, जिसके मन मे सदा धर्म रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते है ।

## ३ मांगलिक पद्य

१ नमिउण असुर-सुर-गरुल-भुयगपरिवदिए गयकिलेसे।
अरिहे सिद्धायरिए, उवज्झाय-सव्वसाहू य ॥
—चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र गा० २

जो असुर, सुर, गरुड, नाग आदि देवो से परिवन्दित है और सासारिक क्लेश से रहित हैं। उन अरिहत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एव जगत के समस्त साधुओ को नमस्कार।

२ जयइ जगजीवजोणी-वियाणओ जगगुरु जगाणदो।
जगणाहो जगवधू, जयइ जगपियामहो भगव ॥
—नन्दीसूत्र गाथा १

जगत के समस्त जीवो की योनियो के विज्ञाता, जगत के गुरु, जगत को आनन्द देने वाले, जगत के नाथ, जगत के बन्धु एव जगत के पितामह भगवान महावीर की जय हो।

३. चइत्ता भारहवास, चक्कवट्टी महड्ढिओ।
सति सतिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तर।
— उत्तराध्ययन १८।३८

भरत क्षेत्र के राज्य को छोडकर विश्वशान्ति करनेवाले महर्धिक चक्रवर्ती श्री शान्तिनाथ भगवान सर्वश्रेष्ठ मोक्षगति को प्राप्त हुए।

४. सिद्धाण णमो किच्चा, सजयाण च भावओ।
अत्थधम्मगइ तच्च, अणुसट्ठि सुणेह मे ॥
—उत्तराध्ययन २०।१

सिद्ध भगवान एव साधुओ को नमस्कार करके अर्थ-धर्म के ज्ञान वाली मेरी सच्ची शिक्षा सुनो ।

५ ॐ पूर्णमद पूर्णमिद, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते ॥
—बृहदारण्यक उपनिषद् अ० ५ ब्रा० १ क० १

वह सच्चिदानन्दघन परब्रह्म पुरुषोत्तम सब प्रकार सदा-सर्वदा परिपूर्ण है । यह जगत भी उस परब्रह्म से पूर्ण ही है, क्योकि वह पूर्ण उस पूर्ण पुरुषोत्तम से ही उत्पन्न हुआ है । इस प्रकार परब्रह्म की पूर्णता से जगत पूर्ण है, इसलिये भी वह परिपूर्ण है । उस पूर्णब्रह्म मे से पूर्ण को निकाल लेने पर भी वह पूर्ण ही बच रहता है ।

६. ॐकार सतिनामु करता पुरुखु निरभउ ।
निरवैरु अकाल मूरति अजून सैभ गुरुप्रसादि ।

यह सिक्खो का मगल मत्र है । इसका अर्थ है—अपना हर काम हम शुरु करेंगे उस भगवान की कृपा से, जो एक है, जो ॐकार है, जिसका नाम सत्य है, जो कर्त्ता है, जो सबकी सृष्टि करता है, जो समर्थ पुरुष है, जो निर्भय है, जो निर्वैर है, जो काल की पहुँच से परे है, जिसका जन्म नही है, जो स्वयभू है, जो गुरु है ।

७. यथा अहू वइर्यो अथा रतुश् अषात् चीत् हचा ।
वङ्हॅ उश् दज्दा मनङ्हो श्यओथ न नाँम् अङ्-
हॅउश् मज्दाइ ।
क्षथ्रॅम्चा अहुराइ आयिम् द्रिगुब्यो ददत् वास्तारॅम् ।

पारसी धर्म का यह परम पवित्र मन्त्र है । अवस्ता मे जगह-जगह यह मन्त्र आता है । इसका अभिप्राय है कि दीनो पर दया करने से दीनदयालु प्रभु प्रसन्न होते हैं ।

८. तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि।
धिया यो नः प्रचोद्यात् ॥
—ऋग्वेद-३।६२।१० । यजुर्वेद-३।३५

हम सव सवितृ-जगत्कर्त्ता प्रभु के उस प्रसिद्ध वरणीय तेजोमय स्वरूप का ध्यान करते हैं, जो हम सव की वुद्धियो को प्रेरणा प्रदान करता है। (यह गायत्री मत्र है।)

९. असतो मा सद् गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मामृत गमय। वृहदा० १।३।२८

हे प्रभो! मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो एव मृत्यु—अपूर्णता से अमृत—पूर्णता की ओर ले चलो!

१०. त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव वन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविण त्वमेव,
त्वमेव सर्व मम देव-देव. ॥

तू ही माता है, तू ही पिता है, तू ही वन्धु है, तू ही मित्र है, तू ही विद्या है, तू ही धन है, कितना कहूँ हे देवो के देव! मेरा तो तू ही सर्वस्व है।

११. अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिता. सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा. पूज्या उपाध्यायका।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधका,
पञ्चैते परमेष्ठिन. प्रतिदिन कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥

इन्द्रादि देवो द्वारा पूज्य श्री अरिहत भगवान, मुक्ति मे विराजमान श्री सिद्ध भगवान, जैनशासन की उन्नति करने वाले आचार्य महाराज, सिद्धान्तो को पढानेवाले पूजनीय-

उपाध्याय और ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूप तीन रत्नो की आराधना करनेवाले मुनिराज—ये पाँचो परमेष्ठी हमे सदा मगल प्रदान करे।

१२ सा मा पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।

समस्त अज्ञान का नाश करने वाली सरस्वती—भगवद्वाणी मुझे पाप से बचाये !

१३ य शैवा समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो,
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटव कर्तेति नैयायिका ।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरता कर्मेति मीमासका,
सोऽय वो विदधातु वाञ्छितफल त्रैलोक्यनाथो हरि. ।

—हनूमान् नाटक

शिवभक्त 'शिव' कह कर, वेदान्ती 'ब्रह्म' मानकर, बौद्ध 'बुद्ध' रूप से प्रमाण के विवेचन मे निपुण नैयायिक 'कर्त्ता' रूप से, जैन लोग 'अर्हत्' कह कर और मीमासक 'कर्म' मान कर जिसकी उपासना करते हैं, वह त्रिलोकीनाथ हरि—भगवान तुम्हे इच्छितफल प्रदान करे !

१४ ब्राह्मी चन्दनबालिका भगवती राजीमती द्रौपदी,
कौशल्या च मृगावती च सुलसा सीता सुभद्रा शिवा ।
कुन्तीशीलवती नलस्यदयिता चूला प्रभावत्यहो !,
पद्मावत्यपि सुन्दरी दिनमुखे कुर्वन्तु नो मगलम् ।

(१) ब्राह्मी (२) चदनबाला (३) राजीमती (४) द्रौपदी (५) कौशल्या (६) मृगावती (७) सुलसा (८) सीता (९) सुभद्रा (१०) शिवा (११) कुन्ती (१२) नलराजा की रानी दमयन्ती (१३) पुष्पचूला (१४) प्रभावती (१५) पद्मावती (१६) सुन्दरी—ये महा
करें !

१५. भवबीजाङ्कुरजनना, रागाद्या क्षयमुपागता यस्य ।
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा, जिन शिवो वा नमस्तस्मै ।

—वीतरागस्तोत्र प्रकरण २१।४४

भव अर्थात् जन्म-मरण के बीज को उत्पन्न करने वाले राग—द्वेष आदि जिसके नष्ट हो गये है, वह नाम से चाहे ब्रह्मा हो, विष्णु हो, जिन हो या शिव हो, उसे नमस्कार है ।

१६. ध्यान हुताशन मे अरि - ईधन,
झोक दियो रिपुरोक - निवारी ।
शोक हर्‌यो भविलोकन को,
वर, केवलज्ञान मयूख प्रसारी ।
लोक अलोक विलोक भए सब,
जन्म-जरा-मृत पक पखारी ।
सिद्धन थोक बसै शिवलोक,
तिन्है. पगधोक त्रिकाल हमारी ।

—भूधरदास

१७. शुद्ध शिव शान्तमनाद्यनन्त, त देवमाप्त शरण प्रपद्ये ।

जो शुद्ध है, कल्याणकारी है, शान्त है और अनादि-अनन्त है, उस विश्वासपात्र भगवान की शरण स्वीकार करता हूँ ।

१८. महाव्रतधरा धीरा., साधवः शरण मम ।

—त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र

महाव्रतधारी एव धैर्यवान साधुओ की मुझे शरण हो !

१९. केवल्युपज्ञो परमो, धर्मश्च शरण मम ।

—त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र

सर्वज्ञभाषित श्रेष्ठ धर्म ही मेरे लिये शरणभूत है । ★

# ४ देव—ईश्वर

१. सर्वज्ञो जितरागादि-दोषस्त्रैलोक्य-पूजित ।
यथास्थितार्थवादी च, देवोऽर्हन् परमेश्वर. ।

—योगशास्त्र २।४

जो सर्वज्ञ है, जिसने रागादि दोषो को जीत लिया है, जो तीन लोको का पूज्य है एव यथास्थित पदार्थ को बतानेवाला है वह अर्हद्देव परमेश्वर है।

२. केवलज्ञानवानर्हन् देव । —जैनसिद्धान्त० ७।१

केवलज्ञान युक्त अरिहन्त भगवान सच्चे देव-ईश्वर हैं।

३. निरातङ्को निराकाङ्क्षो, निर्विकल्पो निरञ्जन ।
परमात्माऽक्षयोऽत्यक्षो, ज्ञेयोऽनन्तगुणोऽव्यय ।

—विशेषावश्यक सूत्र

जो निर्भय है, आकाक्षारहित है, निर्विकल्प है, निरञ्जन-निर्लेप है, अक्षय है, इन्द्रियो से परे है, अनन्तगुणयुक्त है एव अव्यय है वह परमात्मा है।

४. उत्पत्ति प्रलय चैव, भूतानामागति गतिम् ।
वेत्ति विद्यामविद्या च, स वाच्यो भगवानिति ।

—नारदपुराण पूर्व० ४६।२१

जो जीवो की उत्पत्ति-विनाश, आगति-गति तथा ज्ञान-अज्ञान को जानता है, वह भगवान कहा जाता है।

५. क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्ट-पुरुषविशेष ईश्वर. ।

—पातंजल योगदर्शन १।२४

क्लेश, कर्म, विपाक और आशय—इन चारो से जो सम्बन्धित नही है तथा जो पुरुषो मे उत्तम है वह ईश्वर है ।

६. एक एव भगवानयमात्मा । —शान्तसुधारस-४

एक यह आत्मा ही भगवान है ।

७. अन्तर आत्मा ही ईश्वर है । —गांधीजी

८. ॐ एतद्ध्येवाक्षर ब्रह्म । —कठोपनिषद्

ॐ ही वास्तविक ब्रह्म है ।

९. त सच्च भगव । —प्रश्नव्याकरण २

वह सत्य भगवान है ।

१० सत्यज्ञानमनन्त ब्रह्म । —तैत्तिरीयउपनिषद्

ब्रह्म, सत्यज्ञान स्वरूप और अनन्त है ।

११. हर्ष-शोक जाके नही, वैरी-मित्र समान ।
कहे नानक सुन रे मना ! सो मूरति भगवान ।

—गुरुनानक

१२. अरिहत के नव लक्षण है—

(१) मारने की बुद्धि से किसी को नही मारे ।
(२) बिना दी हुयी चीज नही ले ।
(३) अखण्ड ब्रह्मचर्य पाले ।
(४) जान-बूझ कर झूठ न बोले ।
(५) ससार अवस्था की तरह परिग्रह का सग्रह न करे ।
(६) राग, (७) द्वेष, (८) भय एव
(९) अज्ञान के वश अयोग्य काम न करे । —गौतम बुद्ध

१३ एक सद् विप्रा वहुधा वदन्त्यग्नि यम मातरिश्वानमाहुः ।
—ऋग्वेद १।१६४।४६

एक ही सद्-सत्यरूप परमात्मा को विद्वान् लोग अग्नि-यम-मातरिश्वा आदि अनेक नामो से कहते हैं ।

१४ प्रभु के गुण तो एक है, लेकिन रूप अनेक ।
वाद करे यदि रूप को, फिर सवके प्रभु एक ।
—दोहा-सदोह

१५ नारायण और नगर के रज्जव पथ अनेक ।
कोई जाओ कहिं दिशि, आगे अस्थल एक ।
—रज्जवदास

१६ लोगो ने अलग-अलग होकर अपने वाडे बना लिये है, पर,
जाना है सव को एक ही प्रभु के पास ।
—कुरान सूरा० २१ आयत ६३

१७ आदि सचु, जुगादि सचु,
है भी सचु, नानक होसी भी सचु । —जपुजी साहिव

वह परमात्मा आदि काल मे सत्य था, युग की आदि मे भी सत्य था, वर्तमान मे सत्य है और भविष्यत् काल मे सदा सत्य रूप ही रहेगा—ऐसा गुरु नानक का कहना है ।

१८ अर्रहमानिऽर्रहीमि । —कु० सू० १ आ० ३

अल्लाह परम कृपालु है ।

१९ अल्लाह हुवऽल् हक्कु । —कु० सू० २२ आ० ६२

अल्लाह सत्य रूप है ।

२० अल्ला हुऽस्स मदु. । —कु० सू० ११२ आ० २

अल्लाह निरपेक्ष है ।

२१ लाऽलाह इल्लऽल्लाह मुहम्मदुर् रसूलिल्लाह ।

—इस्लामी कलमा ।

अल्लाह के सिवा कोई देव नही। मुहम्मद उसका रसूल—पैगम्बर है ।

२२. न ह्याप्ताश्चाटुभापिणः ।

—त्रिषष्टि० ४।१

भगवान मु ह रखी वात नही किया करते ।

## ५ ईश्वर का जगत्कर्तृत्व चिन्तनीय

१. ईश्वरप्रेरितो गच्छेत्, स्वर्ग वा श्वभ्रमेव वा ।
अज्ञोजन्तुरनीशोयमात्मन. सुख-दु.खयो ॥

—महाभारत

ईश्वर को जगत्कर्त्ता माननेवाले कहते हैं कि, ईश्वर की प्रेरणा से ही प्राणी स्वर्ग-नरक मे जाता है। यह अज्ञानी जीव अपने सुख-दुख उत्पन्न करने मे असमर्थ है। उनकी मान्यतानुसार ईश्वर ही सुख-दुख एव जन्म-मरण का देनेवाला है। किन्तु वास्तव मे यह वात विचारणीय है। क्योकि—

गीता ५।१४-१५ मे कहा गया है—

२ न कर्तृत्व न कर्माणि, लोकस्य सृजति प्रभु ।
न कर्मफलसयोग, स्वभावो हि प्रवर्तते ॥१४॥
नाऽऽदत्ते कस्यचित् पाप, न चैव सुकृत विभु ।
अज्ञानेनावृत ज्ञान, तेन मुह्यन्ति जन्तव ॥१५॥

भगवान वास्तव मे न तो प्राणियो के कर्त्तापन को, न कर्मो को, न कर्म-फल के सयोग को रचता है। इन सव कार्यो मे प्रकृति अर्थात् कर्मो का स्वभाव ही काम करता है। जिसने जैसा कर्म किया है उसी के स्वभावानुसार सुख-दुख आदि मिलते है।

परमात्मा न तो किसी के पाप को लेता है और न किसी के पुण्य कर्म को लेता है। जीवो के अज्ञान का पर्दा लगा हुआ है अत वे मोहित हो रहे है अर्थात् अच्छे या वुरे सभी काम परमात्मा के शिर मढ रहे हैं—जैसे भगवान ने मुझे धन-पुत्र आदि दिये अथवा मेरी सुख-सुविधायें छीन ली।

कृष्णवत् प्रभु तो केवल मध्यस्थ—सारथि है। कर्मो से लडाई हमे ही लडनी होगी।

★

## ६ अपेक्षा से ईश्वर का कर्त्तृत्व

१. ईश्वर. परमात्मैव, तदुक्तव्रतसेवनात् ।
यतो मुक्ति स्ततस्तस्या:, कर्त्ता स्याद् गुण-भावत. ।।
तदनासेवनादेव, यत्ससारोऽपि तत्त्वत. ।
तेन तस्यापि कर्त्तृत्व, कल्प्यमान न दुष्यति ।।

निश्चित रूप से ईश्वर परमात्मा है और उसके कहे हुये व्रत-नियम का पालन करने से मुक्ति मिलती है । अत. उस मुक्ति का कर्त्ता—दाता गुण की अपेक्षा से ईश्वर हो जाता है । ईश्वर के कहे हुये व्रतो का पालन न करने से ही वास्तव मे प्राणी को ससार मिलता है । अत. निमित्त से उस ससार का कर्त्ता भी ईश्वर ही है । इस कल्पना मे भी दोष प्रतीत नही होता ।

पारमैश्वर्ययुक्तत्वादात्मैव मत ईश्वर. ।
स च कर्तेति निर्दोष, कर्त्तृवादो व्यवस्थित. ।।

—हरिभद्र सूरि

परम ऐश्वर्य से युक्त होने के कारण आत्मा ही ईश्वर है और वह कर्त्ता भी है । अतः ईश्वर का कर्तृवाद निर्दोष रूप से व्यवस्थित हो जाता है ।

## ७ पुराणानुसार विष्णु के दस अवतार

१. मत्स्यः कूर्मो वराहश्च, नरसिंहोऽथ वामन ।
रामो रामश्च कृष्णश्च, बुद्ध कल्की च ते दश ॥
—सुभाषित-रत्न-भाण्डागार

विष्णु के दश अवतार माने गये है—(१) मत्स्य (२) कच्छप (३) वराह (४) नरसिंह (५) वामन (६) परशुराम (७) राम (८) कृष्ण (९) बुद्ध (१०) कल्की ।

### अवतारों के कार्य

२. वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्विभ्रते,
दैत्य दारयते वलिं छलयते क्षत्रक्षय कुर्वते ।
पौलस्त्य जयते हल कलयते कारुण्यमातन्वते,
म्लेच्छान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्य नम ॥
—सुभाषित रत्न भाण्डागार

आप मत्स्य-अवतार मे वेदो की रक्षा करते है । कच्छप अवतार मे समुद्र-मन्थन के समय पृथ्वी को धारण करते हैं । वराह अवतार मे हिरण्याक्ष से पृथ्वी को छुडाते हैं । नरसिंह-अवतार मे हिरण्यकशिपु आदि दैत्यो का नाश करते है । वामन-अवतार मे वलिको छलते हैं । परशुराम होकर क्षत्रियो का नाश करते हैं । राम-अवतार मे रावण को पराजित करते हैं एव हल को धारण करते हैं । बुद्ध-अवतार मे करुणा का प्रसार करते है तथा कल्की-अवतार मे म्लेच्छो को मूर्छित करते हैं । दश अवतार धारण करने के निमित्त हे कृष्ण ! आपको नमस्कार हैं । ★

# प्रतिमा-निषेध

१. न तस्य प्रतिमा अस्ति, यस्य नाम महद् यश. ।

—यजुर्वेद ३२।३

जिस ईश्वर का यश सर्वत्र व्याप्त है उसकी प्रतिमा—(मूर्ति) नहीं हो सकती।

2. Thou Shalt not make unto Thee any graven image

—old testament

दाउ शाल्ट नोट मेक अन्टु दी एनी ग्रेवन इमेज।

—पुरानी बाइबिल तोरा-निर्गमन २०।१-१७

ईश्वर के लिये कोई मूर्ति मत बनाओ।

३. पर्वत सू पाषाण, सिलावट खोद र, ल्यायो,
घड्या सिह अरु गाय, एक घड हर पधरायो।
गाय दिये जो दूध, ऊठकर केहर मारे,
ए दोनू सत्य होय, तबे वो हर भी तारे।
कारज तीनू सारखा, फल करणी मे जोय,
रामचरण दो असत्य है, तो एक सत्य किम होय।

—रामचरण

४ कृषिक की कुदाली खो गई। उसने भगवान की बोलमा बोली। मन्दिर जाते समय ढोल बज रहा था कि भगवान का छत्र चोरा गया। ढोल सुनकर कृषिक निराश हुआ कि भगवान अपना छत्र भी नही बचा सके तो कुदाली कैसे दिलायेगे ? लौटकर घर आ गया।

☆

## १० प्रतिमापूजा-निषेध

१ अहं सर्वेषु भूतेषु, भूतात्मावस्थित सदा ।
तमवज्ञाय मा मर्त्य कुरुतेऽर्चाविडम्बनाम् ।
यो मा सर्वेषु भूतेषु, सन्तमात्मानमीश्वरम् ।
हित्वार्चां भजते मौढ्याद्, भस्मन्येव जुहोति सः ।।

—भागवत ३।२९।२१-२२

मैं आत्मारूप से सदा सभी जीवो मे स्थित हूं। इसलिए जो लोग मुझ सर्वभूतस्थित—परमात्मा का अनादर करके केवल प्रतिमा मे ही मेरी पूजा करते हैं, उनकी वह पूजा विडम्बना मात्र है। ।।२१।।

मैं सवका आत्मा परमेश्वर सभी भूतो मे स्थित हूँ, ऐसी दशा मे जो मोह-वश मेरी उपेक्षा करके केवल प्रतिमापूजन मे लगा रहता है, वह मानो ! भस्म मे ही हवन कर रहा है। ।।२२।।

२. पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजू पहाड।
ताते यह चाकी भली, पीस खाय ससार ।।
ककर पत्थर जोरि के, मस्जिद लई बनाय।
ता चढि मुल्ला वाग दे, वहरो भयो खुदाय ।।
कवीरा दुनिया देहरे, शीश निवाँवण जाय।
हिरदा भीतर हरि वसे, तू ताही सो लो लाय ।।

—कबीर

३. तुलसी खोये पाइया, परब्रह्म घर माहिं।
यह जग बौरा हो रहा, पत्थर ढूढन जांहि॥

—तुलसीदास

४. तू तो सुरता सुहागण नार,
मन्दिर मे काई ढूढती फिरै ?
था रे हिरदै बसै भगवान,
मन्दिर मे काई ढूँढती फिरै॥ —कबीर

५. यहोवा कहता है—आकाश मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरी चौकी है तुम मेरे लिये कैसा भवन बनाओगे ?

—पु० बा० नबी० आयाह ८६।१

६. खे रोजे भट्ठ नमाजे, कलमा दे मुह स्याही।
बुल्लेशाह रब अन्दरो पाया, भुल्ली फिरे लुकाई।
ना रब मसीत ना मन्दिर, न खाबे काबे ना कुरान किताबे।
ना रब तीर्थ नमाजे, बुल्लेशाह जद मुरसद मिले, मिटे सब तकाजे।

मक्के जाके इट्टा पूजे, गगा जाके पाणी।
बुल्लेशाह ! ऐसी करणी कर चल्लो,
मिट जाय आणी जाणी।

—बुल्लेशाह

★

: १

# पूजा

पूजा च द्रव्यभाव-सकोचस्तत्र कर—
शिर पादादिसन्यासो द्रव्यसकोच ।
भावसकोचस्तु विशुद्धमनसो नियोग ॥

—प्रणिपातदण्डक-षडावश्यक टीका श्वेताम्बराचार्य नमि०

द्रव्य-भाव का मकोच करना पूजा है। वहा हाथ पैर सिर, आदि को स्थिर करना द्रव्य सकोच है तथा विशुद्ध मन का नियोग होना भाव सकोच है।

वचोविग्रह-सकोचो द्रव्यपूजा निगद्यते ।
तत्र मानस-सकोचो, भावपूजा पुरातनै ॥

—अमितगति-श्रावकाचार

वचन और शरीर का सकोच करना द्रव्य पूजा है एव मन का सकोच करना भाव पूजा है।

## १२ पूजा के आठ फूल

१. अहिंसा सत्यमस्तेयं, ब्रह्मचर्यमसङ्गता ।
गुरुभक्तिस्तपोज्ञानं, सत्पुष्पाणि प्रचक्षते ।
— हरिभद्र-टीका ३।६

अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, निःसगता, गुरुभक्ति, तप और ज्ञान—ये पूजा के आठ फूल कहलाते है ।

२. अहिंसा प्रथमं पुष्पं, द्वितीयं करण-ग्रहः ।
तृतीयकं भूत-दया, चतुर्थं क्षान्तिरेव च ॥
शमस्तु पञ्चमं पुष्पं, दमः षष्ठं च सप्तमम् ।
ध्यानं सत्यं चाष्टमं च, ह्येतैस्तुष्यति केशवः ॥
—पद्मपुराण पातालखण्ड ८४।५६-५७

(१) अहिंसा (२) इन्द्रिय दमन (३) जीव-दया (४) क्षमा (५) शम (६) दम (७) ध्यान (८) सत्य—इन आठ फूलों से पूजा करने पर विष्णु भगवान प्रसन्न होते हैं ।

★

१३

# द्रव्य पूजा का रहस्य

१ पुष्पपूजा—पुष्प कामदेव के बाण है। इन्हे चढाकर मैं प्रार्थना करता हूँ कि मुझे काम न सताये।

फलपूजा—फल चढाकर मैं प्रार्थना करता हूँ कि मुझे मुक्ति रूप फल मिले।

केसर-चन्दनपूजा—इन्हे चढाकर मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे मन की कुवासना नष्ट हो!

धूपपूजा—धूप चढाकर मै प्रार्थना करता हूँ कि भक्ति रूप अग्नि मे कर्म-रूप धूप जल जाये एव धूम्रवत् मेरी आत्मा ऊर्ध्वगामी बने।

दीपपूजा—दीप जलाकर मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरी आत्मा मे ज्ञान का प्रकाश हो।

अक्षतपूजा—अक्षत चढाकर मै प्रार्थना करता हूँ कि मुझे अक्षत-मुक्ति सुख मिले।

मिष्टान्नादि पूजा—मिष्टान्न चढाकर मै प्रार्थना करता हूँ कि इन सबसे मेरा प्रेम हट जाये।

—सकलित

★

## १४ ईश्वरीय ज्ञान एवं दर्शन

१. ईश्वर को जानने का दावा करने वाले असल मे उसे नही जानते। उसे वे ही जानते हैं जो उसे जानने का दावा नही करते।

— सामवेद

२ मनुष्याणा सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धाना कश्चिन्मा वेत्ति तत्त्वत ।।

—गीता-७।३

हजारो मनुष्यो मे कोई एक ही मुझे पाने के लिये यत्न करता है। और यत्न करनेवाले योगियो मे मुझे कोई विरला ही यथार्थ रूप से जान पाता है।

. नाह वेदैर्न तपसा, न दानेन न चेज्यया।
शक्य एवंविधो द्रष्टुं, दृष्टवानसि मा यथा।।
भक्त्या त्वनन्यया शक्य, अहमेवंविधोऽर्जुन!
ज्ञातु द्रष्टु च तत्त्वेन, प्रवेष्टु च परतप!।

— गीता ११।५३-५४

हे अर्जुन! जैसा मुझे तुमने जाना है, तत्त्वदृष्टि मे देखा है और एकीभाव से प्राप्त किया है, उस प्रकार न तो कोई मुझे वेदो से जान सकता है एव न तप, दान और यज्ञ मे जान—देख सकता है। मैं मात्र अनन्यभक्ति से जाना—देखा जा सकता हूँ।

४ ईश्वर के रहस्य को तू तभी समझ सकेगा जब तू दिल को साफ बना लेगा। —जामी

५ अगर ईश्वर को देखना चाहते हो तो तुम्हे ईश्वर ही बनना पडेगा। —बर्नार्डशा

६ कंचन-कामिनी का मोह छूटे बिना ईश्वर-दर्शन नही हो सकता। —रामकृष्ण

७ केवल शास्त्र पढ कर ईश्वर की व्याख्या करना नक्शा देखकर बनारस की व्याख्या करना है। —रामकृष्ण

८. जो शख्स अल्लाहो-अल्लाहो चिल्लाता है, निश्चित [illegible] उसे ईश्वर नही मिला। जो उसे पा लेता है [illegible] और शान्त हो जाता है। —[illegible]

९ जैसे—भौंरा मकरन्द मिलने पर, [illegible] पर, भूखा अन्न मिलने पर [illegible] चुप हो जाता है, वैसे ही प्रभु [illegible] भी चुप—शान्त हो जाती है।

१० भिद्यते हृदयग्रन्थि - [illegible]।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि [illegible]।

वाच· प्राकृत-सस्कृता श्रुतिशिरो वाराणसी मेदिनी,
सर्वावस्थितिरस्य वस्तु विषया दृष्टे परब्रह्मणि ।

—शकराचार्य

जिसने परब्रह्म रूप ईश्वर के दर्शन कर, लिए उसके लिये सारा ससार नन्दन-वन है, समस्त जलसमूह गगाजल है, सभी क्रियाये पवित्र हैं, उसकी प्राकृत-सस्कृत किसी भी प्रकार की वाणी वेदवत् है, सारी पृथ्वी उसके लिये काशी नगरी है और उसकी सभी अवस्थाये वस्तु-विपयक है यानि वास्तविक है ।

## २५ भगवान का निवास

जहि ममता माया तजी, सब तै भयो उदास।
कहे नानक सुन रे मना! तहि घट ब्रह्म-निवास॥

—गुरुनानक

घट-घट मेरे साइयाँ, सूनी सेझ न कोय।
वा घट की वलिहारिया, जा घट परगट होय॥

—कबीर

दिल मे तस्वीर है यार की, गर्दन झुकाई के देखले।

—अज्ञात

नाहं वसामि वैकुण्ठे, योगिना हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति, तत्र तिष्ठामि नारद!

—पद्मपुराण

नारद! न तो मैं वैकुण्ठ मे रहता हूं और न योगियो के हृदय मे रहता है। मेरे भक्त मुझे जहा भी गाते है, मैं तो वहीं उपस्थित रहता हूं।

मुझ को कहा ढूढे बंदे! मैं तो तेरे पास मे।
ना मैं मक्के ना मैं काशी, ना कावे-कैलाश मे।
मैं तो हूँ विश्वास मे। —कबीर

मैं जानू हरि दूर है, हरि है हिरदा माय।
आडी टाटी कपट की, तासो सूझत नाय॥ —कबीर

७. अल्लाह कहता है—मैं ऊपर नीचे, जमीन, आसमान या फर्श पर नही समा सकता। मैं मोमिन (विश्वासी-भक्त) के दिल मे रहता हूँ। जो मुझे ढूढना चाहे वही ढूढ ले।

—मुहम्मद

८. ईश्वरः सर्वभूताना, हृद्देशेऽर्जुन ! तिष्ठति।

—गीता १८।६१

हे अर्जुन ! ईश्वर सब जीवो के हृदय मे रहता है।

९. सर्वस्य चाह हृदि सनिविष्ट । —गीता १५।१५

मैं सबके हृदय मे निवास करता हूँ।

१०. वह मेरे दिल मे है और मेरा दिल उसके हाथ मे है। जैसे आईना मेरे हाथ में है और मैं आईने मे हूँ। —एक सूफी

११. ईश्वर सब लोगो मे है, पर, सव लोग ईश्वर मे नही, इसीलिये दुःखी हैं। —रामकृष्ण

१२. राजा-महाराजा या राष्ट्रपति-प्रधानमत्री आदि के आगमन पर घर व नगर की सफाई की जाती है, वैसे ही प्रभु को हृदय मे लाने से पहले हृदय को भी साफ वनाना आवश्यक है। —सकलित

१३. जिधर भी तुम मुह करो उधर ही अल्लाह का मुह है।

—कुरान० २।११५

१४. वल्लाहु यालमु मा फी कुलूविकुम् ।

—कुरान० सूरा ३३ आ० ५१

वह अल्लाहताला तुम्हारे साथ है, जहा कही तुम हो।

१५ अभिमानी—अन्यायी श्रीमन्तो के हृदय मे, तीर्थस्थ ठग-पुजारियो के दिल में, कुतर्की विद्वानो के मन मे, योग का

ढोंग करने वाले योगियो के चित्त मे तथा मन्त्र-यन्त्रादि द्वारा दुनियां को भ्रम मे डालने वाले ऋषि-मुनियो के अन्त करण मे भगवान कभी निवास नही करते।

—सकलित

१६ (१) घमड से चढी हुयी आंखे, (२) झूठ बोलनेवाली जीभ (३) निर्दोष का खून बहानेवाले हाथ (४) अनर्थ की कल्पना करनेवाला मन (५) बुराई की ओर दौडनेवाले पैर (६) झूठ बोलनेवाला गवाह और (७) भाई-भाई मे फूट डालनेवाला आदमी—इन सातो से यहोवा परमेश्वर को घृणा है। —पु० बा० नविश्ते-६।१६-१९

१७ खुदा तीन को नापसन्द करता है और तीन को बहुत नापसन्द। कुकर्मी को नापसन्द करता है और बूढे कुकर्मी को बहुत नापसन्द। कजूस को नापसन्द करता है और धनी कजूस को बहुत नापसन्द। अहकारी को नापसन्द करता है और साधु अहकारी को बहुत नापसन्द।

—हजरत मुहम्मद

८ आणातवो आणाइ संजमो, तहय दाणमाणाए ।
आणारहिओ धम्मो, पलालपूलव्व पडिहाई ॥

—सवोधसत्तरि ३२

आज्ञा में तप है, आज्ञा में संयम है और आज्ञा में ही दान है। आज्ञारहित धर्म को ज्ञानी पुरुष धान्यरहित घास के पूलेवत् छोड़ देता है।

९ हुक्म रजाई चलणा, 'नानक' लिखिया नालि ।

—जपुजी साहिब

प्रभु की आज्ञा के अनुसार ही चलना चाहिए। नानक कहते हैं कि यह परमात्मा का आदेश हमारे साथ लिखा हुआ है।

१० अपरा तीर्थंकृत्सेवा, तदाज्ञापालनं परम् ।
आज्ञाराद्धा विराद्धा च, शिवाय च भवाय च ।

—सम्बोधि ३।५

तीर्थंकर की पर्युपासना की अपेक्षा उनकी आज्ञा का पालन करना विशिष्ट है। आज्ञा की आराधना करनेवाले मुक्ति को प्राप्त होते हैं और उसकी विराधना करनेवाले संसार में [illegible]

१६

# प्रभु-आज्ञा

१. अर्हदुपदेश आज्ञा । —जैनसिद्धान्तदीपिका ७।३१

अरिहन्त के उपदेश को आज्ञा कहते हैं ।

२. सड्ढी आणाए मेहावी । —आचाराग ३।४

प्रभु की आज्ञा पालने मे जो श्रद्धाशील होता है, वह मेधावी-बुद्धिमान है ।

३. इह आणाकखी पंडिए अणिहे । —आचारांग ४।३

इस जैनशासन मे जो प्रभुआज्ञा की आराधना करता है वह पडित है एव कर्मो से लिप्त नही होता ।

४. आरगाए अभिसमेच्चा अकुतोभय । —आचाराग ६।३

प्रभु की आज्ञानुसार तत्त्व को समझकर तदनुसार कार्य करने वाले को कही भी भय नही है ।

५. निद्दे श नाइवट्टेज्जा मेहावी । —आचाराग ५।६

विद्वान् पुरुप को चाहिए कि वह (भगवान की) आज्ञा का उल्लघन न करे ।

६. आरगाए मामग धम्म । —आचाराग ६।२

आज्ञानुसार चलना मेरा धर्म है ।

७. अच्चतनियाणखमा, एसा मे भासिया वई । —आचाराग ६।२

मेरे द्वारा कही हुई यह वाणी कर्म-काटने मे अत्यन्त समर्थ है ।

८ आणातवो आणाए संजमो, तहय दाणमाणाए।
आणारहिओ धम्मो, पलालपूलव्व पडिहाई॥
—संबोधसत्तरि ३२

आज्ञा मे तप है, आज्ञा मे संयम है और आज्ञा मे ही दान है। आज्ञारहित धर्म को ज्ञानी पुरुष धान्यरहित घास के पूलेवत् छोड़ देता है।

९ हुकम रजाई चलणा, 'नानक' लिखिया नालि।
—जपुजी साहिब

प्रभु की आज्ञा के अनुसार ही चलना चाहिए। नानक कहते हैं कि यह परमात्मा का आदेश हमारे साथ लिखा हुआ है।

१० अपरा तीर्थकृत्सेवा, तदाज्ञापालन परम्।
आज्ञाराद्धा विराद्धा च, शिवाय च भवाय च।
—सम्बोधि ७।५

तीर्थंकर की पर्युपासना की अपेक्षा उनकी आज्ञा का पालन करना विशिष्ट है। आज्ञा की आराधना करनेवाले मुक्ति को प्राप्त होते हैं और उससे विपरीत चलनेवाले संसार मे भटकते हैं।

११. प्रभु आज्ञा का ख्याल न करके मात्र उनका भजन करने वाले व्यक्ति सेठ 'मोतीलालजी' की उस सेठानी के समान है। जिसने कहने पर भी अपने प्यासे पति को पानी नहीं पिलाया एवं आंख मीच कर मोती-मोती की माला फेरती रही।

१२ अल्ला की आज्ञा से बाहिर मत जाओ। अल्ला ने जो नहीं बताया उसकी खोज मत करो। जान-बूझकर ही मौन रखा है। —कुरान की ४२ बातो मे से

## १६ प्रभु-आज्ञा

१. अर्हदुपदेश आज्ञा । —जैनसिद्धान्तदीपिका ७।३१

अरिहन्त के उपदेश को आज्ञा कहते हैं ।

२. सड्ढी आणाए मेहावी । —आचाराग ३।४

प्रभु की आज्ञा पालने मे जो श्रद्धाशील होता है, वह मेधावी-बुद्धिमान है ।

३. इह आणाकखी पडिए अणिहे । —आचारांग ४।३

इस जैनशासन मे जो प्रभुआज्ञा की आराधना करता है वह पडित है एव कर्मों से लिप्त नही होता ।

४. आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय । —आचारांग ६।३

प्रभु की आज्ञानुसार तत्त्व को समझकर तदनुसार कार्य करने वाले को कही भी भय नही है ।

५. निद्द`श नाइवट्टेज्जा मेहावी । —आचाराग ५।६

विद्वान् पुरुप को चाहिए कि वह (भगवान की) आज्ञा का उल्लघन न करे ।

६. आणाए मामग धम्म । —आचाराग ६।२

आज्ञानुसार चलना मेरा धर्म है ।

७. अच्चतनियाणखमा, एसा मे भासिया वई ।
—आचारांग ६।२

मेरे द्वारा कही हुई यह वाणी कर्म-काटने मे अत्यन्त समर्थ है ।

८ आणातवो आणाइ सजमो, तहय दाणमाणाए ।
आणारहिओ धम्मो, पलालपूलव्व पडिहाई ॥

—सबोधसत्तरि ३२

आज्ञा में तप है, आज्ञा मे सयम है और आज्ञा मे ही दान है। आज्ञारहित धर्म को ज्ञानी पुरुष धान्यरहित घास के पूलेवत् छोड़ देता है।

९ हुकम रजाई चलणा, 'नानक' लिखिया नालि ।

—जपुजी साहिब

प्रभु की आज्ञा के अनुसार ही चलना चाहिए। नानक कहते है कि यह परमात्मा का आदेश हमारे साथ लिखा हुआ है।

१० अपरा तीर्थकृत्सेवा, तदाज्ञापालन परम् ।
आज्ञाराद्धा विराद्धा च, शिवाय च भवाय च ।

—सम्बोधि ७।५

तीर्थंकर की पर्युपासना की अपेक्षा उनकी आज्ञा का पालन करना विशिष्ट है। आज्ञा की आराधना करनेवाले मुक्ति को प्राप्त होते है और उससे विपरीत चलनेवाले ससार मे भटकते है।

११. प्रभु आज्ञा का त्याग न करके मात्र उनका भजन करने वाले व्यक्ति सेठ 'मोतीलालजी' को उस सेठानी के समान है। जिसने कहने पर भी अपने प्यासे पति को पानी नही पिलाया एव आंख मीच कर मोती-मोती की माला फेरती रही।

१२ अल्ला की आज्ञा से बाहिर मत जाओ। अल्ला ने जो राह बताया उसकी मोजमत करो। जान-बूझकर ही [illegible] है।

—कुरान की ४२ बातो मे से

१६

## प्रभु-अ

१. अर्हदुपदेश आज्ञा । —जैनसिद्धान्तदीपिका

अरिहन्त के उपदेश को आज्ञा कहते हैं ।

२. सड्ढी आणाए मेहावी । —आचार

प्रभु की आज्ञा पालने मे जो श्रद्धाशील होता है, वह बुद्धिमान है ।

३. इह आणाकखी पडिए अणिहे । —आचार

इस जैनशासन मे जो प्रभुआज्ञा की आराधना क वह पडित है एव कर्मों से लिप्त नही होता ।

४. आरणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय । —आचार

प्रभु की आज्ञानुसार तत्त्व को समझकर तदनुसार कार वाले को कही भी भय नही है ।

५. निद्देश नाइवट्टेज्जा मेहावी । —आचार

विद्वान् पुरुष को चाहिए कि वह (भगवान की) आ उल्लघन न करे ।

६. आरणाए मामग धम्म । —आचार

आज्ञानुसार चलना मेरा धर्म है ।

७. अच्चतनियाणखमा, एसा मे भासिया वई । —आचार

मेरे द्वारा कही हुई यह वाणी कर्म-काटने मे समर्थ है ।

१३. निट्ठियट्ठे वीरे आगमेण,
सया परक्कमेज्जासि त्ति बेमि । —आचारांग ५।६

निष्ठावान वीर पुरुष को आगम (भगवान की वाणी) के अनुसार सदा पराक्रम करना चाहिए ।

१४. अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा।
एय ते मा होउ, एय कुसलस्स दसण ।
—आचाराग ५।६

कई अनाज्ञा मे उद्यमी एव आज्ञा मे निरुद्यमी होते है—हे साधक ! यह हाल तेरा न हो । यह भगवान का कथन है ।

१५. मुहम्मद कहता है—मै कुकर्म नही करता और तुम्हे भी निषेध करता हूँ । तुम अज्ञानी हो अत. तुम्हे मेरी आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए ।

—कुरान की ४२ बातो में से

★

१३. निट्ठियट्ठे वीरे आगमेण,
सया परक्कमेज्जासि त्ति बेमि। —आचारांग ५।६

निष्ठावान वीर पुरुष को आगम (भगवान की वाणी) के अनुसार सदा पराक्रम करना चाहिए।

१४. अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा।
एय ते मा होउ, एय कुसलस्स दसण। —आचारांग ५।६

कई अनाज्ञा मे उद्यमी एव आज्ञा मे निरुद्यमी होते है—हे साधक ! यह हाल तेरा न हो। यह भगवान का कथन है।

१५. मुहम्मद कहता है—मै कुकर्म नही करता और तुम्हे भी निषेध करता हूँ। तुम अज्ञानी हो अतः तुम्हे मेरी आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए।

—कुरान की ४२ बातो मे से

१३. निट्ठियट्ठे वीरे आगमेण,
सया परक्कमेज्जासि त्ति बेमि। —**आचारांग ५।६**

निष्ठावान वीर पुरुष को आगम (भगवान की वाणी) के अनुसार सदा पराक्रम करना चाहिए।

१४. अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा।
एय ते मा होउ, एय कुसलस्स दसण।
—**आचारांग ५।६**

कई अनाज्ञा मे उद्यमी एव आज्ञा मे निरुद्यमी होते है—हे साधक! यह हाल तेरा न हो। यह भगवान का कथन है।

१५. मुहम्मद कहता है—मै कुकर्म नही करता और तुम्हे भी निषेध करता हूँ। तुम अज्ञानी हो अतः तुम्हे मेरी आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए।

—**कुरान की ४२ बातो मे से**

★

१३. निट्ठियट्ठे वीरे आगमेण,
सया परक्कमेज्जासि त्ति बेमि। —आचारांग ५।६

निष्ठावान वीर पुरुष को आगम (भगवान की वाणी) के अनुसार सदा पराक्रम करना चाहिए।

१४. अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा।
एयं ते मा होउ, एयं कुसलस्स दंसणं।
—आचारांग ५।६

कई अनाज्ञा मे उद्यमी एव आज्ञा मे निरुद्यमी होते हैं—हे साधक! यह हाल तेरा न हो। यह भगवान का कथन है।

१५. मुहम्मद कहता है—मैं कुकर्म नही करता और तुम्हें भी निषेध करता हूँ। तुम अज्ञानी हो अत. तुम्हे मेरी आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए।

—कुरान की ४२ बातो मे से

३. निट्ठियट्ठे वीरे आगमेण,
सया परक्कमेज्जासि त्ति बेमि। —आचारांग ५।६

निष्ठावान वीर पुरुष को आगम (भगवान की वाणी) के अनुसार सदा पराक्रम करना चाहिए।

. अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा।
एय ते मा होउ, एय कुसलस्स दसण।
—आचारांग ५।६

कई अनाज्ञा मे उद्यमी एव आज्ञा मे निरुद्यमी होते हैं—हे साधक! यह हाल तेरा न हो। यह भगवान का कथन है।

. मुहम्मद कहता है—मै कुकर्म नही करता और तुम्हे भी निषेध करता हूँ। तुम अज्ञानी हो अतः तुम्हे मेरी आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए।

—कुरान की ४२ बातो मे से

१३. निट्ठियट्ठे वीरे आगमेण,
सया परक्कमेज्जासि त्ति बेमि। —आचारांग ५।६

निष्ठावान वीर पुरुष को आगम (भगवान की वाणी) के अनुसार सदा पराक्रम करना चाहिए।

१४. अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा।
एयं ते मा होउ, एयं कुसलस्स दसणं।
—आचारांग ५।६

कई अनाज्ञा मे उद्यमी एव आज्ञा मे निरुद्यमी होते है—हे साधक! यह हाल तेरा न हो। यह भगवान का कथन है।

१५. मुहम्मद कहता है—मै कुकर्म नही करता और तुम्हे भी निषेध करता हूँ। तुम अज्ञानी हो अतः तुम्हे मेरी आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए।

—कुरान की ४२ बातो में से

१३. निट्ठियट्ठे वीरे आगमेण,
सया परक्कमेज्जासि त्ति बेमि। —आचारांग ५।६

निष्ठावान वीर पुरुष को आगम (भगवान की वाणी) के अनुसार सदा पराक्रम करना चाहिए।

४. अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा।
एय ते मा होउ, एय कुसलस्स दसण।
—आचारांग ५।६

कई अनाज्ञा मे उद्यमी एव आज्ञा मे निरुद्यमी होते हैं—हे साधक! यह हाल तेरा न हो। यह भगवान का कथन है।

५. मुहम्मद कहता है—मै कुकर्म नही करता और तुम्हे भी निषेध करता हूँ। तुम अज्ञानी हो अत. तुम्हे मेरी आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए।

—कुरान की ४२ बातो में से

★

१३. निट्ठियट्ठे वीरे आगमेण,
सया परक्कमेज्जासि त्ति बेमि। —आचारांग ५।६

निष्ठावान वीर पुरुष को आगम (भगवान की वाणी) के अनुसार सदा पराक्रम करना चाहिए।

१४. अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा।
एय ते मा होउ, एय कुसलस्स दसण।
—आचारांग ५।६

कई अनाज्ञा मे उद्यमी एव आज्ञा मे निरुद्यमी होते हैं—हे साधक ! यह हाल तेरा न हो। यह भगवान का कथन है।

१५. मुहम्मद कहता है—मै कुकर्म नही करता और तुम्हे भी निषेध करता हूँ। तुम अज्ञानी हो अतः तुम्हे मेरी आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए।

—कुरान की ४२ बातो मे से

१३. निट्ठियट्ठे वीरे आगमेण,
सया परक्कमेज्जासि त्ति बेमि। —आचारांग ५।६

निष्ठावान वीर पुरुष को आगम (भगवान की वाणी) के अनुसार सदा पराक्रम करना चाहिए।

१४. अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा।
एयं ते मा होउ, एयं कुसलस्स दंसणं।
—आचारांग ५।६

कई अनाज्ञा मे उद्यमी एव आज्ञा मे निरुद्यमी होते हैं—हे साधक! यह हाल तेरा न हो। यह भगवान का कथन है।

१५. मुहम्मद कहता है—मै कुकर्म नही करता और तुम्हे भी निषेध करता हूँ। तुम अज्ञानी हो अतः तुम्हे मेरी आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए।

—कुरान की ४२ बातो मे से

★

१३. निट्ठियट्ठे वीरे आगमेण,
सया परक्कमेज्जासि त्ति बेमि। —आचारांग ५।६

निष्ठावान वीर पुरुष को आगम (भगवान की वाणी) के अनुसार सदा पराक्रम करना चाहिए।

१४. अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा।
एय ते मा होउ, एय कुसलस्स दसण। —आचारांग ५।६

कई अनाज्ञा मे उद्यमी एव आज्ञा मे निरुद्यमी होते हैं—हे साधक ! यह हाल तेरा न हो। यह भगवान का कथन है।

१५. मुहम्मद कहता है—मै कुकर्म नही करता और तुम्हे भी निषेध करता हूँ। तुम अज्ञानी हो अत. तुम्हे मेरी आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए।

—कुरान की ४२ बातो मे से

१. निट्ठियट्ठे वीरे आगमेण,
सया परक्कमेज्जासि त्ति बेमि। —आचारांग ५।६

निष्ठावान वीर पुरुष को आगम (भगवान की वाणी) के अनुसार सदा पराक्रम करना चाहिए।

२. अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा।
एय ते मा होउ, एय कुसलस्स दसण।
—आचारांग ५।६

कई अनाज्ञा मे उद्यमी एव आज्ञा मे निरुद्यमी होते हैं—हे साधक! यह हाल तेरा न हो। यह भगवान का कथन है।

३. मुहम्मद कहता है—मै कुकर्म नही करता और तुम्हे भी निषेध करता हूँ। तुम अज्ञानी हो अत. तुम्हे मेरी आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए।

—कुरान की ४२ बातो मे से

★

१३. निट्ठियट्ठे वीरे आगमेण,
सया परक्कमेज्जासि त्ति बेमि। —आचाराग ५।६

निष्ठावान वीर पुरुष को आगम (भगवान की वाणी) के अनुसार सदा पराक्रम करना चाहिए।

१४. अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा।
एय ते मा होउ, एय कुसलस्स दसण।
—आचारांग ५।६

कई अनाज्ञा मे उद्यमी एव आज्ञा मे निरुद्यमी होते हैं—हे साधक! यह हाल तेरा न हो। यह भगवान का कथन है।

१५. मुहम्मद कहता है—मै कुकर्म नही करता और तुम्हे भी निषेध करता हूँ। तुम अज्ञानी हो अतः तुम्हे मेरी आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए।

—कुरान की ४२ बातो मे से

. निट्ठियट्ठे वीरे आगमेण,
सया परक्कमेज्जासि त्ति बेमि। —आचारांग ५।६
निष्ठावान वीर पुरुष को आगम (भगवान की वाणी) के अनुसार सदा पराक्रम करना चाहिए।

. अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा।
एय ते मा होउ, एय कुसलस्स दसण।
—आचारांग ५।६

कई अनाज्ञा मे उद्यमी एव आज्ञा मे निरुद्यमी होते हैं—हे साधक! यह हाल तेरा न हो। यह भगवान का कथन है।

. मुहम्मद कहता है—मै कुकर्म नही करता और तुम्हे भी निषेध करता हूँ। तुम अज्ञानी हो अत. तुम्हे मेरी आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए।

—कुरान की ४२ बातो मे से

★

१३. निट्ठियट्ठे वीरे आगमेण,
सया परक्कमेज्जासि त्ति बेमि। —आचारांग ५।६
निष्ठावान वीर पुरुष को आगम (भगवान की वाणी) के अनुसार सदा पराक्रम करना चाहिए।

१४. अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा।
एय ते मा होउ, एय कुसलस्स दसण।
—आचाराग ५।६
कई अनाज्ञा मे उद्यमी एव आज्ञा मे निरुद्यमी होते हैं—हे साधक! यह हाल तेरा न हो। यह भगवान का कथन है।

१५. मुहम्मद कहता है—मै कुकर्म नही करता और तुम्हे भी निषेध करता हूँ। तुम अज्ञानी हो अतः तुम्हे मेरी आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए।
—कुरान की ४२ बातो मे से

## भक्ति के भेद

१. भक्ति दो प्रकार की है— बाह्य और आन्तरिक। बाह्य भक्ति-श्रंवण-वन्दन-कीर्तन आदि है और आन्तरिक भक्ति— प्रभु मे अगाध श्रद्धा एव तन्मयता है। दोनो ही प्रकार की भक्ति आवश्यक है। केवल बाह्यभक्ति करनेवाला यूरोप के बन्दर तुल्य है और आन्तरिक भक्ति करनेवाला उस राजपुत्र के समान है जो सारा काम करके भी बैंक की चपरास नही लगाता।

—सकलित

२. दोनो दृष्टान्त यथा —

(क) विलायत मे एक बन्दर था। उसे मनुष्य की रीति-भाँति क्रिया-काड सिखाए हुए थे। अत. वह अपने स्वामी की तरह कोट-पतलून-नेकटाई आदि पहनता था। सिर मे तेल की मालिश करता था, कुर्सी पर बैठकर छुरी-काटे से खाना खाता था, पलग पर सोता था और मोटर मे चढकर अपने मालिक के साथ ऑफिस मे भी आ बैठता था। फिर भी रहा तो नकल करने वाला बन्दर का बन्दर ही।

(ख) एक राजपूत नौकरी की आशा से बैंक मे गया। अठारह भाषा का ज्ञाता जानकर मैनेजर ने उसे

## २० भक्ति के विषय में स्फुटविचार

१. भक्ति के हृदय, ज्ञान के आँख और कर्म के पैर होते है।

२. जरूरत का न रहना ही भक्ति की पूर्णता है। —अज्ञात

३. वर्णमाला के सारे अक्षर पढे विना जैसे पढना नही आता, उसी तरह भक्ति के सभी नियमो का पालन किये विना आत्मकल्याण भी नही होता। —सकलित

४ दिखाने के लिये की गयी भक्ति भूखे की डकारे हैं।

—अज्ञात

५. भिखारी कहता है—भगवान के नाम पर दया करो, खुदा के नाम पर दो मुट्ठी चावल दो, मेहरबानी करके मुझे एक पैसा दो। तुम्हे भगवान बहुत-बहुत देगा। कई व्यक्ति धन के भूखे मकानो, दूकानो के साथ भगवान का नाम लगाते हैं। जैसे—गोविन्दभवन, रामभरोसे हिन्दु-होटल, श्रीकृष्णनिवास लोजिग एन्ड बोर्डिङ्ग हाउस, शकरविजय - प्रिन्टिगप्रेस, विष्णुभवन हिन्दुलॉज, कृष्णसिनेमा आदि-आदि। —संकलित

६. मैं कब कहता हूँ आप
कुटुम्ब-परिवार से नाता तोड लीजिए,
अपने काम-धन्धे को छोडकर
ससार से मुँह मोड़ लीजिए,

कहना तो यही है यदि हर
आत्मा मे परमात्मा होने का विश्वास है,
तो कम से कम ईश्वर के साथ
धोखा करना तो छोड़ दीजिए।
हर भक्त को डर रहता है
भगवान मुझ से कही रूठ नही जाए !
और भगवान को डर रहता है
भक्त की आस्था कही टूट नही जाए !
मुझे डर हैं भक्त और भगवान के
वीच चल रही इस सौदेबाजी मे
कही सच्चाई को पाने का
सही-सही रास्ता छूट नही जाए।

—'खुले आकाश मे' पुस्तक से

६. माताए मनौतियाँ मनाती है कि यह मेरा बच्चा ठीक हो जाये, या बोलने-चलने लग जाये तो मैं भगवान को छत्र चढाऊँगी। मन्दिर मे एक कमरा बनवा दूगी एव जात देने जाऊँगी आदि-आदि। व्यापारी सकल्प करते है कि अगर लाखरुपये मिल जायँ तो अमुक रकम भगवान के नाम लगा देगे।

वन्धुओ ! यह सव तो शर्ती व्यापार हैं। प्रभु के लिये यदि कुछ देना हो तो खाने-पीने-पहनने आदि की प्रियवस्तु का त्याग करो ! केवल आत्मकल्याण के लिये उनकी उपासना करो, लेकिन उन्हे अर्धविराम-पूर्णविराम मत वनाओ !

—सकलित

७ विवाह के गीत गानेवाली स्त्रियो मे कई जातिव्यवहार का पालन करती है, कई पतासो व नारियल की भूख रखती है, कई मात्र अपना दिल बहलाती हैं किन्तु वर-वधू की मातायें केवल मगलकामना करती है। इसी तरह भक्ति व उपासना भी कई लोग शारीरिक सकट मिटाने, कई धन कमाने, कई नाम के भूखे एव कई दुनियाँ को दिखाने के लिये करते है, लेकिन सच्चे भक्तो के दिल मे सिर्फ आत्मकल्याण की अभिलाषा रहती है।

—सकलित

. मेहमानो को अच्छी चीजे दी जाती है। बेटी-जँवाई के लिये बहुमूल्य वेप लाया जाता है। जज-मजिस्ट्रेट-दीवान एव राजाओ के लिये बढिया से बढिया भोजन, वस्त्र, आभूषण आदि उपस्थित किये जाते है, तो फिर भगवान के आगे विकृतविचार, पुद्गलसुखो की याचना एव व्यावहारिक दुखो के विलाप क्यो ?

—सकलित

☆

१ भक्तानामनिर्वाच्य हि चेष्टितम् ।

भक्तो की चेष्टायें अनिर्वाच्य होती हैं ।

२ नास्ति तेषु जाति-विद्या-रूप-कुल-धन-क्रियादिभेद ।

—भक्तिसूत्र ७२

भक्तो मे जाति-विद्या-रूप-कुल-धन-क्रिया आदि का भेद नही होता । प्रभु-प्रेम मे लीन हर एक व्यक्ति भक्त बन सकता है । देखिए—निषाद नीच जाति का था, सदना कसाई थे, शबरी गँवार स्त्री थी, ध्रुव अपढ-बालक था, विभीषण-हनुमान आदि अकुलीन राक्षस-वानर थे, विदुर-सुदामा निर्धन थे तथा गोपियाँ क्रियाहीन थी, किन्तु ये सब उच्चकोटि के भक्त माने गये हैं ।

३ अद्वेष्टा सर्वभूताना, मैत्र करुण एव च ।
निर्ममो निरहकार, सम-दुःख-सुख. क्षमी ॥१३॥
यस्मान्नोद्विजते लोको, लोकान्नोद्विजते च य ।
हर्षामर्षभयोद्वेगै, मुक्तोय स च मे प्रिय ॥१५॥
अनपेक्ष शुचिर्दक्ष, उदासीनो गतव्यथ ।
सर्वारम्भपरित्यागी, यो मद्भक्त स मे प्रियः ॥१६॥
यो न हृष्यति न द्वेष्टि, न शोचति न काङ्क्षति ।
शुभाशुभपरित्यागी, भक्तिमान् यः स मे प्रियः ॥१७॥

समः शत्रौ च मित्रे च, तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु, समः सङ्गविवर्जितः ॥१८॥
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी, सन्तुष्टो येन केन चित्।
अनिकेतः स्थिरमतिः, भक्तिमान् मे प्रियो नरः ॥१९॥
ये तु धर्म्यामृतमिदं, यथोक्तं पर्युपासते।
श्रद्दधाना मत्परमा, भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ॥२०॥

—गीता अध्याय १२

जो किसी से द्वेष नही करता, सभी का मित्र है, हेतुरहित-दयालु है, ममतारहित है, अहकाररहित है, सुख-दुःखो की प्राप्ति मे सम है और क्षमावान है। १३

जिससे कोई जीव उद्विग्न नही होता और जो स्वय किसी जीव से उद्विग्न नही होता। जो हर्ष-अमर्ष (दूसरो की उन्नति देख कर जलना) भय-उद्वेग आदि से मुक्त है, वह मुझे प्रिय है। १५

जो पुरुष आकाक्षा से रहित है, शुद्ध अन्तःकरणवाला है, चतुर है अर्थात् जिस काम के लिये आया था उसको कर चुका है, पक्षपातरहित है, दुःखो से छूटा हुआ है और सभी प्रकार के आरम्भ का त्यागी है वह मेरा भक्त है, और मुझे प्रिय है। १६

जो न हर्ष करता है न द्वेष करता है, न सोच करता है, न कामना करता है तथा जो शुभ-अशुभ सभी प्रकार के कर्मों का त्यागी है, वह भक्तियुक्त व्यक्ति मुझे प्रिय है। १७

जो पुरुष शत्रु-मित्र मे तथा मान-अपमान मे समभाव रहता है और शरदी-गरमी एव सुख-दुःख आदि द्वन्द्वो से समचित्त है और आसक्तिरहित है। १८

जो निन्दा-स्तुति को समान समझता है, मौनी अर्थात् ईश्वर के स्वरूप को मनन करने वाला है तथा जिस—किसी भी प्रकार

से शरीर का निर्वाह करने में सन्तुष्ट है, घर-रहित है और स्थिरबुद्धि वाला है। वह भक्तिमान् मनुष्य मुझे प्रिय है। १९

जो श्रद्धायुक्त पुरुष धर्ममय अमृत का यथोक्तविधि से सेवन करता है वह मेरा परम भक्त है और मुझे अत्यन्त प्रिय है। २०

४. अल्लाह् पर निर्भर रहनेवालो के लक्षण :—

(१) अल्लाह् जिस बात के लिये जामिन है उसकी चिन्ता न करना।

(२) जिस समय जो मिल जाय, उसी मे सतोप मानना।

(३) तन-मन-धन को अल्लाह की खिदमत मे लगा देना।

(४) मालिकी को छोड देना।

(५) 'मैं' पन को छोड देना।

(६) ससारी सम्बन्धो को छोड देना।

(७) मन से, वचन से, कर्म से सत्य का पालन करना।

(८) तत्वज्ञान प्राप्त करना।

(९) ससारी लोगो का आसरा छोड देना।

—यूसुफ़ आसवान

५. चतुर्विधा भजन्ते मा, जना. सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी, ज्ञानी च भरतर्षभ।
तेषा ज्ञानी नित्ययुक्त, एकभक्तिर्विशिष्यते।

—गीता ७।१६-१७

हे अर्जुन! मुझे चार प्रकार के मनुष्य भजते है—(१) .। दुःखी, (२) जिज्ञासु—मुझे यथार्थ रूप से जानने का ...

(३ अर्थार्थी—धन, पुत्र, स्त्री आदि भौतिक पदार्थों का इच्छुक, (४) ज्ञानी निष्काम—इन सब मे अनन्यभक्तिवाला एक ज्ञानी भक्त ही उत्तम है।

६ दो तरह के भक्त—एक खरबूजे जैसे और दूसरे सन्तरे जैसे। एक चमड़ी जैसे, दूसरे पगडी जैसे। हर समय, हर स्थान एव हर परिस्थिति मे समान रूप से भक्ति करने वाले भक्त खरबूजा व चमडी के तुल्य है तथा बाहिर-अन्दर से भिन्न रूपवाले एव मौके-मौके भक्ति का ढोग दिखानेवाले भक्त सन्तरे व पगडी के तुल्य हैं।

७ भक्ति तो ससार कर रहा है पर, किसी का भगवान धन है, किसी का स्त्री, पुत्र, परिवार है और किसी का सासारिक सुख है। यही कारण है कि भक्ति करते हुए भी लोग दु.खी हैं।

८ भौतिक सुखो की भूख से भक्ति करनेवाले चिरमी के बदले नव-लाख का हीरा हार रहे है, फूटी कौड़ी के बदले करोड रुपयो की हुण्डी बेच रहे हैं, ईख के खेत को सीचने के बदले मूर्ख कृषक की तरह जमीन के छिद्रो मे पानी को बरबाद कर रहे हैं।

६. आजकल लोगो ने भगवान को सट्टा बना रखा है। एक दो माला फेरते ही सोचने लगते हैं कि रुपये क्यो नही मिले ?

१०. एक भक्त ने ज्ञानी साधु से पूछा—मैं ३२ वर्ष से वन्दगी (भक्ति) कर रहा हूँ, फिर भी ज्ञान क्यो नही होता ?

साधु ने कहा—'३२ क्या ३२०० वर्ष मे भी ऐसे तो ज्ञान नही होगा।' भक्त बोला—तो क्या करू ? साधु ने कहा—सिर मु डाकर, शृ गार छोडकर सगे-सम्बन्धियो मे रोटी माग। भक्त चमककर कहने लगा—यह कैसे हो सकता है ? साधु बोला—तो भाई ! अभिमान छोडे बिना तो ज्ञान कभी नही होगा।

## २२ सच्चे भक्त

१. दास कहाना कठिन है, मै दासन का दास।
अव तो ऐसा हो रहूँ, पाव तले का घास॥
—अज्ञात

२. एक जिज्ञासु ने भक्त से पूछा—क्या कभी हमे भी याद करते हैं ?
भक्त—भगवान को भूलने के समय।
जिज्ञासु—क्या ईश्वर को भी कभी याद करते है ?
भक्त—नही।
जिज्ञासु—क्यो ?
भक्त—ईश्वर को कभी भूलता ही नही।

३. भक्त हुसेन ने किसी के पूछने पर कहा—'भजन करते समय तो मै कुछ अच्छा हूँ अन्यथा मेरे जैसे सौ हुसेनो से भी यह कुत्ता श्रेष्ठ है।'

४. चरणामृत कहकर उनके देवर महाराणा रतनसिंह ने मीरावाई को जहर का प्याला पिला दिया। सच्ची भक्ति के कारण उसके ऊपर कुछ भी असर न हुआ।

५. तानसेन के गुरु हरिदासजी भगवान के सिवा किसी को भी खुश करने के लिए भजन नही गाते थे। अकवर आग्रह करके उनका गाना सुनने गया एव गुप्तरूप से

वाहर वैठा। तानसेन ने राग-विस्मरण का मिष किया एव गुरु ने गाना गाया। सुनकर अकवर आनन्दवश भान भूल गया। फिर कहा - ऐसा गाना तुमने कभी नही सुनाया। तानसेन वोला—मैं आपको खुश करने के लिए गाता हूँ जवकि गुरुजी सिर्फ भगवान के लिए गाते हैं !...

६. शिव भक्त राजा ने शकर से प्रार्थना की कि—मेरे नगर को स्वर्ग मे पहुँचा दे। शकर ने कहा—शिवरात्रि के दिन वीच मे रुके विना जो मेरा दर्शन करेगा वह स्वर्ग-वासी हो जाएगा। राजा ने पडह वजाया एव स्वग के इच्छुक लोग दर्शनार्थ जाने लगे। देवमाया से मार्ग मे मिष्टान्न, वस्त्र, पात्र, रुपये, मोहरें एव रत्नो के ढेर लग गए। लोग मोहक द्रव्यो मे फसते गए और रुकते गए। केवल एक राजा ही विधिवत् शिवदर्शनार्थ पहुँचा।

७. एक चोर ने कथा मे कृष्ण के मुकुट-हार-कौस्तुभमणि आदि आभूषणो का वर्णन सुना। पडित को डरा-धमका कर कृष्ण का पता पूछने लगा। उसने उत्तर दिशा वतलाई। चोर तल्लीन होकर चल पडा। जगल में कृष्ण मिले। आभूषण मागे। ना कहने पर खीचातानी करता-करता वेहोश हो गया एव फिर भक्त वन गया। पता पाकर पडित भी गया लेकिन दर्शन न हुए। कारण-भक्ति सच्ची नही थी।

८ एकवार राम नदी से पार होने के लिये नाव पर लगे। नाविक ने कहा—प्रभु ! तुम्हारी चरण

स्पर्श से शिला (अहल्या) मनुष्य वन गई थी। कही मेरी आजीविका की एक मात्र साधन यह नाव भी मनुष्य बन जाए और मै कमाने-खाने से रह जाऊँ अत पहलेः तुम्हारे पैर धोऊँगा। यो कहकर पैर धोए एव फिर राम को नाव मे बिठाकर नदी से पार किया। राम रत्नजड़ित अगूठी देने लगे।

तब नाविक ने कहा :—

**नाथ ! त्वं भवसागरस्य दयया पारप्रदोऽहं तथा,**
**लोकानां सरितः कुटुम्बभरणव्याजेन संतारकः।**
**युक्तं नापितधावकादिवदतः कैवर्तयोनौं मिथो**
**नार्थादानमिमं जनं तव पुनर्घट्टागत तारय !**

हे नाथ ! आप दया करके दुनिया को भवसागर से पार करते हैं और मैं कुटुम्बपोषण के लिए लोगो को इस नदी से पार करता हूँ अत. हम दोनो मल्लाह है। जैसे—नाई-धोबी आदि अपने जाति भाइयो से मजदूरी नही लेते (बदले मे एक दूसरे का काम कर दिया करते हैं) उसी प्रकार मुझे भी आप से पैसा लेना उचित नही। मैंने आपको नदी से पार किया है तो घाट पर आऊँ तब आप भी मुझे ससार-समुद्र से पार कर देना।

—वाल्मीकि रामायण

## १३ भक्तों के लिए शिक्षा

१ स्त्री-धन-नास्तिक-वैरि-चरित्र न श्रवणीयम् ।

—भक्तिसूत्र ६३

भक्त को स्त्री, धन, नास्तिक और वैरी का चरित्र नही सुनना चाहिए ।

२. वादोनाऽवलम्ब्य —भक्तिसूत्र ७४

भक्त को वादविवाद नही करना चाहिए ।

३ भक्तिशास्त्राणि मननीयानि, तदुद्बोधककर्माण्यपि करणीयानि । —भक्तिसूत्र ७६

भक्त का भक्ति शास्त्र का मनन एव भक्ति को बढानेवाले कर्म करते रहना चाहिए ।

४ विदेश से देश आते समय स्वजन सबधियो को भेंट देने के लिये नई-नई वस्तुएँ खरीदते हैं। जैसे विद्वान्-स्नेहियो के लिये अच्छी-अच्छी पुस्तके, प्राणप्यारियो के लिए नए फैशन के वस्त्र-आभूषण और बालको के लिए नए-नए खिलौने, फल और मिठाई लेते है एव देश मे आकर यथायोग्य सबको देते हैं। इसी प्रकार प्रभु के चरणो मे भक्ति व त्याग की भेंट देनी चाहिए।

५ भक्त की चतुराई क्या है ?

ससारियो के ससग से अपने को जहा तक बने, बचाये रखे । —अज्ञात

६. लुकमान हकीम के लड़के ने अपने पिता से पूछा कि—मालिक वरदान दे तो क्या मागू ? हकीम ने कहा—(१) परमार्थ धन (२) पसीने की कमाई (३) उदारता (४) लाज (५) अच्छा स्वभाव—ये पाँच मिल जाने के वाद छट्ठे की जरूरत नही।

७. एक भक्त ने कहा—महाराज! मन स्थिर नही होता। ब्रह्मा, विष्णु, गणपति, महेश, शक्ति, राम, हनूमान, बुद्ध, महावीर ईसू, मुहम्मद आदि जिनकी महिमा के ग्रन्थ पढ़ता हूँ वे ही रुचने लगते है।

गुरु वोले—भाई! तत्व को समझो। नाम के मोह मे मत पडो। जिसमे राग-द्वेष न हो उसे भगवान मानो। जो अहिंसा, अस्तेय ब्रह्मचर्य एव सतोष मे लीन हो उसे गुरु समझो और जिसमे सत्य-अहिंसा हो उसे धर्म जानो। फिर नाम चाहे कुछ भी हो।

★

## २४ भक्तों के वश भगवान

१ निरपेक्ष मुनि शान्त, निर्वैर समदर्शिनम्।
अनुव्रजाम्यह नित्य, पूययेत्यङ्घ्रिरेणुभि ॥
—भागवत ११।१४।१६

भगवान कहते हैं कि—जिसे किसी की अपेक्षा नही, जो शान्त है, किसी से जिसका वैर नही है, जो समदर्शी है, उस महात्मा-भक्त के पीछे-पीछे मैं यह सोचकर घूमता रहता हूँ कि कही उसके चरणो की धूल उडकर मुझ पर पड जाय और मैं पवित्र हो जाऊँ।

२. सबसे बडा शेषनाग है, उसे धारण करनेवाले महादेव है, उनका स्थान कैलाश-पर्वत है, उसे उठानेवाला राजा रावण है और रावण को मारनेवाले भगवान राम है, वे भी भक्तो की चरणरज से स्नान करते हैं। भक्तो के लिये ही वे मच्छ-कच्छप-वराह आदि बनते है (ऐसी वैष्णवी मान्यता है)।

३. दूत रूप मे श्रीकृष्ण जब दुर्योधन के पास गये तब विदुर के घर भोजन हुआ। भक्तिवश भान भूलकर विदुर की स्त्री ने उन्हे केलो के छिलके दे दिये एव वे सहर्ष खा गये। इसीप्रकार सुदामा की स्त्री के दिये हुए कच्चे

चावल भी। श्रीराम ने भक्तिवश भीलनी के झूठे बेर भी खाए थे।

४. अरब के बादशाह का पुत्र मर गया। लाश को तेल मे रखकर बादशाह ने राजसभा मे कहा—लिखा है कुरानशरीफ मे—'फकीर वो ही है जो करे मुर्दे को जिन्दा और जिन्दे को मुर्दा।' लाओ एक साल मे एक ऐसा फकीर, नही तो कुरानो की होगी होली एव मौलवियो को मिलेगी शूली।

एक-एक आलम सब देशो मे भेजे गये। भारत मे आलम फैजी आया। सारे समाचार कहे। अकबर एवं बीरबल ने सूरदास, तुलसीदास और कबीर—ऐसे तीन फकीर बतलाये। फैजी ने उन्हे अरब चलने के लिये कहा। सूरदास जी बोले—मैं ८४ कोश के ब्रजमण्डल से बाहिर नही जाता, यहाँ ले आओ। तुलसीदास ने कहा—अरब देश मे मेरा आचार नही पलता। आखिर काशी से कबीरजी गए और शाहजादे की लाश को सामने रखकर कहने लगे—उठ खुदा के हुक्म से। नही उठी। फिर बोले—उठ कुदरत के हुक्म से। फिर भी नही उठी, तब आदेश दिया—उठ मेरे हुक्म से, बस कहने के साथ ही शाहज़ादा उठ खड़ा हुआ। पुत्र के उठते ही बादशाह ने फरमान किया—लिखा है कुरान शरीफ मे—"जो अपने को साबित करे खुदा से बड़ा, उसे मार दो।" इसलिये आप हो जाइये मरने को तैयार। कबीर ने

मर्म समझाते हुए कहा—मैंने अपने को खुदा से बड़ा साबित नहीं किया लेकिन खुदा ने यह दिखलाया है कि भगवान भक्त के वश मे है।

—कल्याण वर्ष १० अक ६ पृष्ठ १३४२

५ महाराज अवरीप पर दुर्वासा ऋपि क्रुद्ध हो गये। राजा ने विष्णु का स्मरण किया। विष्णु ने चक्र छोड़ा। वह दुर्वासा के पीछे पड़ा। ऋपि ब्रह्मा आदि के पास गये, छुटकारा न होने से आखिर भक्त अवरीप से माफी माग कर बचे।

६. रविआ (एक इस्लाम धर्म की साध्वी) यात्रार्थ मक्का जा रही थी। इधर वलख का वादशाह पावड़े-पावडे नमाज पढता हुआ १४ साल से मक्का पहुचा। आगे 'कावा' स्थान पर नही मिला। वह रविआ का स्वागत करने उसके सामने गया था। कारण वह सच्ची भक्त थी और वादशाह के मन मे अहभाव था।

७ एक भक्त रामायण पढ रहा था। पढने मे स्खलना होते ही हनुमान ने (जो रामकथा मे सदा उपस्थित रहते है) उसके मुंह पर जोर से थप्पड मार दिया। फिर राम के दरवार मे गये तो मुंह सूजा हुआ देखा। पूछने पर राम ने कहा—तूने ही तो थप्पड मारा है।

★

## २५ ठग भक्त

१. उन पादरियो से सावधान रहो जिन्हे लम्बे-लम्बे चोगे पहने हुये घूमना भाता है, जिन्हे बाजारो मे नमस्कार और सभाओ तथा जेमनवारो मे मुख्यस्थान अच्छे लगते हैं एव जो दिखावे के लिये घटो प्रार्थना करते है, वे कडा दण्ड भोगेंगे। —लूका (ईसाई) २०।४५।४७

२. काजी नमाज पढ़ रहा था, जूतियाँ याद आ गयी एव बोला—'दो रुपयो में लाल खरीदी, चोकस करके रखियो, अल्लाहू-अल्लाहू।' शिष्य ने उत्तर दिया—'खुदा के जिक्र मे फिक्र न करियो, कमर के बाधी अल्लाहू-अल्लाहू।'

३. **केदारकंकण**—बिल्ली ने हजार चूहे खा लिये। एकदिन दूध-दही खाते समय किसी ने लाठी मारी। हाडी का कान गले मे आ गया। चूहो से कहने लगी—मैंने हिंसा छोड़ दी अत. यह केदारककण पहना है। चूहे खुले फिरने लगे। एव वह चुपचाप खाने लगी! अधिकाश खत्म होने पर यह ठगाई खुली।

४ ढोंगी काजी ने बादशाह को प्रभावित करने के लिये भोजन कम किया और नमाज बहुत लम्बी पढी। फिर भूख के सताने पर दुबारा खाने लगा, तव उसके पुत्र ने

कहा– भोजन दूसरी वार करते हो तो नमाज भी दूसरो वार पढो। काजी चुप।

५ मुसलमान ने दुकानदार से (जो श्री खूबचन्दजी महाराज का मुख्य श्रावक था) रात के समय मुंह मागे दाम देकर अच्छे चने मागे। श्रावक ने सडे चने तोलकर गठडी मे वाध दिये। दूसरे दिन उसने व्याख्यान मे (वह श्रावक जी-जो कर रहा था) जाकर गठडी खोली। सव शर्मिदा हुये।

६ वग भगत ने ठग भगत — गुजराती कहावत
o मो ना मीठा, ने हैया ना मैला „ „
o मुख मा राम वगल मा छुरी,
भगत थया पण दानत वुरी „ „
o आपवा लेवा ना वाटला जुदा „ „
o वाघ ना उपवास मा पण भेद समझवो „ „

७ दरसावे जग ने दया, पाप उठावे पोट।
हित मे चित्त मे हाथ मे, खत मे मत मे खोट॥

८ हाथ मे माला पेट मे कुदाला
हाथ मे माला वगल मे छुरी।
राम-राम मुख सू कहे, राखे नजर वुरी।

९. मुंह मीठो र' पेट खोटो —राजस्थानी कहावत

१० मीठी छुरी जहर सू भरी „ „

११. जाहेर रहमान रहमान का और बातीन (अन्दर) शैतान का —उर्दू कहावत

१२. हाथी के दात खाने के और दिखाने के और —हिन्दी क०

o राम नाम जपना पराया माल अपना ,, ,,

o कल का जोगी पाव तक जटा ,, ,,

१३. ए हनी टग ए हर्ट ऑफ ग्रुअल अग्रेजी कहावत

—हाथ सुमरणी पेट कतरणी

१४. बुगला बोलत रीसकर, मच्छी छडो भीड,
कोल वचन कर कहत हूँ, दूर खडी रहो तीर।
दूर खडी रहो तीर, अलौकिक गति हमारी,
मत पाडो तन छाह, हम निश्चय ब्रह्मचारी।
दाखत ब्रह्मानन्द, अनोखी ढग से खोलत,
मच्छी छडो भीड, रीसकर बुगला बोलत ॥१॥

एक पग ठाडे रहत हूँ, मत को जीव दुखात,
किसी बखत पर कहत हू, ज्ञान-ध्यान की बात।
ज्ञान-ध्यान की वात, कहो किस आगे कहिये,
कोई सती भाव कर रखे, तो दो दिन रहिये।
दाखत ब्रह्मानन्द, इन्हो के मत है गाढे,
मत को जीव दुखात, रहत हूँ एक पग ठाडे ॥२॥

मच्छी भोली जाय के घर-घर दियो सुनाय,
अपने घर पर आय के, बैठो ध्यान लगाय।
बैठो ध्यान लगाय, चलो पूजन को जइये,
महासत के दर्श, देखकर निर्मल थइये।

दाखत ब्रह्मानन्द, नही पत्तर अरु झोली,
घर-घर दियो सुनाय, जायकर मच्छी भोली ॥३॥
मच्छी महातम जाण के, निकट गई दस-वार,
पग सू पकडी पाच को, चाच ग्रही दो-चार।
चाच ग्रही दो-चार, लग्यो अब लोक छलन कू,
बपडी करत बकोर, ध्यान तज लग्यो गलन कू।
दाखत ब्रह्मानन्द, ये लग गई अच्छी-अच्छी,
निकट गई दस-वार, महातम जाण के मच्छी ॥४॥
ऐसे साधु जगत मे, फिरते वेप वणाय,
उदर भरण के कारणे, लोकन कूं भरमाय।
लोकन कू भरमाय, न जाणे प्रभु की लेशा,
पर-धन पर-तिय काज, अहो निशि फिरत हमेशा।
दाखत ब्रह्मानन्द, कहो वे साधु कैसे ?
फिरते वेप वणाय, जगत मे साधु ऐसे ॥५॥

★

## २६ इकरंगे-दुरंगे भक्त

१. चैत्रे चढे नहि, वेशाखे उतरे नहि।
उन्हाले राता नहि, सियाले माता नहि।
उन्हाले सूका नहिं, चौमासे लीला नहि।

—गुजराती कहावत

२. सावरण साजा न मगल मादा।
सावरण सूका न भादवे हरचा।

—राजस्थानी कहावत

३. रग छे एक रगा ने, लानत छे दुरगा ने।

—गुजराती कहावत

४. पाणी तारो रग केवो ? जेमा मलु तेवो।
गोकुल मा गोकुलदास, मथुरा मा मथुरादास।

५. गगा गये गगादास, जमना गये जमनादास।

—हिन्दी कहावत

★

# प्रभु-भजन

## भजन की विधि

१. तृणादपि सुनीचेन, तरोरिव सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन, कीर्तनीयः सदा हरिः॥

—चैतन्य महाप्रभु

तृण से भी नीचा बनकर, वृक्षवत् सहनशील बनकर, निरभिमानी एवं सभी को सम्मान देनेवाला बनकर ही भक्त को भगवान का भजन करना चाहिये।

२. भजन निष्कपट होना चाहिए। कपट रखनेवाले व्यक्ति मुँह में नमक की डली रखनेवाली चींटी की तरह भजन रूप मिसरी का स्वाद नहीं पा सकते। एक चींटी कहीं जा रही थी। सामने दूसरी मिली। उसने मिसरी के पहाड़ पर जाने की सलाह दी। वह गई भी किन्तु मुँह मीठा न हुआ। फिर दोनों साथ गईं तो भी मिसरी का स्वाद नहीं मिला। आखिर मुँह खोलने से पता चला कि उसके मुँह में नमक की डली थी।

३. दादू दुनिया बावरी, कहे चाम को राम।
पूंछ मरोड़े बैल की, काढे अपना काम॥

—दादूजी

४ साच बिना सुमिरण नही, भय विन भक्ति न होय ।
पारस मे पडदा रहे, कचन किस विध होय ॥

५. सुमिरण सुरत लगाय कर, मुख से कछुय न वोल ।
वाहर के पट देयकर, अन्तर के पट खोल ॥

६ कबीर खुध्या कूकरी, करत भजन मे भग ।
या को टुकडा डालकर, सुमिरण करो निसग ॥

—कबीर

७ माला फेरत जुग गया, गया न मन का फेर ।
कर का मनका छाडि के, मन का मनका फेर ॥

—वावरी साहिव

८. राम नाम मनि दीप धर, हृदय देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहेरहु, जो चाहसि उजियार ॥

—तुलसीदास

९ राजा रणजीतसिह के यहा एक फकीर आया। शाम के भोजन के बाद उसने नमाज पढी । फिर राजा और फकीर आमने-सामने बैठकर माला फेरने लगे । राजा की माला का मनका हिन्दुक्रम के अनुसार भीतर की ओर घूमता था और फकीर का वाहर की ओर । राजा ने पूछा—कौनसी विधि ठीक हैं ? फकीर ने समन्वय करते हुए कहा—दोनों ही ठीक है । आपका मनका अन्तरात्मा में सद्गुणो का सचार करता है और मेरे वाला अन्तरात्मा मे से दुर्गुणो को बाहर निकालता है ।

१० नाम जो रत्ती एक है, पाप जो रत्ती हजार।
आध रत्ती घट सचरे, जारि करे सब छार।
—कबीर

११. जब हु नाम हिरदै धर्‌यो, भयो पाप को नाश।
मनु चिनगारी आग की, पडी पुराने घास॥
—अज्ञात

१२ नाम न जपहि सो आतमघाती।
—गुरुग्रन्थसाहिब महला-५

१३. नाम बिना कोर्ट मे केस नही होता, स्टेशन पर टिकट नही मिलती, तथा आपस मे बात-चीत नही हो सकती।

१४. एक विद्वान मुठ्ठी बन्द किए सभा मे उपस्थित हुआ। सभासदो ने पूछा—मुठ्ठी मे क्या है? किसी को हाथी-घोडा-ऊँट बताया तो किसी को गाय-भैस-गदहा। किसी को चाँद, सूरज, नक्षत्र बताया तो किसी को ब्रह्मा-विष्णु-महेश। विस्मित लोग न समझ सके। विद्वान ने मुठ्ठी खोली तो हथेली मे रग की टिकिया थी। तुरन्त उसे दवात मे रखकर पानी डाला। रग घुल गया एव कागज-कलम लेकर जो कुछ कहा था चित्र बना दिखाये।
इसी तरह भगवान के नन्हे-से नाम मे श्रद्धा का जल डालिए। फिर ज्ञान का कागज एव चारित्र की कलम लेकर अभीष्ट सुखो को प्राप्त कीजिए।

१५ वार्षिक ५० हजार री आमदनीवाला व्यक्ति, मासिक

४ साच विना सुमिरण नही, भय विन भक्ति न होय ।
पारस मे पडदा रहे, कचन किस विध होय ॥

५. सुमिरण सुरत लगाय कर, मुख से कछुय न वोल ।
वाहर के पट देयकर, अन्तर के पट खोल ॥

६ कबीर खुध्या कूकरी, करत भजन मे भग ।
या को टुकडा डालकर, सुमिरण करो निसग ॥

—कबीर

७ माला फेरत जुग गया, गया न मन का फेर ।
कर का मनका छाडि के, मन का मनका फेर ॥

—वावरी साहिब

८. राम नाम मनि दीप धर, हृदय देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहेरहु, जो चाहसि उजियार ॥

—तुलसीदास

९. राजा रणजीतसिह के यहा एक फकीर आया। शाम के भोजन के बाद उसने नमाज पढी। फिर राजा और फकीर आमने-सामने बैठकर माला फेरने लगे। राजा की माला का मनका हिन्दुक्रम के अनुसार भीतर की ओर घूमता था और फकीर का बाहर की ओर। राजा ने पूछा—कौनसी विधि ठीक है ? फकीर ने समन्वय करते हुए कहा—दोनो ही ठीक है। आपका मनका अन्तरात्मा मे सद्गुणो का सचार करता है और मेरे वाला अन्तरात्मा मे से दुर्गुणो को बाहर निकालता है।

४१।। सौ, दैनिक १४०, प्रति घटा ५।।। रुपये और प्रति मिनट १।। आना अन्दाज कमाता है। एक मिनट मे प्रभु के १५० नाम जपे जा सकते है। इस हिसाव से एक पैसे की कमाई जितने समय मे प्रभु के २५ नाम जप लिये जाते है। खेद है—व्यक्ति पैसे के लिये कितनी दौड-धूप करता है पर प्रभु-भजन के लिये कुछ भी नही।

१. जकारो जन्मविच्छेदः, पकारः पापनाशकः ।
तस्माज्जप इति प्रोक्तो, जन्मपापविनाशकः ॥
—अग्निपुराण

जकार जन्मों का छेदन करनेवाला है और पकार पाप का नाशक है। अतएव इन दोनों अक्षरों से बना हुआ "जप" जन्म और पापों का नाश करने वाला है।

२. जप के मुख्य तीन भेद माने गये हैं—मानस, उपांशु और भाष्य।

मानसजप वह है, जिसमें अर्थ का चिन्तन करते हुए मात्र मन से ही अक्षरों और पदों की आवृत्ति की जाती है। उपांशुजप में जीभ तथा होठ कुछ-कुछ हिलते हैं, लेकिन उसकी आवाज अपने कानों तक ही सीमित रहती है तथा भाष्यजप उच्च-स्वर से बोल-बोल कर किया जाता है। आचार्यों का कहना है कि भाष्यजप से उपांशुजप का सौगुना और मानसजप का हजार गुना फल है। साधकों को चाहिए कि क्रमशः अभ्यास बढ़ाते हुए मानसजप के अभ्यासी बनें।

३. जैन मुख्यतया नमस्कार महामन्त्र का जाप करते हैं। बौद्ध बुद्धं सरणं गच्छामि, धम्मं सरणं गच्छामि, संघं सरणं गच्छामि का जाप करते हैं। वैदिक ॐ, राम-राम, कृष्ण-कृष्ण, शिव-शिव आदि अनेक पदों का भजन

४१।। सौ, दैनिक १४०, प्रति घटा ५।।। रुपये और प्रति मिनट १।। आना अन्दाज कमाता है। एक मिनट मे प्रभु के १५० नाम जपे जा सकते है। इस हिसाब से एक पैसे की कमाई जितने समय मे प्रभु के २५ नाम जप लिये जाते है। खेद है—व्यक्ति पैसे के लिये कितनी दौड़-धूप करता है पर प्रभु-भजन के लिये कुछ भी नही।

# भजन विना जीवन सूना

१. गुल वही वेकार है, जिस गुल मे वू नहीं।
वो दिल भी तो वेकार है, जिस दिल मे तू नहीं।

—उर्दू

२. ससार की दूसरी सब चीजें मनुष्य के लिए हैं और मनुष्य का हृदय भगवान के लिए है।

३. भजन विन कूकर-सूकर जैसो।
जैसे घर विलाव के मूसा, रहत विषय वश ऐसो। ध्रुव।
वग-वगली और गीध-गीधनी, आय जन मिलियो तैसो;
उनहू के गृह सुत दारा है, उन्हे भेद कहो कैसा। भ० १।
जीव मारि के पेट भरत है, तिनको लेखो ऐसो।
सूरदास भगवान-भजन विन, मनो ऊट वृष भैसो॥
भजन विन कूकर - सूकर जैसो॥

—भक्त सूरदास

★

करते है। मुसलमान "अल्लाह्-अल्लाह्" कह्ते है। सिख लोग–"सतनाम वाहे गुरु" बोला करते है। पारसी लोग—"अषॅम् वोहू यथा अहू वइर्यो" का जाप करते है। मुसलमानों की माला (तसबीह्) मे १००, पारसी लोगो की माला मे १०१ तथा शेष सभी की मालाओं में १०८ मन के होते है।

—धर्मों की फुलवारी के आधार से

## ३१ ईश्वर की निन्दा भी

१ गन्धः सुवर्णे फलमिक्षुदण्डे,
नाकारि पुष्पं खलु चन्दनेषु।
विद्वान् धनाढ्यो न तु दीर्घजीवी,
धातुः पुरा कोऽपि न बुद्धिदोऽभूत्॥

—चाणक्य ९।३

सोने में सुगन्धि न भरी, इक्षु के फल और चन्दन में फूल नहीं बनाये तथा विद्वान् एवं धनवान को दीर्घायु नहीं बनाया। अतः समझना चाहिए कि विधाता को कोई बुद्धि देनेवाला था ही नहीं।

२. माखी माछर दुष्ट नर, जवो लिचडी जूं।
अ[illegible] न गई करतार री, इतरा मरज्या क्यूं?

३ ए विधि! भूल भई तुम तें,
समझे न कहां कसतूरि बनाई।
दीन कुरंगन के तन में,
तृन दन्त धरे, करुना नहिं आई।
क्यों न करी तिन जीभन जे,
रस काव्य करें पर को दुखदाई।
साधु-अनुग्रह दुर्जन-दण्ड,
दोऊ सधते बिसरी चतुराई॥

—भूधरदास

★

## ३० दुःख में प्रभु का स्मरण

१. दुःख मे सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय।
जो सुख मे सुमिरन करे, (तो) दुःख काहे को होय॥
—कबीर

२. डेन्जर पास्ट गॉड इज फॉरगॉटन —अंग्रेजी कहावत

दुःख मे रामा, सुख मे वामा।

३. ईश्वर कब याद आता है?

—विद्यार्थियो को परीक्षाफल निकलने के दिन,

—नौकर को नौकरी छूटने पर,

—धनी को बीमार होने पर,

—गरीब को भूख मे,

—चोर को पकडे जाने पर,

—पापी को मृत्यु के समय,

—राजनीतिज्ञो को चुनाव के समय।

—संकलित

# दूसरा कोष्ठक

## १ गुरु

### गुरु की व्याख्याएँ

१. गु-शब्दस्त्वन्धकार. स्याद्, रु-शब्दः प्रतिरोधक. ।
अन्धकारनिरोधित्वाद्, गुरुरित्यभिधीयते ॥

—अज्ञात

'गु' शब्द का अर्थ अन्धकार है और 'रु' शब्द का अर्थ रोकने वाला है। अज्ञानरूप अन्धकार को रोकनेवाला होने से गुरु 'गुरु' कहा जाता है।

२. गृणाति धर्मं शिष्य प्रति इति गुरु'। अथवा (गृ विज्ञापने शब्दे च) गारयते-विज्ञापयते रहस्य शिष्य प्रति इति 'गुरु'। —अज्ञात

जो शिष्यो को धर्म सिखाता है अथवा जो शिष्यो को तत्त्व का मर्म बताता है वह गुरु है।

३. सत्त्वेभ्य. सर्वशास्त्रार्थदेशको गुरुरुच्यते।

—कुमारपाल-प्रबन्ध

जो एकान्त हितबुद्धि से जीवो को सभी शास्त्रो का सच्चा अर्थ समझाता है, वह गुरु है।

४. सर्वशरीरस्य चैतन्यप्रापको गुरुरुपास्यः।

—निरालम्बोपनिषद्

समूचे शरीर मे व्याप्त चैतन्य को मिलानेवाला अर्थात् आत्म-ज्ञान देनेवाला गुरु उपासना करने योग्य है।

## २ गुरु-महिमा

१ गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वर.।
गुरुरेव परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नम·॥

गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है। गुरु देव है, गुरु महेश्वर है और गुरु ही परब्रह्म स्वरूप है, अतः गुरुदेव को नमस्कार है।

२. अज्ञानतिमिरान्धाना, ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलित येन, तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

—उपदेशतरङ्गिणी पृष्ठ २०७

अज्ञानरूप तिमिर अर्थात् नेत्र—रोग से अन्धे बने हुए व्यक्तियो की आखें जिसने ज्ञानरूप अञ्जनशलाका से खोल दी, उस गुरुदेव को मेरा नमस्कार है।

३. ध्यानमूल गुरोर्मूर्तिः, पूजामूल गुरो· पदम्।
मन्त्रमूल गुरोर्वाक्य, मोक्षमूल गुरोः कृपा॥

गुरु की मूर्ति ध्यान का मूल कारण है, गुरु के चरण पूजा के मूल कारण हैं। गुरु की वाणी जगत के समस्त मन्त्रो का मूल कारण है और गुरु की कृपा मोक्षप्राप्ति का मूल कारण है।

४ तिर्यक् समोऽपि पुरुषः सुगुरो· कृपात·,
सम्यक्त्वरत्नमनघं लभते चरित्रम्।
सर्वज्ञता च तरसा ह्यजरामरत्व,
किं वर्णयामि सुगुरो· करुणामहत्त्व।

—प्रास्ताविक श्लोक शतक १०

१२. गुरु गोविन्द दोनो खडे, किसके लागूं पाय।
बलिहारी गुरुदेव की, गोविन्द दिया बताय॥
सब धरती कागद करू, लेखनि सब वनराय।
सात समुद्र की मसि करू, गुरु गुन लिखा न जाय

१३. गुरु कुम्हार शिष्य कुम्भ है, घड-घड काढै खोट।
अन्तर हाथ सहार दै, बाहर वाहै चोट॥

—कबीर

१४. गुरु कुलाल शिष्य कुंभ सो, घड़ काढे सब खोट,
यत्न करे माही सदा, ऊपर वाहे चोट।
ऊपर बाहे चोट, खोट कोई रहण न पावै,
बाक-बुराई काढ़, शुद्ध कर वस्तु निपावै।
ब्रह्म आग पाका करे, दे कुबुध बलीता पोट,
गुरु कुलाल शिष्य कुंभ सो, घड़ काढे सब खोट॥

१५. 'कबीर' ते नर अंध है, गुरु को कहते और,
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर।
यह तन विष की बेलड़ी, गुरु अमृत की खान,
सीस दिये जो गुरु मिले, तौ भी सस्ता जान।
'कबीरा' सोया क्या करे, जागन की कर चौप,
ये दम हीरा-लाल है, गिन-गिन गुरु को सौंप।

—कबीर

☆

निकलता। नवजात शिशुओ मे बोलने-चलने की शक्ति मौजूद है पर माता-पिता की सहायता के विना वे बोलना-चलना नही सीख पाते तथा विजली सब तारो मे विद्यमान है, फिर भी लट्टू (बल्व) के बिना प्रकाश नही होता। ऐसे ही आत्मा मे ज्ञान होने पर भी गुरु-कृपा के विना उसका विकास नही होता।

७ रूख डार फल लग्यो, पोखता अतर पावत,
पड टूट जल पेख, गरे फुन काम न आवत।
नदी तीर पर वाह, मिल्यो सागर सू फरसै,
आतुर ह्वै जल जुदो, वहे फुन बूद न दरसै।
ज्यो तज नौका भीख जन, डूवत पार न पाइए,
तैसे गुरु तज प्रभु भजै, तो निश्चय मोक्ष न पाइए॥

६. शास्त्र दवाखाना है और गुरु वैद्य है। जैसा रोग देखते है वैसा ही शास्त्र निचोड़कर दवा देते है, वहा तर्क मत करो। डाक्टर से रोगी तर्क नही किया करता। जैसे डाक्टर रोगियो को नीरोग बनाना चाहता है, अध्यापक छात्रो को विद्वान् बनाना चाहता है, गार्ड गाडी को सकुशल स्टेशन पहुँचाना चाहता है और नाविक नाव को नदी—समुद्र के किनारे लगाना चाहता है, वैसे ही गुरु की भावना भी शिष्यो का कल्याण जल्दी से जल्दी हो—यही रहती है।

७. न उ सच्छदता सेया, लोए किमुत उत्तरे।

—व्यवहारभाष्य पीठिका ८६

स्वच्छदता लौकिक जीवन मे भी हितकर नही है, तो लोकोत्तर जीवन (साधक जीवन) मे कैसे हितकर हो सकती है ?

८. सिपाही कमाण्डर की आज्ञा मे रहते है, अधे लाठी पकड़नेवालो के पीछे चलते है, कोर्ट का काम वकीलो की इच्छानुसार किया जाता है, छोटी घडियाँ घटाघर का अनुसरण करती हैं हाथी-घोड़े-ऊँट-बैल हांकनेवाले का कहना मानते है, बच्चे मा-बाप या अध्यापक की आधीनता स्वीकार करते हैं, रोगी डाक्टरो की आज्ञा का पालन करते है तथा पानी जिस रगवाले बर्तन में डाला जाता है उसी रग का दीखने लगता है, इसी तरह हमे भी सद्गुरुओ की मर्जी के अनुसार चलना चाहिये एवं स्वच्छन्दता का परित्याग करके आत्मा का उद्धार करना चाहिये।

९ छद निरोहेरण उवेइ मोक्ख । —उत्तराध्ययन ४।८

इच्छाओ को रोकने से ही मोक्ष प्राप्त होता है ।

० गुर्वाज्ञाकरण हि सर्वगुणेभ्योऽतिरिच्यते ।

—त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र १।८

गुरु-आज्ञा का पालन करना सव गुणो से वढकर है ।

१. डू ऐज ए फ्राइर सेज, वट नाट ऐज ही डज ।

—अग्रेजी कहावत

गुरु के कथन पर चल किन्तु चाल पर न चल ।

२ य पृष्ट्वा कुरुते कार्य, प्रष्ठव्यान् स्व-हितान् गुरून्,
न तस्य जायते विघ्न कस्मिश्चिदपि कर्मणि ॥

—पचतन्त्र ४।६४

जो मनुष्य पूछने योग्य एव अपने हितकारी गुरुओ को पूछकर काम करता है उसके किसी भी कार्य मे विघ्न नही होता ।

## ६ गुरु के ३६ गुण

१. पंचिदियसवरणो, तह नवविहबभचेरगुत्तिधरो।
चउविहकसायमुक्को, इह अट्ठारसगुणेहिं सजुत्तो ॥
पचमहव्वयजुत्तो, पचविहायारपालणसमत्थो।
पचसमिइतिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरुमज्झ ॥

—सामायिक सूत्र, पृष्ठ १८२

पाच इन्द्रियो को जीतनेवाले, नवबाड सहित ब्रह्मचर्य को पालनेवाले, चार कषाय को टालनेवाले, पाच महाव्रतो को धारण करनेवाले, पाच आचार को पालनेवाले, पाच समिति एव तीन गुप्तियो से युक्त—ऐसे छत्तीस गुणोवाले महान् आत्मा मेरे गुरु हैं।

२. गगन को तोल करे, पवन को मोल करे,
रवि को हिंडोल करे, ऐसा कोऊ नर है।
पत्थर का काते सूत, बाझ के खिलावे पूत,
घट मे बुलावै भूत, बाको कुण घर है।
बिजली सो करे व्याह, धुंए को चलावे राह,
सिकता को कुभ करि तामे नीर भर है।
दिवस वड़ो के रात, ताको कुण मात-तात,
ऐसी जो वतावे वात वो ही मेरे गुर है।

★

## ७ सुयोग्य-आचार्य

१ मेढी आलबण खभ, दिट्ठी जाण सुउत्तम ।
सूरि ज होइ गच्छस्स, तम्हा त तु परिक्खए ॥
—गच्छाचार० ८

आचार्य गच्छ का मेढी है, आलम्बन है, स्तम्भ है और निश्छिद्र वाहन है अत उसकी परीक्षा करनी ही चाहिये ।

२ आचार ग्राहयत्याचिनोत्यर्थान् आचिनोति बुद्धिमिति वा ।
—निरुक्त अ० १ ख० ४।१२

जो दूसरो को आचारवान बनाता है, शास्त्रो के वास्तविक अर्थों का अनुशीलन करता है तथा आचार व शास्त्रशिक्षा द्वारा बुद्धि को परिमार्जित करता है, वह आचार्य कहलाता है ।

३. राग-द्दोस-विमुक्को, सीयघरसमो य आयरियो ।
—निशीथ-भाष्य २७९४

राग-द्वेष से रहित आचार्य शीतगृह (सब ऋतुओ मे एक समान सुखप्रद)—चक्रवर्ती के भवन के समान है ।

४ दसणणाणप्पहाणे, वीरियचारित्तवरतवायारे ।
अप्प पर च जु जई, सो आयरिओ मुणीझेओ ।
—प्रवचन० द्वार ७२

जो दर्शन एव ज्ञान से प्रधान-श्रेष्ठ है, वीर्य, चारित्र व तप से युक्त है तथा जो स्व-पर को सन्मार्ग मे लगाता है वह आचार्य मुनियो द्वारा आराधना करने योग्य है ।

५ अट्ठविहा गणिसपया पण्णत्ता, त जहा-(१) आयारसपया (२) सुयसपया (३) सरीरसपया (४) वयणसपया (५) वायणसपया (६) मइसपया (७) पओगसपया (८) सगहपइन्नासपया ।
—दशाश्रुतस्कन्ध दशा ४

• आचार्य की आठ सपदाएँ बतायी गयी हैं—

(१) **आचारसपदा—**

आचार सपदायुक्त आचार्य, शुद्ध चारित्रवान, अहकार-रहित अप्रतिबद्धविहारी एव कम उम्र मे भी वृद्धो के जैसा स्वभाव वाला होता है ।

(२) **श्रुतसपदा—**

श्रुतसपदायुक्त आचार्य वहुश्रुत, पढ़े हुये शास्त्रो को सहज मे नही भूलनेवाला, स्वसमय-परसमय का ज्ञाता और शुद्ध उच्चारण करनेवाला होता है ।

(३) **शरीरसपदा—**

शरीरसपदायुक्त आचार्य प्रमाणोपेत शरीरवाला लज्जास्पद शरीर रहित, स्थिर सहनन और प्रायः प्रतिपूर्ण इन्द्रियवाला होता है ।

(४) **वचनसंपदा—**

वचनसपदायुक्त आचार्य आदेय-ग्रहण करने योग्य वचन-वाला, मधुर वचनवाला, राग-द्वेप के अनिश्रित वचन वोलनेवाला और सदेह रहित वचन बोलनेवाला होता है ।

(५) **वाचनासपदा—**

वाचनासपदायुक्त आचार्य शिष्यो की योग्यता के अनुसार पाठ्यक्रम निश्चित करनेवाला होता है । निश्चित पाठ पढाने मे योग्य होता है । जिस शिष्य को जितना उपयुक्त हो उतना ही पढानेवाला होता है । जिससे शिष्यो का

ज्ञान विस्तृत हो सके—ऐसी पढाने की कला से युक्त होता है।

(६) **मतिसंपदा—**

मतिसपदायुक्त आचार्य अवग्रहादि मति—बुद्धि से सपन्न होता है। उसकी मेधा बहुत ही तेज एव अद्‌भुत होती है।

(७) **प्रयोगसपदा—**

प्रयोगसपदायुक्त आचार्य बहुत ही अवसरज्ञ होता है अर्थात् वह चर्चा-बात करते समय अपनी शक्ति, सभा, क्षेत्र एव विवाद करनेवाले व्यक्ति की योग्यता देखकर ही वाद-विवाद करता है।

(८) **सग्रहपरिज्ञासम्पदा—**

उक्तसपदायुक्त आचार्य का कर्तव्य है कि वह अपने साधु-साध्वियो के लिये चातुर्मास के योग्य क्षेत्र का निरीक्षण करे। पाडिहार-पीठ-फलक एव शय्या-सथारो का ग्रहण करे। उपकरणोत्पादन, स्वाध्याय, ध्यान, भिक्षाटन, धर्मोपदेश और सेवा आदि कार्य यथासमय करे अर्थात् समय का पूरा पाबन्द हो तथा दीक्षागुरु, विद्यागुरु एव रत्नाधिक मुनियो की यथाविधि पूजा-सेवा करे।

६ तिवासपरियाए समणे निग्गथे तीसवासपरियाए समणीए निग्गथीए कप्पइ उवज्झायत्ताए उद्दिसित्तए पचवासपरियाए समणे निग्गथे सट्ठिवासपरियाए समणीए निग्गथीए कप्पइ आयरियत्ताए उद्दिसित्तए।

—व्यवहार सूत्र ७।१९-२०

• तीन वर्ष का दीक्षित साधु एव तीस वर्ष की दीक्षित साध्वी को उपाध्याय पद देना कल्पता है तथा पाच वर्ष का दीक्षित साधु एव साठ वर्ष की दीक्षित साध्वी को आचार्य पद देना कल्पता है। (साध्वी को आचार्यपदयोग्य साधु के अभाव मे दिया जाता है।)

७. छहिं ठाणेहिं अणगारे अरिहइ गण धारित्तए त जहा—सड्ढी-पुरिसजाए, सच्चे-पुरिसजाए, मेहावि-पुरिसजाए, बहुसुए-पुरिसजाए, सत्तिम, अप्पाधिकरणे।

—**स्थानांग ६।४७५**

छ स्थान युक्त मुनि गण को धारण कर सकता है—(१) जो श्रद्धावान हो, (२) सभी तरह से सच्चा हो, (३) मेधावी—शिष्यो को पढाने मे समर्थ हो, (४) बहुश्रुत हो, (५) शक्तिमान्—अर्थात् आपत्तिकाल मे घबरानेवाला न हो, (६) कलह करनेवाला न हो—शान्त हो।

८. कम्माण निज्जरट्ठाए, एव खु गणो भवे धरेयव्वो।

—**व्यवहार भाष्य ३।८५**

कर्मों की निर्जरा के लिए (आत्मशुद्धि के लिए) ही आचार्य को सघ का नेतृत्व सभालना चाहिए।

# ८ आचार्य का शिष्य के प्रति कर्तव्य

१. आयरियो अतेवासी इमाए चउव्विहाए विणयपडिवत्तीए विणइत्ता भवइ, निरणत्त गच्छइ तजहा—आयारविणएण, सुयविणएण, विक्खेवणाविणएण, दोसनिग्घायविणएण।

—दशाश्रुतस्कध ४

आचार्य अपने शिष्य को निम्नलिखित चार प्रकार का विनय सिखाने से उऋण हो जाता है।

(१) आचारविनय (२) श्रुतविनय
(२) विक्षेपणाविनय (४) दोषनिर्घातना विनय

(१) **आचारविनय की शिक्षा मे**—शिष्यो को १७ प्रकार के सयम मे सुदृढ रखना, १२ प्रकार की तपस्या मे प्रोत्साहित करना, गणस्थित बाल-वृद्ध एव रोगी साधुओ की उचित व्यवस्था करना, सारणा-वारणा द्वारा गण को सुरक्षित रखना तथा योग्य शिष्यो को एकाकीविहार मे उत्साहित करना—ये बातें सिखायी जाती हैं।

(२) **श्रुतविनय की शिक्षा मे**—आचार्य अपने शिष्यो को सूत्र, अर्थ एव हित (अर्थात् जिसको जो श्रुत पढाने से विशेष हित हो, उसे वही) पढाते हैं तथा नि शेष वाचना देते हैं यानी प्रमाण, नय, निक्षेप, उपोद्घात, हेतु और अवयवो द्वारा तत्त्व को समझाते हैं एव साथ-साथ सधि, पदच्छेद, पदार्थ पदविग्रह, शङ्कासमाधान आदि बतलाते हैं।

(३) **विक्षेपणाविनय की शिक्षा मे**—आचार्य अपने शिष्य को चार बातें सिखाते हैं—मिथ्यादृष्टि को सम्यग्दृष्टि बनाना, सम्यग्दृष्टि को साधु बनाना, सम्यक् चारित्र से च्युत व्यक्ति को पुन स्थिर करना, और अनेषणीय वस्तु का त्याग करना।

(४) **दोषनिर्घातनाविनय की शिक्षा मे**—आचार्य अपने शिष्य को ये चार बाते सिखाते हैं—क्रोधी का क्रोध शान्त करना, दोषी के दोष को दूर करना, शका-काक्षा मिटाना एव स्वय पूर्वोक्त दोषो से दूर रहकर समाधि मे वरतना।

## ९ शिष्यों को आचार्य का उपदेश

१. सत्य वद ! धर्मं चर ! स्वाध्यायान्मा प्रमद !....
सत्यान्न प्रमदितव्यम्, धर्मान्न प्रमदितव्यम्,
कुशलान्न प्रमदितव्यम्, भूत्यै न प्रमदितव्यम्,
स्वाध्याय-प्रवचनाभ्या न प्रमदितव्यम्,
देव-पितृ कार्याभ्या न प्रमदितव्यम् ! मातृदेवो भव !
पितृदेवो भव ! आचार्यदेवो भव ! अतिथिदेवो भव !
यान्यनवद्यानि कार्याणि तानि सेवितव्यानि, नो
इतराणि । यान्यस्माक सुचरितानि तानि
त्वयोपास्यानि, नो इतराणि ।

—तैत्तिरीय-उपनिषद् १।११

प्रिय स्नातक वर्ग ! सत्य बोलो ! धर्म का पालन करो ! स्वाध्याय से मुह न मोडो ! सत्य, धर्म, आत्म-कल्याण तथा समृद्धि के मार्ग से विचलित मत होना, उसमे प्रमाद मत करना। स्वाध्याय तथा प्रवचन द्वारा ज्ञान की वृद्धि एव विद्या का प्रचार करते रहना। देवो और पितरो के प्रति अपने कर्तव्य का सदा ध्यान रखना। माता-पिता-गुरु तथा अतिथियो मे पूज्य बुद्धि रखना। जो श्रेष्ठ कर्म है उन्ही का सेवन करना, निकृष्टो का नहीं। हमारे जो अच्छे आचरण हैं उन्ही का अनुसरण करना, दूसरो का नही ।

२ सीखो ! विद्यासार, पकड़ो कर परमाद ने।
बधसी बहु विस्तार, धार ! शीघ्र धीरज मने ॥
शिशुमुनिवर ! सुविशेष, क्रिया नित निर्मल करो।
रत्न न चूको रेख, देख-देख पगला धरो ॥

—श्रीकालूगणि

## १० आचार्यों के प्रकार

१ चत्तारि आयरिया पण्णत्ता त जहा-आमलगमहुरफल-समाणे, मुद्दियामहुरफलसमाणे, खीरमहुरफलसमाणे, खडमहुरफलसमाणे ।

—स्थानागसूत्र ४।३।३२०

चार प्रकार के आचार्य कहे हैं—

(१) आवले के मीठे फल समान (२) द्राक्षा के मीठे फल समान (३) खीर के समान (४) इक्षु खड के समान ।

ये आचार्य उपशमादि गुणो मे क्रमशः एक-एक से उत्कृष्ट होते हैं ।

२ चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, त जहा-सोवाग करण्डसमाणे, वेसियाकरण्डसमाणे गाहावइकरण्डसमाणे, रायकरण्ड-समाणे।

—स्थानाग सूत्र ४।४।३४८

चार प्रकार के आचार्य कहे हैं—

(१) चण्डालकरण्ड समान (२) वेश्याकरण्ड समान

(३) गृहपतिकरण्ड समान (४) राजकरण्ड समान ।

(१) पट्प्रज्ञक गाथादिरूप सूत्रधारी एव विशिष्ट-क्रियाहीन आचार्य **चण्डाल के करण्डतुल्य** है ।

(२) ज्ञान अधिक न होने पर भी वाग्आडम्बर से मुग्ध जनो को प्रभावित करनेवाला आचार्य **वेश्या के करण्डतुल्य है।**

(३) स्वसमय-परसमय का जानकार एव क्रियादि गुणयुक्त आचार्य **गृहपति के करण्डतुल्य है।**

(४) जो समस्त गुणो से युक्त एव तीर्थंकर देव समान हो वह, राजा के करण्डतुल्य है।

३. चत्तारि आयरिया पण्णत्ता, त जहा-सालेणाममेगे साल-परिवारे, सालेणाममेगे एरडपरिवारे, एरडेणाममेगे सालपरिवारे, एरडेणाममेगे एरडपरिवारे।

—स्थानागसूत्र ४।४।३४६

चार प्रकार के आचार्य कहे हैं, तद्यथा—

(१) एक-एक सालवृक्षवत् उत्तमश्रुतादि युक्त है और उनका शिष्यादिरूप परिवार भी तद्वत् श्रेष्ठ है।

(२) एक-एक स्वय सालवृक्षवत् है, किन्तु उनका परिवार एरण्डवृक्षवत् है अर्थात् श्रुतादिहीन हैं।

(३) एक-एक स्वय एरण्डवत् है, किन्तु उनका परिवार साल-वृक्षवत् है।

(४) एक-एक स्वय एरण्डवत् है एव उनका परिवार भी एरण्डवत् है।

४. तओ आयरिया पण्णत्ता त जहा-कलायरिए, सिप्पायरिए धम्मायरिए। —राजप्रश्नीय सूत्र

आचार्य तीन प्रकार के कहे है :—

कलाचार्य, शिल्पाचार्य, और धर्माचार्य।

१

# अयोग्य आचार्य

१ तित्थयरसमो सूरी, सम्म जो जिणमय पयासेई ।
आणु अइक्कमन्तो, सो कापुरिसो न सप्पुरिसो ।।

—गच्छाचार० २७

जो जिनमार्ग को सम्यक् प्रकार से प्रकाशित करता है, वह आचार्य तीर्थंकरतुल्य है। जो तीर्थंकरो की आज्ञा का उल्लघन करता है वह कापुरुष है, सत्पुरुष नही ।

२ भट्ठायारो सूरी, अट्ठायाराणुविक्खओ सूरी ।
उम्मगट्ठिओ सूरी, तिन्निवि मग्ग पणासन्ति ।।

—गच्छाचार० २८

भ्रष्टाचारी आचार्य, भ्रष्टाचारी साधुओ की उपेक्षा करनेवाला आचार्य और उन्मार्गस्थित आचार्य—ये तीनो ही ज्ञानादि मोक्षमार्ग का नाश करनेवाले हैं ।

३. स किं गुरु पिता सुहृद्वा योऽभ्यसूययाऽर्भं बहुदोष,
बहुषु वा प्रकाशयति न शिक्षयति च ।।

—नीतिवाक्यामृत ११।५३

वे गुरु, पिता व मित्र निंदनीय या शत्रु सदृश हैं जो ईर्ष्यावश अपने बहुदोषी शिष्य, पुत्र व मित्र के दोष दूसरो के समक्ष प्रकट करते हैं और उसे नैतिक शिक्षण नही देते ।

४. सगहोवग्गह विहिणा, न करेइ य जो गणी।
समण समणी तु दिक्खित्ता, समायारी न गाहए॥
बालाण जो उ सीसाण, जीहाए उवलिंपए।
त सम्ममग्ग न गाहेइ, सो सूरी जाण वेरिउ॥

—गच्छाचार० २।१५-१६

जो आचार्य आगमोक्तविधिपूर्वक शिष्यो के लिये सग्रह (वस्त्र, पात्र, क्षेत्र आदि का) और उपग्रह (ज्ञानदान आदि) नही करता तथा दीक्षा देकर साधु-साध्वियो को साधुसमाचारी नही सिखाता एव बालक शिष्यो को सन्मार्ग मे प्रेरित न करके मात्र गाय-बछडे की तरह उनका चुम्बन करता है, उनसे प्रेम करता है, वह आचार्य शिष्यो का शत्रु है।

५. आचार्यस्यैव तज्जाड्य, यच्छिष्योनावबुध्यते।
गावो गोपालकेनैव, कुतीर्थेनावतारिताः॥

—अन्ययोग० ५

यदि शिष्य को ज्ञान नही होता तो वह आचार्य—गुरु की ही जडता है, क्योकि गायो को कुघाट मे उतारनेवाला वस्तुत गोपाल ही है।

६ जहिं णत्थि सारणा वारणा य पडिचोयणा य गच्छम्मि।
सो उ अगच्छो गच्छो, सजमकामीण मोत्तव्वो॥

—बृह० भाष्य ४४६४

जिस सघ मे न सारणा है, न वारणा है और न पडिचोयणा है, वह सघ सघ नही है, अत सयम के आकाक्षी को उसे छोड देना चाहिए।

.७ एक सन्यासी बाग मे ठहरा हुआ था। वहा किसी ने वृक्ष के फल तोड लिये। माली सन्यासी को पीटने लगा। वह शान्त रहा। सन्यासी के दर्शनार्थ देवता आये। इधर सन्यासी के शिष्यो को जब पता लगा तो वे माली से लडने-झगडने लगे। यह दृश्य देखकर देवता वापिस जाने लगे। कारण पूछने पर देवो ने बताया—आपके शिष्यो का क्रोध देखकर आपके प्रति हमारी श्रद्धा मे कमी आयी हैं, अत वापिस जा रहे हैं।

.८ लपट गुरु ने विधवा चेली से आत्म-समर्पण करने के लिए कहा। उत्तर मिला—कान-नेत्र आदि पवित्र अङ्ग अर्पण कर ही रखे है। किन्तु मल-मूत्र युक्त अपवित्र स्थान पवित्र गुरु को कैसे दूँ? ऐसे गुरु का मुँह काला करके झाड़ू से सत्कार करना चाहिए।

★

# १२ गुरु-भक्ति की विधि

१. अणाबाहसुहाभिकखी, गुरुप्पसायाभिमुहो रमिज्जा ।

—दशवैकालिक ६।१।१०

अनाबाध—मुक्तिसुखाभिलाषी शिष्य को गुरु की प्रसन्नता के लिये सदा प्रयत्न करना चाहिये ।

२. पितरमिव गुरुमुपचरेत् । —नीतिवाक्यामृत ११।२४

शिष्य गुरु के साथ पिता के समान व्यवहार करे ।

३. जहाहियग्गि जलण नमसे, नाणाहुई-मत-पयाभिसित्त ।
एवायरिय उवचिट्ठएज्जा, अणतनाणोवगओऽविसतो ।

—दशवैकालिक ६।१।११

जैसे अग्निहोत्री ब्राह्मण मधु-घृत आदि की विविध आहुतियो से एव मत्रो से अभिषिक्त अग्नि को नमस्कार आदि से पूजा करता है, ठीक उसी प्रकार अनन्त ज्ञान सम्पन्न हो जाने पर भी शिष्य को गुरु की उपासना करनी चाहिये ।

४. प्रज्ञयातिशयानो न गुरुमवज्ञायेत ।

—नीतिवाक्यामृत ११।२०

अधिक प्रज्ञावान् होने पर भी शिष्य गुरु की अवज्ञा न करे ।

५. जस्सतिए धम्मपयाइ सिक्खे,
तस्सतिए वेणइय पउ जे ।

सक्कारए सिरसा पंजलीओ,
कायग्गिरा भो मणसा य निच्च ।

—दशवैकालिक ९।१।१२

जिस गुरु से आत्मविकासी धर्मशास्त्रों के गूढ तत्त्वों की शिक्षा ले, उसकी पूर्ण रूप से विनय-भक्ति करे अर्थात् हाथ जोडकर सिर से नमस्कार करे और मन-वचन-काय से सदा यथोचित सत्कार करे ।

६ न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
न जुंजे उरुणा उरुं, सयणे नो पडिस्सुणे ॥

—उत्तराध्ययन १।१८

आचार्यों के साथ पासे से पासा जोडकर न बैठे, आगे न बैठे, पीठ करके न बैठे, उनके घुटने से घुटना जोडकर न बैठे तथा शय्या पर बैठा हुआ ही उनकी वाणी को न सुने ।

७. आयरियेहिं वाहित्तो, तुसिणीओ न कयाइवि ।

—उत्तराध्ययन १।२०

आचार्यों द्वारा बुलाने पर शिष्य कदापि मौन—चुपचाप न रहे ।

८. आलवंते लवंते वा, न निसीएज्ज कयाइवि,
चइऊणमासणं धीरो, जओ जत्तं पडिस्सुणे ।

—उत्तराध्ययन १।२१

गुरु के द्वारा एक वार या वार-वार बुलाने पर कदापि बैठा न रहे, किन्तु बुद्धिमान् शिष्य आसन को छोडकर यत्नपूर्वक गुरुवाणी को सुने ।

९. आसणगओ न पुच्छेज्जा, नेव सेज्जागओ कया ।
आगम्मुक्कुडुओ संतो, पुच्छिज्जा पंजलीउडो ॥

—उत्तराध्ययन १।२२

आसन पर या शय्या पर बैठा हुआ गुरु से प्रश्न न पूछे; किन्तु आसन से उठकर उत्कटिकासन करता हुआ हाथ जोडकर (सूत्रादि-अर्थ) पूछे।

१०. सदिहानोगुरुमकोपयन्नापृच्छेत् ।

—नीतिवाक्यामृत ११।१५

सन्देह होने पर शिष्य इस प्रकार से पूछे कि, गुरु कुपित न हो।

११. मणोगय वक्कगय, जाणित्तायरियस्स उ ।
त परिगिज्झ वायाए, कम्मुणा उववायए ।।

—उत्तराध्ययन १।४३

आचार्य के मन-वचन-काय के भावो को समझकर उन्हे वचन द्वारा स्वीकार करके उनका शरीर द्वारा निष्पादन करे।

१२. तद्दिट्ठीए, तम्मुत्तीए, तत्पुरक्कारे, तस्सन्नी, तन्निवेसणे।

—आचारांग ५।४

विनीत शिष्य को चाहिये कि वह गुरु की दृष्टि के अनुसार चले। उनकी निस्सगता का अनुसरण करे। उन्हे हर बात मे आगे रखे, उनमे श्रद्धा रखे और उनके पास रहे।

१३. राइणियस्स भासमाणस्स वा वियागरेमाणस्स वा नो अतरा भासं भासिज्जा।

—आचारांग २।३।३

अपने से बडे गुरुजन जब बोलते हो, विचार-चर्चा करते हो, तो उनके बीच मे न बोले।

१४. जे आयरिय - उवज्झायाण सुस्सूसा वयणकरा।
तेसिं सिक्खा पवड्ढति, जलसित्ता इव पायवा ।।

—दशवैकालिक ९।२।१२

जो आचार्य—उपाध्यायो की शुश्रूषा—सेवा करते है, उनके वचनो को मानते है, उनकी शिक्षा—(ज्ञान) जल से सीचे हुए वृक्ष की तरह क्रमश बढती ही जाती है।

१५. आयरिय कुविय नच्चा, पत्तिएण पसायए।
विज्झवेज्ज पजलिउडो, वएज्ज न पुणो त्तिय।

—उत्तराध्ययन १।४१

कदाचित् आचार्य कुपित हो जाय तो शिष्य उन्हे प्रतीतिकारी वचनो के द्वारा प्रसन्न करे एव हाथ जोड़कर "फिर ऐसा काम कभी न करूगा।' ऐसे कहकर उनकी क्रोधाग्नि को बुझावे।

१६. नीय सिज्ज गइ ठाण, नीय च असणाणि य।
नीय च पाए वदिज्जा, नीय कुज्जा य अजलिं॥
सघट्टइत्ता काएण, तहा उवहिणामवि।
खमेह अवराह मे, वइज्ज न पुणो त्ति य॥

—दशवैकालिक ६।२।१७-१८

शिष्य को अपनी शय्या, गति, स्थान और आसन—ये सब गुरु से नीचे रखने चाहिये तथा नम्र होकर एव दोनो हाथ जोडकर गुरु के चरणो मे वन्दना करनी चाहिये। असावधानी से यदि गुरु के शरीर या उपकरणो का सघट्टा हो जाय तो शिष्य को नम्रता से कहना चाहिए कि—हे भगवन्! मेरे इस अपराध को क्षमा करे! फिर कभी ऐसा नही होगा।

१७. हीनान्नवस्त्रवेष स्यात्, सर्वदा गुरुसन्निधौ।
उत्तिष्ठेत्प्रथम चास्य, चरम चैव सविशेत्॥

—मनुस्मृति २।१६४

शिष्य गुरु के सामने सदा सामान्य अन्न-वस्त्र और वेश से रहे और गुरु से पहले उठे और पीछे सोवे।

१८. प्रतिश्रवणसभाषे, शयानो न समाचरेत् ।
नासीनो न च भुञ्जानो न, तिष्ठन्न पराङ् मुखः ।
—मनुस्मृति २।१९५

गुरु की आज्ञा का स्वीकार और उनसे वार्तालाप ये—सोता, बैठा, भोजन करता, खडा और मुँह फेरे हुए नही करे ।

१९. नीच शय्यासन चास्य, सर्वदा गुरुसन्निधौ ।
गुरोस्तु चक्षुर्विषये, न यथेष्टासनो भवेत् ॥
—मनुस्मृति ·।१९८

गुरु के समीप शिष्य का पलग और आसन सदा नीचे रहे और गुरु की आँखो के सामने वह मनमाने आसन से न बैठे ।

२०. ब्रह्मारम्भेऽवसाने च, पादौ ग्राह्यौ गुरोः सदा ।
—मनुस्मृति २।७१

वेद—ज्ञान पढने के आरम्भ मे और अन्त मे सदा गुरु के चरण छूने चाहिये ।

२१. अभिवादनशीलस्य, नित्य वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते, आयुर्विद्या यशो बलम् ॥
—मनुस्मृति २।१२१

जिसका प्रणाम करने का स्वभाव है और जो नित्य वृद्धो की सेवा करता है उसकी आयु, विद्या, यश और बल—ये चारो सदा बढते रहते हैं ।

२२. नोदाहरेदस्य नाम, परोक्षमपि केवलम् ।
—मनुस्मृति २।१९९

शिष्य को गुरु के पीठ पीछे भी उनका खाली नाम नही लेना चाहिए ।

• २३ गुरोर्यत्र परीवादो, निन्दा वापि प्रवर्त्तते।
कर्णौ तत्र पिधातव्यौ, गन्तव्य वा ततोऽन्यत ॥
—मनुस्मृति २।२००

जहा गुरु की बुराई अथवा निन्दा होती हो वहाँ कानो को बद कर लेना चाहिये या वहाँ से और जगह चला जाना चाहिये।

२४ गुरु का द्रोही हर का द्रोही, ता का सग करो मत कोई।
ता के सग अवज्ञा आवे, भक्तिहीरा हो नरका जावे॥

• २५ एकाक्षरप्रदातार, यो गुरु नाभिवन्दते।
श्वानयोनिशत भुक्त्वा, चाण्डालेष्वभिजायते॥
—चाणक्य० १३।१९

जो एक अक्षर भी ज्ञान देनेवाले गुरु को वन्दना नही करता, वह कुत्ते की सौ योनियाँ भोगकर चाण्डालो मे जन्म लेता है।

# १३ विनीत शिष्य

१. हिरिम पडिसलीणे, सुविणीए —उत्तराध्ययन ११।१३

लज्जाशील और इन्द्रियो का दमन करनेवाला (शिष्य) सुविनीत होता है ।

२. आणानिद्द`सकरे, गुरुणमुववायकारए ।
इगियागारसपन्ने से विणीए त्ति वुच्चई ।।

—उत्तराध्ययन १।२

गुरुआज्ञा को शिरोधार्य करनेवाला, गुरु के समीप बैठनेवाला और गुरु के इगित-आकार को समझकर काम करनेवाला शिष्य विनीत कहलाता है ।

३. यः पूज्य-गुणदर्शी च, स शिष्योऽन्वर्थक. खलु ।

जो गुरु के गुणो को देखता है वास्तव मे वही सच्चा शिष्य है ।

४. शिष्यो हि को ? यो गुरुभक्त एव । —शकर प्रश्नोत्तरी ७

शिष्य कौन ? वही जो गुरुभक्त हो ।

५. स्वामी दयानन्द ने एक दिन कूड़ा-करकट निकाला और टोकरी मे डाला । सयोगवश उनके गुरु आये, आंखो से कम दीखता था, टोकरी के ठोकर लगी । वे क्रोधित हो उठे, शिष्य दयानन्द को खूब पीटा, खून आने लगा । दयानन्द शान्त बने रहे । अपराध के लिये गुरु से क्षमा मागी । प्रसन्न होकर गुरु ने आशीर्वाद दिया । दयानन्द

की पीठ पर पीट की निशानी जीवन भर बनी रही। पूछने पर स्वामीजी कहा करते यह गुरुकृपा की निशानी है।

६. **गुरुभक्त एकलव्य** —पाडव वन मे घूम रहे थे। उनका कुत्ता एक भील को देखकर भौंकने लगा। भील ने बाणों से उसका मुंह भर दिया। विस्मित एव खिन्न अर्जुन गुरुद्रोण से कहने लगा कि—आपने मुझे अद्वितीय बाणावलि बनाने का वरदान दिया था लेकिन यह भील मुझ से अधिक प्रतीत होता है। गुरु ने भील से पूछा—तू किसका शिष्य है ? उत्तर मिला—आपका, कारण आपकी मूर्ति के निमित्त से मुझे बाणविद्या मिली है। गुरु—अगर मेरा शिष्य है तो गुरुदक्षिणा मे अपना दाहिना अगूठा दे दे। अनन्य-भक्त भील ने तत्क्षण अगूठा काट कर दे दिया। **—महाभारत**

७. **बुद्धभक्त आनन्द** —ये बुद्ध के ससार पक्षीय भतीजे एव अनन्य भक्त थे। बुद्धत्वप्राप्ति के २० वर्ष पश्चात् इन्होंने निम्नोक्त शर्तों के साथ बुद्ध की नियमित सेवा २५ वर्ष तक की थी। शर्ते इस प्रकार थी —बुद्ध स्वय प्राप्त उत्तम भोजन-वस्त्र एव गन्धकुटीर मे निवास मुझे न दें। निमन्त्रण मे मुझ साथ न ले जायें। मेरे द्वारा स्वीकृत निमन्त्रण मे अवश्य जाएं। दर्शनार्थी को चाहूं जब मिला सकू एव मैं चाहूं जब निकट जा सकूं तथा मेरी अनुपस्थिति मे दिया गया उपदेश मुझे पुन सुनाया जाये। आनन्द क्रमश ६० हजार शब्द याद रख सकते थे।

**—'बुद्ध और बौद्ध-साधक' से सगृहीत**

# १४ गुणी शिष्य के कर्तव्य

१. तस्सेव गुणजाइस्स, अतेवासिस्स इमा चउव्विहा विणयपडिवत्ती भवइ त जहा - उवगरणउप्पायणया, साहिलया, वन्नसजलणया, भारपच्चोरुहणया।

—दशाश्रुतस्कंध दशा ४

गुणवान शिष्य की चार विनय-प्रति पत्तियाँ कही है—

(१) उपकरणोत्पादनता (२) सहायकता

(३) गुणानुवादकता (४) भारप्रत्यवरोहणता

प्रतिपत्ति का अर्थ-प्रयोग समझना चाहिये। तत्त्व यह है कि गुणवान शिष्य चार प्रकार से विनय का प्रयोग करता है।

(१) **उपकरणोत्पादनता**—गण मे नये उपकरणो को उत्पन्न करना, पुराणे उपकरणो की रक्षा करना, उपकरण कम हो तो उनकी पूर्ति करना तथा विद्यमान उपकरणो का यथाविधि विभाग करके सबको देना।

(२) **सहायकता**—गुरु आदि के अनुकूल वचन बोलना, अनुकूल शारीरिक प्रवृत्ति करना, दूसरो को सुख पहुँचाना, गुरु आदि का कार्य सरलतापूर्वक करना।

(३) **गुणानुवादकता** – गण-गणी का यथातथ्य गुणानुवाद करना, निन्दा करनेवालो को उचित उत्तर देकर निरुत्तर करना, गण-गणी का गुणानुवाद करने वाले को धन्यवाद देना तथा वृद्ध, ग्लान आदि की उचित सेवा करना।

(४) भारप्रत्यवरोहणता—क्रोध आदि दुर्गुणो के कारण जो साधु (साध्वी) गण से पृथक् हो रहा हो अथवा हो गया हो, उसे समझाकर संयम में स्थिर करना, नवदीक्षित को आचार-गोचारविधि समझाना, रुग्णावस्था में सहधर्मियो की सेवा करना तथा गण में परस्पर कलह उत्पन्न हो जाय तो उसे निष्पक्षता से क्षमायाचना करवाकर उपशान्त करना। ये गुणीशिष्य के कर्तव्य है।

## १५ अविनीत शिष्य

१ आणाऽनिद्देसकरे, गुरुणमणुववायकारए।
पडिणीए असबुद्धे, अविणीए त्ति वुच्चई ॥

—उत्तराध्ययन १।३

गुरु की आज्ञा को नही माननेवाला, उनके निकट नही बैठने वाला, उनके प्रतिकूल आचरण करनेवाला और तत्त्वज्ञान से शून्य शिष्य अविनीत कहलाता है।

२ वर न शिष्यो न कुशिष्य-शिष्यः। —चाणक्य० ६।१३

शिष्य का न होना अच्छा है, लेकिन कुशिष्य का शिष्य होना अच्छा नही।

३. कुशिष्यमध्यापयत. कुतो यश.। —चाणक्य० ६।१४

कुशिष्य को पढ़ानेवाले गुरु को यश कहा ?

४ शिष्यो की स्मृति मे अगर, हो गुरु का उपकार।
तो वे अविनय के लिये, कभी न हो तैय्यार। ७२।
क्या समझाये सद्गुरु, जो है पत्थरनाथ।
पैर विना क्या पुत्र को, थडी करावे मात। ३९।
कहो! करे क्या सद्गुरु, जो चेला नहि त्यार।
आखो मे ज्योती नही, फिर चश्मा वेकार। ३८।

—दोहा-सदोह

५. दीवी पण लागी नही, रीते चूल्हे फूक।
गुरु विचारा क्या करे, चेला ही मे चूक ॥ ★

## १६ शिष्यों पर अनुशासन करते समय

१. रमए पडिए सास, हय भद्द व वाहए ।
वाल सम्मई सासतो, गलियस्स व वाहए ।।

—उत्तराध्ययन १।३७

जातिवान घोडे को शिक्षा देनेवाले शिक्षक की तरह विनीत शिष्य को शिक्षा देता हुआ गुरु आनन्दित होता है और वाल-अविनीत शिष्य को शिक्षा देते समय गलिअश्व—दुष्ट घोडे को सिखानेवाले शिक्षक की तरह खिन्न—दु खित होता है ।

२ अहिंसयैव भूताना, कार्यं श्रेयोनुशासनम् ।
वाक् चैव मधुरा श्लक्ष्णा, प्रयोज्या धर्ममिच्छता ।।

—मनुस्मृति २।१५९

धर्म की इच्छा करनेवाला मनुष्य प्राणियो को अहिंसा से ही कल्याण के लिये शिक्षा दे और मीठी तथा कोमल वाणी वोले।

☆

## १७ गुरु-शिक्षा के समय विनीत-अविनीत शिष्यों का चिन्तन

१. ज मे बुद्धाणुसासन्ति, सीएण फरुसेण वा ।
मम लाभो त्ति पेहाए, पयओ त पडिस्सुणे ।।

—उत्तराध्ययन १।२७

'गुरु मुझे कोमल या कठोर वचन से शिक्षा दे रहे हैं, वह मेरे लाभ के लिये ही है।' ऐसा सोचकर विनीत शिष्य उस गुरु-शिक्षा को प्रयत्नपूर्वक ग्रहण करे ।

२ अणुसासणमोवाय, दुक्कडस्स य चोयण ।
हिय त मण्णई पण्णो, वेस होइ असाहुणो ।।

—उत्तराध्ययन १।२८

पाप को दूर करनेवाला, उपाययुक्त गुरुजनो का अनुशासन बुद्धिमान को तो हित का कारण होता है और असाधु पुरुष को वही अनुशासन द्वेष का हेतु बन जाता है ।

३. लज्जा - दया - सजम - बभचेर,
कल्लाणभागिस्स विसोहिठाण ।
जे मे गुरु सययमणुसासयति,
ते ह गुरु सयय पूययामि ।।

—दशवैकालिक ९।१।१३

लज्जा, दया, सयम और ब्रह्मचर्य--कल्याणभागी साधु के लिये- ये चारो विशोधि-स्थल है । जो गुरु मुझे इनकी सतत शिक्षा देते है, उनकी मैं सतत पूजा करता हूँ ।

४ खड्डुया मे चवेडा मे, अक्कोसा य वहाय मे ।
कल्लाणमणुसासन्तो, पावदिट्ठित्ति मन्नई ॥

—उत्तराध्ययन १।३८

'गुरु मेरे ठोकरें मारते हैं, चाटा लगाते हैं और मुझे कोसते तथा पीटते हैं।' पापदृष्टि शिष्य गुरुजनो के हितशासन को इस प्रकार मानता है।

५ पुत्तो मे भाय नाइ त्ति, साहू कल्लाणमन्नई ।
पावदिट्ठी उ अप्पाणं सास दासित्ति मन्नई ॥

—उत्तराध्ययन १।३९

विनीत शिष्य तो गुरु की शिक्षा को पुत्र, भ्राता व ज्ञाति जनो को दिये गये शिक्षण के समान हितकारी मानता है और पापदृष्टि अविनीत शिष्य उसी हितशिक्षा को दास के लिये दी गयी शिक्षा के समान खराव समझता है।

## १८ गुरु की आशातना

१. गुरुं तु नासाययई स पुज्जो —दशवैकालिक ९।३।२

जो गुरु की आशातना नही करता, वह पूज्य है।

२.
जो पावग जलियमवक्कमेज्जा,
आसीविस वा वि हु कोवएज्जा।
जो वा विस खायइ जीवियट्ठी,
एसोवमासायणया गुरूणं ॥ ६ ॥
सिया हु से पावय नो डहेज्जा,
आसीविसो वा कुविओ न भक्खे।
सिया विस हलाहल न मारे,
न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥
जो पव्वयं सिरसा भेत्तुमिच्छे,
सुत्त व सीह पडिबोहएज्जा।
जो वा दए सत्तिअग्गे पहार,
एसोवमासायणया गुरूण ॥ ८ ॥
सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे,
सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे।
सिया न भिंदेज्ज व सत्तिअग्ग,
न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥

आयरियपाया पुण अप्पसन्ना,
अबोहि आसायण नत्थि मोक्खो ।
तम्हा अणावाहसुहाभिकखी,
गुरुप्पसायाभिमुहो रमेज्जा ॥१०॥

—दशवैकालिक ६।१।६ से १०

कोई जलती अग्नि को लाघता है, आशीविष सर्प को कुपित करता है और जीवित रहने की इच्छा से विष खाता है, गुरु की आशातना भी इनके समान है— ये जिसप्रकार हित के लिये नही होते, उसीप्रकार गुरु की आशातना भी हित के लिये नही होती ॥६॥

सम्भव है कदाचित् अग्नि न जलाये, आशीविष सर्प कुपित होने पर भी न खाये और हलाहल विष भी न मारे, परन्तु गुरु की अवहेलना से मोक्ष कदापि सम्भव नही है ॥७॥

कोई शिर से पर्वत का भेदन करने की इच्छा करता है, सोये हुये सिह को जगाता है और भाले की नोक पर प्रहार करता है, गुरु की आशातना इनके समान है ॥८॥

सम्भव है शिर से पर्वत को भी भेद डाले, सिह कुपित होने पर भी न खाये और भाले की नोक भी भेदन न करे, पर गुरु की अवहेलना से मोक्ष कदापि सम्भव नही है ॥९॥

आचार्यपाद के अप्रसन्न होने पर बोधि-लाभ नही होता। गुरु की आशातना से मोक्ष नही मिलता। इसलिये मोक्ष-सुख चाहनेवाला मुनि गुरु-कृपा के लिये तत्पर रहे ॥१०॥

★

## धर्म की परिभाषायें

१. आत्मशुद्धि-साधन धर्मः । —जैनसिद्धान्त दीपिका ७ २३

जिससे आत्मा की शुद्धि हो, उसे धर्म कहते हैं ।

२. दुर्गतिप्रपतत्प्राणि-धारणाद्धर्म उच्यते —योगशास्त्र २।११

दुर्गति मे गिरते हुए प्राणी को धारण करने से धर्म 'धर्म' कहा जाता है ।

३. धारणाद् धर्म इत्याहु, धर्मेण विधृता· प्रजाः ।

—वाल्मीकि रा० ७।५९ प्रक्षेप २।७०

धारण करने के कारण ही धर्म को 'धर्म' कहते हैं । धर्म के द्वारा सारी प्रजा अपने-अपने स्वरूप मे स्थित है ।

४. यतोऽभ्युदय-निश्रेयससिद्धि· स धर्मः ।

—वैशेषिक दर्शन १।१।२

जिससे सासारिक उन्नति भी हो और मोक्ष की भी प्राप्ति हो उसका नाम धर्म है ।

५. धर्म अन्त प्रकृति है। वही सारी वस्तुओ का ध्रुव-सत्य है। धर्म ही वह चर्मलक्ष्य है जो हमारे अन्दर काम करता है — टैगोर

६. एक श्रेष्ठ जीवन ही एकमात्र धर्म है —थामस फूलर

७. धर्म ईश्वर और मनुष्य के प्रति प्रेम से अधिक कुछ भी नही । —विलियम पेन

८ मोक्ष की ओर बढानेवाला और सयम की शिक्षा देने वाला शास्त्र धर्म है। —गाधीजी

९ सम्पूर्ण विश्व मेरा देश है, सम्पूर्ण मानवता मेरा बन्धु है और भलाई करना मेरा धर्म है। —थामस पेन

१०. वत्थुसहावो धम्मो। —कुन्दकुन्द

वस्तु के स्वभाव का नाम धर्म है। प्रत्येक वस्तु का कुछ-न-कुछ धर्म- स्वभाव होता ही है। जैसे—अन्न का धर्म भूख मिटाना है, पानी का धर्म तृषा शान्त करना है, आकाश का धर्म आधार देना है एव इन्द्रियो के धर्म स्व-स्व विषयो का ग्रहण करना है।

## लोक धर्म

११ ग्राम-नगर-राष्ट्र-कुल-जाति-युगादिनामाचारो व्यवस्था वा लोकधर्म.। —जैनसिद्धान्तदीपिका ७।२९

ग्राम, नगर, राष्ट्र, कुल, जाति और युग—इनमे विद्यमान आचार—रिवाज व्यवस्था—कुटुम्ब-व्यवस्था, समाजव्यवस्था, राष्ट्रव्यवस्था आदि को लोकधर्म कहते हैं। इसकी परिभाषा ऐसे हो सकती है—

धरति व्यवस्थितरूपेण ससारमिति धर्म

अर्थात् जो ससार को व्यवस्थित रूप से रखता है वह धर्म है। लोकधर्म द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव के अनुसार बदल जाता है, लेकिन आत्मिक धर्म—सत्य, अहिसा आदि तीनो काल मे समान रहता है।

★

# धर्म के लक्षण

१. अहिंसा लक्षणो धर्म । —महाभारत

धर्म का लक्षण अहिंसा है ।

२. य स्यादहिंसया युक्तः, स धम इति निश्चय. ।

—महाभारत, शान्तिपर्व १०६।१२

जो प्रवृत्ति अहिंसामय है वह निश्चित रूप से धर्म है ।

३. आचारलक्षणो धर्म· । —महा० अनुशासन पर्व १०४

धर्म का लक्षण आचार—सच्चरित्र है ।

४. समः सर्वेषु भूतेषु, न लिङ्गं धर्मकारणम् ।

—हितोपदेश ५।८८

समस्त प्राणियो के प्रति समता का व्यवहार करना ही धर्म है, लिंग—वेष इसमे कारण नही है ।

५. अहिंसा सत्यमस्तेय, शौचमिन्द्रिय-निग्रह. ।
एत सामासिक धर्म-श्चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन् मनु. ।।

—मनुस्मृति १०।६३

अहिंसा, सत्य, अचौर्य, आत्म-शुद्धि और इन्द्रिय-निग्रह—यह सक्षिप्त धर्म महर्षि मनु ने चारो वर्णों के लिये कहा है । –

६. सक्षेपात्कथ्यते धर्मो, जनाः किं विस्तरेण वा ।
परोपकार· पुण्याय, पापाय परपीडनम् ।।

—पंचतंत्र ३।१०३

धर्म को चाहे संक्षेप में कहा जाय अथवा विस्तार में। तत्त्व यह है कि परोपकार पुण्य है और पर-पीडा पाप।

७. वेद: स्मृति: सदाचार:, स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहु: साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।
—मनुस्मृति २।१२

वेद-ज्ञान, स्मृति-धर्मशास्त्र, अच्छे आचरण और आत्मा का हितकारी कार्य—ये चार धर्म के प्रत्यक्ष लक्षण है।

८ धृति: क्षमा दमोऽस्तेयं, शौचमिन्द्रियनिग्रह:।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥
—मनुस्मृति ६।६२

(१) धृति (२) क्षमा (३) दम (४) अस्तेय (५) शौच (मन, वाणी और शरीर की पवित्रता) (६) इन्द्रिय-दमन (७) बुद्धि (८) विद्या (९) सत्य (१०) अक्रोध—ये धर्म के दश लक्षण हैं।

९ अहिंसा सत्यमक्रोध:, तपो दानं दमो मति:।
अनसूयाप्यमात्सर्य-मनीर्ष्या शीलमेव च।
एष धर्म: कुरुश्रेष्ठ! कथित: परमेष्ठिना॥
—महा० शान्ति० १०९।१२

ब्रह्माजी ने कहा है कि—अहिंसा, सत्य, अक्रोध, तपस्या दान, इन्द्रिय एवं मन का दमन, शुद्धबुद्धि, किसी के दोष न देखना, किसी का डाह न करना, ईर्ष्या न करना और उत्तमशीलयुक्त होना ही धर्म है।

१०. धर्मं यो बाधते धर्मो, न स धर्म: कुधर्मक:।
अविरोधात्तु यो धर्म:, स धर्म: सत्यविक्रम:॥
—महाभारत

जो धर्म अन्य धर्म को बाधित करता है, वह धर्म नही कुधर्म है। जो सबके साथ अविरोधी भाव से बरतता है, वही धर्म सत्यपराक्रमवाला है।

११ स धर्मो यत्र नाधर्म—स्तत्सुख यत्र नासुखम्।
तज् ज्ञान यत्र नाऽज्ञान, सा गतिर्यत्र नाऽगति ॥

—आत्मानुशासन-१

धर्म वही है, जिसमे अधर्म न हो। सुख वही है, जिसमें असुख न हो। ज्ञान वही है, जिसमें अज्ञान न हो और गति वही है जिसमे आगति—लोटना न हो।

# जैनधर्म एवं उसका महत्त्व

१. स्याद्वादो विद्यते यस्मिन्, पक्षपातो न विद्यते ।
नास्त्यन्यपीडन किंचिज्, जैनधर्म स उच्यते ।

जिसमे स्याद्वाद है, पक्षपात नही है तथा किंचित्मात्र परपीडन नही है उसे जैनधर्म कहते हैं ।

२. कैसे करी केतकी कनेर एक कही जात ।
आक दूध गाय दूध अन्तर घनेर हैं ।
पीरो होत रीरी पै न रीस करै कचन की ।
कहा कागवानी कहा कोयल की टेर है ॥
कहा भान भारो कहा आगिया विचारो ।
कहा पूनो को उजारो, कहा मावस-अधेर है ।
पच्छ छोरि पारखी निहारो नेक नीके करी ।
जैन-वैन और वैन इतनो ही फेर है ॥

—भूधरदास

३. सर्व एव हि जैनाना, प्रमाण लौकिको विधि ।
यत्र सम्यक्त्वहानिर्न, यत्र न व्रतदूषणम् ॥
श्रुति शास्त्रान्तर वास्तु, प्रमाण कात्र न क्षति· ॥

—यशस्तिलक चम्पू—सोमदेव सूरि

जैनो को व्यवहार के लिए लौकिकविधि—रीतिरिवाज को ही मान्य करना चाहिए, बशर्ते कि उसमें सम्यक्त्व की हानि न हो, एव व्रतो में दोष न लगे ।

★

## २२ धर्म की महिमा

१. धम्मो मगलमुक्किट्ठ । —दशवैकालिक १।१

धर्म सबसे उत्कृष्ट मगल है ।

२. केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो । —आवश्यक अ० ४

केवली-प्ररूपित धर्म लोक मे उत्तम है ।

३. एगो हु धम्मो नरदेव ! ताण । —उत्तराध्ययन १४।४०

हे राजन् । ससार मे एक धर्म ही आत्मा की रक्षा करने वाला है ।

४. दीवे व धम्म । —सूत्रकृताग ६।४

धर्म दीपकवत् अज्ञान-अन्धकार का नाश करनेवाला है ।

५. धर्म दीपक मे श्रद्धारूप तेल एव विनयरूप बत्ती अवश्य चाहिये । —अज्ञात

६ जरामरणवेगेण, बुज्झमाणाणपाणिण । धम्मो दीवो —उत्तराध्ययन २३।६८

जरा-मरण के वेग से बहते हुये जोवो के लिये धर्म ही एक मात्र द्वीप है ।

७. धम्मो ताण धम्मो सरण, धम्मो गइपइट्ठा य ।
धम्मेण सुचरिएण, लब्भइ अयरामर ठाण ।

पीडकरो वन्नकरो, भासकरो जसकरो रइकरो य।
अभयकरो निव्वुइकरो, परत्त वि अज्जिओ धम्मो ॥

—तन्दुलवैचारिक गाथा ३३-३४

धर्म त्राण और शरणरूप है। धर्म ही गति एवं आधार है। धर्म की सम्यग् आराधना करने से जीव अजर-अमर स्थान को प्राप्त होता है।
यह आर्य धर्म इह-परलोक में प्रीति वर्ण—कीर्ति या रूप, भास—तेजस्विता या मिष्टवाणी, यश, रति, अभय एवं निवृत्ति-आत्मिक सुख का करनेवाला है।

८ एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिणदेसिए।

—उत्तराध्ययन १६।१७

जिन भगवान द्वारा उपदिष्ट यह धर्म ध्रुव है, नित्य है और शाश्वत है।

९ अबन्धूनामसौ बन्धु-रसखोनामसौ सखा।
अनाथानामसौ नाथो, धर्मो विश्वैकवत्सल ॥

—योगशास्त्र ४।१००

यह धर्म अबन्धुओं का बन्धु है, अमित्रों का मित्र है और अनाथों का नाथ है। अतः यही जगत में परम वत्सल है।

१० धर्मो माता पिता चैव। —इतिहास समुच्चय

धर्म प्राणियों के लिये माता-पिता है।

११ न धर्मसदृश कश्चित्, सर्वाभ्युदयसाधक।

— शुभचन्द्राचार्य

नाना प्रकार की उन्नति करनेवाला धर्म के समान दूसरा कोई नहीं है।

१२. परलोके धन धर्म। —क्षेमेन्द्र

परलोक में धर्म ही सच्चा धन है।

१३. सुखस्य मूल धर्म.। —कौटिल्य०

धर्म सुख का मूल कारण है।

१४. अङ्कस्थाने भवेद्धर्मः, शून्यस्थान तत. परम्।
अङ्कस्थाने पुनर्भ्रष्टे, सर्व शून्यमिद भवेत्॥

अक के स्थान मे धर्म है और दूसरी बात उसके आगे बिन्दियो के समान है। यदि अक का स्थान रिक्त हो जाय तो शेप सभी बाते शून्यरूप हो जाती हैं।

१५. धर्मादर्थ प्रभवते, धर्मात् प्रभवते सुखम्।
धर्मेण लभते सर्वं, धर्मसारमिद जगत्॥
—वाल्मीकि रा० ३।६।३०

धर्म से धन होता है, सुख होता है। जगत का सार धर्म ही है क्योकि मनुष्य इससे सब कुछ पाता है।

१६. धर्मार्थकामाना युगपत्समवाये पूर्वः पूर्वो गरीयान्।
—नीतिवा० ३।१५

एक काल मे कर्तव्यरूप से प्राप्त हुए धर्म, अर्थ और काम— इन तीनो पुरुषार्थों मे से पूर्व-पूर्व का पुरुषार्थ ही श्रेष्ठ है।

१७. चला लक्ष्मीश्चला प्राणाश्चल जीवित-यौवनम्।
चलाचलेऽत्र ससारे, धर्म एको हि निश्चलः॥
—चाणक्य० ५।२०

लक्ष्मी चचल है, प्राण चचल है, जीवित और जवानी चचल है। इस चलाचल ससार मे केवल एक धर्म ही निश्चल है।

१८. मृत शरीरमुत्सृज्य, काष्ठ-लोष्टसम क्षितौ।
विमुखा बान्धवा यान्ति, धर्मस्तमनुगच्छति॥
—मनुस्मृति ४।२४१

मृत शरीर को काष्ठ तथा ढेले के समान छोड़कर स्वजन मुह फिराकर चले जाते हैं, किन्तु धर्म मृत व्यक्ति के साथ परलोक मे जाता है।

१९. धर्म तो जनता के लिए निद्रा लाने वाला रसायन है।

—कार्लमार्क्स

२०. धर्म फूलो की शय्या है और ससार काटो की शय्या है। यही कारण है कि धर्मक्रियाएँ करते समय प्राय निद्रा आया करती है।

२१. धर्म अन्न-पानी के समान है। इसके अभाव मे भौतिक सुख-सामग्री कुछ काम नही दे सकती। खान-पान की चीजे खत्म होने से तीन लाख मराठी सेना को पानीपत के मैदान मे मुट्ठी भर मुगलो के सामने हारना पड़ा था। ऐसे ही मुहम्मद गजनी की फौजे रण मे पानी के अभाव मे मर गयी थी।

★

## २३ धर्म की प्रेरणा

१. मेहावी जाणिज्ज धम्म । —आचाराग ५।४

मेधावी पुरुष को धर्म का ज्ञान करना चाहिए ।

२. धम्म चर ! सुदुच्चर । —उत्तराध्ययन १८।३३

जो आचरण मे कठिनाईवाला और फल मे अच्छाईवाला है, उस धर्म का पालन करो ।

३. ताइणा बुइए जे धम्मो अणुत्तरे ।
त गिण्ह हियति उत्तम ॥

—सूत्रकृताग २।२।२४

भगवान का कहा हुआ जो धर्म श्रेष्ठ, हितकारी एव उत्तम है उसे ग्रहण करो ।

४ सुहावह धम्मधुर अणुत्तर ।
धारेज्ज निव्वाण-गुणावह मह ॥

—उत्तराध्ययन १९।९९

जो सुखदाई है, श्रेष्ठ है और निर्वाण के गुणो को देनेवाला है, उस महान धर्म की धुरा को धारण करो ।

५. शुभस्य शीघ्रम् । —सस्कृत कहावत

धर्म का काम शीघ्र ही करना चाहिये ।

६ धर्मं कुरुत यत्नेन, योऽवश्य सह यास्यति ।

—कात्यायन-स्मृति

महानुभावो! यत्नपूर्वक धर्म करो। यह परभव मे अवश्य तुम्हारे साथ चलेगा।

७ असुयाण धम्माण सम्म सुणणयाए अब्भुट्ठेयव्व भवति। सुयाण धम्माण ओगिण्हणयाए उवधारणयाए अब्भुट्ठेयव्व भवति।

—स्थानाग ८

अभी तक नही सुने हुए धर्म को सुनने के लिए तत्पर रहना चाहिए। सुने हुए धर्म को ग्रहण करने—उस पर आचरण करने को तत्पर रहना चाहिए।

८. अहिस सच्च च अतेणग च,
नत्तो य वभ अपरिग्गह च।
पडिवज्जिया पच महव्वयाणि,
चरिज्ज धम्म जिणदेसिय विऊ॥

वचपन से ही धर्म मे प्रेम लगा लो, क्योकि वचपन का प्रेम अविभक्त होता है।

११. विवाह होने के बाद आधा प्रेम स्त्री मे, चौथाई वाल-बच्चो में और शेष चौथाई प्रेम मा-बाप, माल-मिल्कत एव मान-बडाई आदि मे विभक्त हो जाता है।

—रामकृष्ण

१२. जरा जाव न पीडेइ, वाहि जाव न वड्ढइ।
जाविन्दिया न हायति, ताव धम्म समायरे॥

—दशवैकालिक ८।३६

जब तक बुढापा पीडित न करे, जब तक रोगो का जोर न वढ़े तथा जब तक इन्द्रिया—कान-आख आदि शक्तिहीन न हो, तव तक धर्म करलो।

१३ जैसे—बूढ़े आदमी को कोई गोद नही लेता, वैसे- ही धर्म भी बूढे को स्वीकार नही करता अर्थात् बुढापे मे धर्म—ध्यान प्राय. नही हो सकता।

१४. धर्म शनै. सचिनुयाद्, वल्मीकमिव पुत्तिका।

—मनुस्मृति ४।२३७

जैसे—दीमक वावी को वढाता है, वैसे धर्म को भी धीरे-धीरे वढाते रहना चाहिए।

१५. चाहे थोडा-थोडा भी हो, धर्म हमेशा करते रहो, नित्य वड़ी है। छठे महीने एक के दो करता हूँ—ऐसा सुनकर एक आदमी ने सेठ को एक आना दिया। वारह वर्षो के वाद आया और हिसाव किया—१० लाख ४८ हजार ५७६ रुपये हुये। सेठ का दिवाला निकला।

६ सेठ के उणसाठ जहाज डूब गये लेकिन एक जहाज के सहारे पार होगया। इस तरह एक घटी का धर्म आत्मा को तार देता है और भी—

> अठावन घड़ी कर्म की, दोय घड़ी धर्म की।
> अठावन घड़ी पाप की, दोय घड़ी आपकी।
> अठावन घड़ी काम की, दोय घड़ी राम की।
> अठावन घड़ी घर की, दोय घड़ी हर की॥

१७. स्वास्थ्य रक्षा के लिये खाने, पीने, पहनने, ओढने तथा सोने उठने का पूरा-पूरा ख्याल रखा जाता है। पुत्रादिक के जन्म तथा विवाहादि प्रसंग पर यश-कीर्ति प्राप्त करने की बेहद कोशिश की जाती है तथा वृद्ध माता-पिता के मरने पर दुःख न होते हुये भी लोकव्यवहार के लिये शोक दिखाया जाता है, किन्तु धर्म रक्षा के लिये लोग बिल्कुल परवाह नहीं करते।

१८ धर्म में शुद्धता देखो, न कि उसकी मात्रा। छोटा-सा शुद्ध मन्त्र देवता को खींच लेता है, छोटा सा शुद्ध रत्न लाखों-करोड़ों की कीमत में पड़ता है। छोटी-सी बावने चन्दन की एक चुटकी बावन मन तेल को शीतल-सुगंधित बना देती है, तथा दीपक की छोटी-सी लौ मन्दिर को प्रकाशमय कर देती है। माला फेरो चाहे एक ही माला, पर फेरनी चाहिये तल्लीनता से। करो चाहे एक ही सामायिक, पर करनी चाहिये शुद्धता से।

१९. किसी अंग्रेज ने क्या ही खूब कहा है—Never look to the quantity of your actions but pay particular attention to the Quality there of. नेवर लुक टू दी क्वान्टिटी ओफ योर एकसन्स बट पर्टिकुलर एटेनसन टू दी क्वालिटी देयर ओफ।

२०. धर्म का पलड़ा भारी बनाओ—
जैसे—काटे जितनी सुई अन्दर जाने से ही काटा निकलता है, भूख के अनुसार रोटी खाने से ही शान्ति होती है, नीव की गहराई के अनुसार ही मकान बनाया जाता है, बीमारी के वेग के हिसाब से ही दवा दी जाती है, आमदनी के अनुसार ही खर्च किया जाता है, टकी की ऊँचाई के अनुरूप ही पानी ऊँचा चढाया जाता है—इसीप्रकार पाप की अपेक्षा धर्म का पलडा अधिक वजनदार होगा तब ही कही आत्मा का कल्याण होगा, किन्तु—

अहिरन की चोरी करे, करे सूई को दान।
कोठे चढ़कर देखते, कब आवे विमान!

क्या इस तरह कभी विमान आ सकता है?

# धर्म की आवश्यकता

१ शरीर के लिये भोजन जितना आवश्यक है आत्मा के लिये धर्म भी उतना ही आवश्यक है।

२ धर्मरहित अर्थ त्याज्य है। धर्मरहित राज्यसत्ता राक्षसी है। —गांधी

३. धर्मेण हीना पशुभि समाना। —महा० शान्ति० १८५

धर्महीन प्राणी पशु के समान है।

४ यस्य धर्मविहीनानि, दिनान्यायान्ति यान्ति च।
न लोहकार भस्त्रेव, श्वसन्नपि न जीवति॥

—पचतन्त्र ३।९७

## २५ धर्म के फल

१. सकल्प्य कल्पवृक्षस्य, चिन्त्य चिन्तामणंरपि।
असकल्प्यमसचिन्त्य, फल धर्मादवाप्यते ॥

—आत्मानुशासन २२

कल्पवृक्ष से सकल्प किया हुआ और चिन्तामणि से चिन्तन किया हुआ पदार्थ प्राप्त होता है, किन्तु धर्म से असकल्प्य एव अचिन्त्य फल मिलता है।

२. धम्म च कुणमाणस्स, सफला जति राइओ।

—उत्तराध्ययन १४।२५

धर्म करनेवाले व्यक्ति के दिन-रात सफल होकर जाते है।

३. धम्मसद्धाएण साया-सोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ।

—उत्तराध्ययन २६ बोल ३

धर्म पर दृढ श्रद्धा हो जाने से जीव साता।वेदनीय-जनित पौद्‌गलिक सुखो से विरक्त हो जाता है।

४. सव्व सुचिन्न सफल नराण। —उत्तराध्ययन १३।१०

सभी प्रकार का सुकृत-धर्म मनुष्यो के लिए अच्छा फल लाता है।

५. सुकृतैर्विन्दते सौख्य, प्राप्य देहमिम नर।

—महा० शान्तिपर्व

यह मनुष्य देह पाकर सुकृत—धर्म द्वारा ही प्राणी सुखो को प्राप्त होता है।

६. धम्म पि काऊण, जो गच्छइ पर भवं।
सो सुही होइ।

—उत्तराध्ययन १९।२१

जो धर्म की आराधना करके परभव में जाता है, वह सुखी होता है।

७ दिव्वं च गइं गच्छन्ति, चरित्ता धम्ममारियं।

—उत्तराध्ययन १८।२५

आर्य धर्म का आचरण करके महापुरुष दिव्य गति को प्राप्त होते हैं।

८ धम्मं अकाऊण, जो गच्छई पर भवं।
सो दुही होई।

—उत्तराध्ययन १९।१९

धर्म की आराधना किये बिना जो परभव में जाता है, वह दुःखी होता है।

१०. प्राज्य राज्य सुभगदयिता नन्दनानन्दनाना,
रम्य रूप सरसकविता चातुरी सुस्वरत्वम् ।
नीरोगत्व गुणपरिचय. सज्जनत्व सुवुद्धि,
किं नु ब्रूम· फलपरिणति धर्मकल्पद्रुमस्य ।।

—शान्तसुधारस-धर्मभावना

विशाल राज्य, सुभग स्त्री, पुत्रो के पुत्र-पोते, सुन्दररूप । सरस कविता, निपुणता, मीठास्वर, नीरोगता, गुणो से प्रेम, सज्जनता सद्बुद्धि—ये सभी धर्मरूपी कल्पवृक्ष के फल हैं, एक जीभ से कितना कहा जाय ?

११. त्रिभिर्वर्षैस्त्रिभिर्मासै-स्त्रिभि. पक्षैस्त्रिभिर्दिनैः ।
अत्युग्रपुण्यपापाना, फलमत्रैव जायते ।।

—हितोपदेश २।८४

अत्युग्र पुण्य-पापो का फल प्राय. यही मिल जाता है, फिर वह चाहे तीन वर्षों मे, तीन महीनो मे, तीन पक्षो मे अथवा तीन दिनो मे मिल जाये ।

१२. धर्मस्य फलमिच्छन्ति, धर्मं नेच्छन्ति मानवा ।
फल पापस्य नेच्छन्ति, पापं कुर्वन्ति सादरा ।।

—सुभाषित रत्न-भाण्डागार

मनुष्य धर्म का सुख रूप फल तो चाहता है, पर धर्म करना नही चाहता, ऐसे ही मनुष्य पाप का फल तो नही चाहता, किन्तु पाप करके खुश होता है ।

३. मुझ से मत पूछो कि धर्म से क्या लाभ है ? बस एक

बार पालकी उठानेवाले कहारों को देख लो और फिर उस आदमी को देखो, जो उसमें सवार है।

—[1]तिरुकुरल धर्म प्रकरण १०

१०. प्राज्य राज्य सुभगदयिता नन्दनानन्दनाना,
रम्य रूप सरसकविता चातुरी सुस्वरत्वम्।
नीरोगत्व गुणपरिचयः सज्जनत्व सुबुद्धि,
कि नु ब्रूम· फलपरिणति धर्मकल्पद्रुमस्य ।।

—शान्तसुधारस-धर्मभाव

विशाल राज्य, सुभग स्त्री, पुत्रो के पुत्र-पोते, सुन्दररूप । सर कविता, निपुणता, मीठास्वर, नीरोगता, गुणो से प्रेम, सज्जन सद्बुद्धि—ये सभी धर्मरूपी कल्पवृक्ष के फल हैं, एक जी से कितना कहा जाय ?

११. त्रिभिर्वर्षैस्त्रिभिर्मासै-स्त्रिभि. पक्षैस्त्रिभिर्दिनै ।
अत्युग्रपुण्यपापाना, फलमत्रैव जायते ।।

—हितोपदेश २।८

अत्युग्र पुण्य-पापो का फल प्राय यही मिल जाता है, फिर व चाहे तीन वर्षों मे, तीन महीनो मे, तीन पक्षो मे अथवा ती दिनो मे मिल जाये ।

१२. धर्मस्य फलमिच्छन्ति, धर्म नेच्छन्ति मानवा· ।
फल पापस्य नेच्छन्ति, पाप कुर्वन्ति सादरा ।।

—सुभाषित रत्न-भाण्डागा

मनुष्य धर्म का सुख रूप फल तो चाहता है, पर धर्म करन नही चाहता, ऐसे ही मनुष्य पाप का फल तो नही चाहत किन्तु पाप करके खुश होता है ।

१३. मुझ से मत पूछो कि धर्म से क्या लाभ है ? बस ए

वार पालकी उठानेवाले कहारो को देख लो और फिर उस आदमी को देखो, जो उसमे सवार है ।

—[1]तिरुकुरल धर्म प्रकरण १०

१ मदुरा नगर मे एक विद्वत्सभा थी। उसमे ५० आसन लगे हुए थे, ४९ पर विद्वान् बैठते थे और एक सबसे ऊँचा खाली (सरस्वती के लिये) रहता था। तिरुकुरल ग्रथ लेकर सत तिरुवल्लुवर वहा आए देखकर सभी साश्चर्य हुए। यह ग्रथ कुदकुदाचार्य का रचित है। ये सत उन्ही के शिष्य थे।

## २६ धर्म के भेद

१ दुविहे धम्मे पण्णत्ते, त जहा-
सुयधम्मे चेव, चरित्तधम्मे चेव ।

—स्थानांग २।१।७२

प्रभु ने दो प्रकार का धर्म कहा है—श्रुतधर्म और चारित्र धर्म ।

२. चरित्तधम्मे दुविहे पण्णत्ते, त जहा-
अगारचरित्तधम्मे चेव, अणगारचरित्तधम्मे चेव ।

—स्थानांग २।१।७२

चारित्र धर्म दो प्रकार का कहा है—अगारचारित्र धर्म—बारह व्रत रूप और अनगारचारित्र धर्म—पाच महाव्रत रूप ।

३ धर्म के दो रूप है—आचार और विचार। आचार मे तप-जप-व्रत आराधना-प्रभुउपासना आदि बाह्य आचरण है और विचार मे धर्म के मूल तत्त्वो की विचारणा है। सद्विचारयुक्त सदाचार का पालन करने से धर्म की आराधना होती है ।

४. 'धर्म के दो प्रकार है—विचारात्मक धर्म और आचारात्मक धर्म ' दोनो की पूर्णता ही जीवन को चमक देती है। विचारात्मक धर्म के लक्षण हैं—विचारो मे आग्रहहीनता, दूसरो के विचार जानने में सहिष्णुता और

भावो मे पवित्रता। आचारात्मक धर्म के लक्षण है—निर्मलता तथा व्यवहार मे शुद्धता और सत्य अहिसा मे निष्ठा।

—आचार्य तुलसी

५. दानं च शील च तपश्च भावो,
धर्मश्चतुर्धा जिनवान्धवेन निरूपित.॥

—शान्तसुधारस

सर्वज्ञ भगवान् ने दान, शील, तप और भावना—ऐसे चार प्रकार का धर्म कहा है।

६. इज्याध्ययनदानानि, तपः सत्य क्षमा घृणा।
अलोभ इति मार्गोऽय, धर्मस्याष्टविध स्मृत.॥
तत्र पूर्वश्चतुर्वर्गो, दम्भार्थमपि सेव्यते।
उत्तरश्च चतुर्वर्गो, नामहात्मसु तिष्ठति॥

—विदुरनीति ३।५६-५७

यज्ञ, वेदाध्ययन, दान, तप, सत्य, क्षमा, दया, अलोभ—ऐसे धर्म का मार्ग आठ प्रकार का है, उसमे प्रथम चार का सेवन तो दम्भ के लिये भी हो सकता है, किन्तु शेष चारो का सेवन महात्मा ही करते हैं।

७. चत्तारि धम्मदारा पण्णत्ता, त जहा—
खती, मुत्ती, अज्जवे मद्दवे।

—स्थानाग सूत्र ४।४।३८

धर्म के चार द्वार कहे हैं—क्षमा, सन्तोप, सरलता और विनय।

८. त्रयो धर्मस्कन्धा—यज्ञोऽध्ययन दानमिति प्रथम। तप एव द्वितीय। ब्रह्मचर्याचार्यकुलवासी तृतीयोऽत्यन्तमात्मानमाचार्यकुलेऽवसादयन्।

—छान्दोग्य उपनिषद् २।२३।१

धर्म के स्कन्ध—आधार तीन है—यज्ञ, अध्ययन और दान—यह प्रथम स्कन्ध हे। तप अर्थात् कष्ट-सहिष्णुता दूसरा स्कन्ध है। श्रम और सयम का जीवन व्यतीत करते हुये गुरुकुल मे दत्तचित्त होकर विद्या ग्रहण करना तीसरा स्कन्ध है।

९ द्वौ हि धर्मौ गृहस्थाना लौकिक: पारलौकिक.।
लोकाश्रयो भवेदाद्य·, पर: स्यादागमाश्रय· ॥

—सोमदेव सूरि

गृहस्थो के दो धर्म है—लौकिक और पारलौकिक। पहला लोक के आश्रित है और दूसरा आगमाश्रित।

१०. पचय अणुव्वयाइ, गुणव्वयाइ च होंति तिन्नेव।
सिक्खावयाइ चउरो, गिहधम्मो बारसविहो य॥

पाच अणुव्रत है, तीन गुणव्रत है और चार शिक्षाव्रत हैं—ऐसे गृहस्थधर्म बारह प्रकार का है।

११. दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते त जहा—
खती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे, संजमे, तवे, चियाए, बभचेरवासे। —स्थानांग सूत्र १०।७१३

दस प्रकार का श्रमणधर्म कहा गया है—(१) क्षान्ति—क्षमा (२) मुक्ति—निर्लोभता (३) आर्जव—सरलता (४) मार्दव—नम्रता (५) लाघव—अकिंचनता (६) सत्य (७) संयम (८) तप (९) त्याग (१०) ब्रह्मचर्य।

## २७ धन से धर्म नहीं

१ अमृतत्वस्य नाशास्ति वित्तेन —बृहदारण्यक० २।४।२

मनुष्य धन से अमृतत्व-मोक्ष एव पूर्ण सन्तोप की आशा नही कर सकता।

२. धर्मार्थं यस्य वित्तेहा, वर तस्य निरीहता।
प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य, श्रेयो न स्पर्शन नृणाम्॥

—महाभारत वनपर्व २।४८

धर्म के लिये जो धन पाना चाहता है, उसके लिये निरीहता उत्तम है, क्योकि कीचड को लगाकर धोने की अपेक्षा नही लगने देना ही श्रेयस्कर है—यह महर्पि वैशम्पायन का कथन है।

३ धणेण किं धम्मधुराहिगारे। —उत्तराध्ययन १४।१७

धर्माचरण मे धन से क्या प्रयोजन है ?

४. धर्म आत्मा से ही सम्बन्धित है, यदि धन से सम्बन्धित होता तो अमेरिका आज तक दसो वेद एव बीसो उपनिषदे बना डालता।

★

२८

# दुष्प्राप्य धर्म

१. उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा —उत्तराध्ययन १०।१८

उत्तम धर्म का श्रवण मिलना निश्चय ही कठिन है ।

२. सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा —उत्तराध्ययन १०।१९

धर्म को सुनकर उस पर श्रद्धा कर लेना और भी मुश्किल है ।

३. दुल्लहया काएण फासणया —उत्तराध्ययन १०।२०

धर्म मे श्रद्धा हो जाने पर भी उसे काया के द्वारा स्पर्शन करना अर्थात् आचरणो मे लाना पिछले कार्य से भी कठिन है ।

४. आत्मान नियमैस्तैस्तै', कर्षयित्वा प्रयत्नतः ।
प्राप्यते निपुणैर्धर्मो, न सुखाल्लभते सुखम् ॥
—वाल्मीकि० ३।६।३१

नाना प्रकार के नियमो से आत्मा को कस करके ही विद्वान् धर्म को प्राप्त करते हैं । सुख से सुख नही मिला करता ।

५. न सीदन्नपि धर्मेण, मनोऽधर्मे निवेसयेत् ।
अधार्मिकाणां पापाना-माशुपश्यन् विपर्ययम् ।
—मनुस्मृति ४।१७१

अधर्म करनेवाले पापियो को सुखी, धनी और धार्मिको को दु.खी एव निर्धन देखकर भी अधर्म मे मन नही लगाना चाहिए ।

## २६ धर्मप्राप्ति के उपाय

१ दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए,
त जहा—सोच्चा चेव, अभिसमेच्चा चेव।

—स्थानाग २।१

जीव को दो प्रकार से केवलिप्ररूपित धर्म की प्राप्ति होती है—सुनकर और उस पर श्रद्धा करके।

२. दो ठाणाइ परियादित्ता आया केवलिपन्नत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए त जहा—आरम्भे चेव, परिग्गहे चेव।

—स्थानाग २।१

जीव आरम्भ और परिग्रह—इन दो चीजो का त्याग करके ही केवलिप्ररूपित धर्म का सुनना पा सकता है, अन्यथा नही।

३ श्रद्धा विना धर्म नहिं होई।

—संत तुलसीदास

## ३० धर्म समझने के बाद

१. मेहावी समिक्खधम्म, दूरेण पाव परिवज्जएज्जा ।

—सूत्र० १०।२०

विद्वान पुरुष को चाहिये कि वह धर्म को समझकर हिंसादि पापो को दूर से ही छोड दे ।

२. णच्चा धम्मं अणुत्तर, कयकिरिए ण यावि मामए ।

—सूत्र० २।२।२८

श्रेष्ठ धर्म को समझकर क्रिया करते हुये व्यक्ति को ममत्वभाव नही रखना चाहिये ।

३. जीविय नावकखेज्जा, सोच्चा धम्म अणुत्तर ।

—सूत्र० ३।२।१३

श्रेष्ठ धर्म को सुनकर भोगमय जीवन की इच्छा न करनी चाहिये।

४. त आइत्तु न निहे न निक्खिवे, जाणित्तु धम्म जहा तहा।

—आचाराङ्ग ४।१

यथातथ्य धर्म को जानकर ग्रहण करने के बाद न तो उसे छिपाना चाहिये और न ही उसे छोडना चाहिये ।

५ चइज्ज देह, न हु धम्मसासण । —दशवैकालिक चू० १।१७

देह को (आवश्यक होने पर) भले छोड दो, किन्तु अपने धर्म-शासन को मत छोडो ।

६ श्रूयता धर्मसर्वस्व, श्रुत्वा चवावधार्यताम् ।
आत्मन.प्रतिकूलानि, परेपा न समाचरेत् ।।

—पद्मपुराण-सृष्टिखण्ड १९।३५७

धर्म का वास्तविक अर्थ सुनो और समझो। वह यह है कि जिन बातो को मनुष्य अपने लिये अच्छा नही समझता, दूसरो के साथ भी वे बातें हरगिज न करे।

७. ज इच्छसि अप्पणतो, ज च न इच्छसि अप्पणतो।
त इच्छ परस्स वि, एत्तियग जिणासासणय ॥

—बृहत्कल्प भाष्य १४५।८४

जो अपने लिए चाहते हो, वह दूसरो के लिए भी चाहना चाहिए, जो अपने लिए नही चाहते हो वह दूसरो के लिए भी नही चाहना चाहिए—बस, इतना मात्र जिनशासन है—तीर्थंकरो का उपदेश है।

८ त्सूकु ग के पूछने पर कनफ्यूसस ने कहा—"तुम्हे जो चीज नापसन्द हो, वह दूसरो के लिये हरगिज मत करो !"

—कागफ्यूत्सी के धर्म का मूल सूत्र

९. अगर मोमिन (ईमानवाला) होना चाहता है तो पडोसी का भलाकर। अगर मुसलिम होना चाहता है तो जो कुछ अपने लिये अच्छा समझता है, वही सबके लिये समझ।

—मुहम्मद साहब

★

## ३१ धर्म की उत्पत्ति-आदि

१. संवेगेण अणुत्तर धम्मसद्ध जणयइ —उत्तराध्ययन २९।१

वैराग्य से सर्वश्रेष्ठ धर्म की श्रद्धा उत्पन्न होती है।

२. धर्म न बाडी नीपजै, धर्म न हाट बिकाय।
धर्म शरीरा नीपजै, जो कछु कीधो जाय ॥

३. सत्येनोत्पद्यते धर्मो, दया-दानाद् विवर्धते।
क्षमया स्थाप्यते धर्मः, क्रोध-लोभाद् विनश्यति ॥

—महाभारत शान्तिपर्व १७।१०१

धर्म, सत्य से उत्पन्न होता है। दया-दान से बढता है, क्षमा से स्थापित होता है और क्रोध-लोभ से नष्ट होता है।

४. धम्माण कासवो मुहं —उत्तराध्ययन २५।१६

इस भरतक्षेत्र की अपेक्षा से धर्मों का मुख—आदिस्रोत काश्यप अर्थात् श्री ऋषभदेव भगवान है।

५. धर्मः सत्येन वर्धते। —मनुस्मृति ८।८३

धर्म सत्य से बढता है।

६. धम्मस्स विणओ मूलं। —दशवैकालिक ९।२।२

धर्म का मूल विनय है।

७. धर्म का मूल समता है—वह मानव-मानव के बीच ही नही, प्राणी मात्र के साथ होनी चाहिये।

८ जीवदया सच्चवयण, परधणपरिवज्जण सुशील च।
खति पचिदियनिग्गहो य धम्मस्स मूलाई ॥
—दर्शनशुद्धितत्त्व

जीव दया, सत्य वचन, पर-धन का त्याग, शील-ब्रह्मचर्य, क्षमा, पाच इन्द्रियो का निग्रह— ये धर्म के मूल हैं।

९ धर्मस्य तत्त्व निहित गुहायाम्। —महाभारत
धर्म का तत्त्व गुफा मे छिपा हुआ है अर्थात् अत्यन्त गूढ है।

१० पन्ना समिक्खए धम्म, तत्त तत्तविणिच्छिय।
—उत्तराध्ययन २३।२५

तत्त्व का निश्चय करनेवाली प्रज्ञा ही धर्म के स्वरूप को देखती है।

११. सत्य शौचमहिसा च, क्षान्तिर्दान दया दमः।
अस्तेयमिन्द्रियाकोच सर्वेषा धर्मसाधनम्॥
—स्कन्दपुराण काशी० पूर्व० ४०।८६

सत्य, शुद्धि, अहिंसा, क्षमा, दान, दया, दम, अचौर्य एव इन्द्रियो का सकोच—ये सभी प्राणियो के लिये धर्म के साधन है।

१२ **धर्म कई तरह से होता है, जैसे :—**
लज्जा से—आषाढाचार्यवत्
भय से—मेतार्यमारक स्वर्णकारवत्
हास्य से—चण्डरुद्रशिष्यवत् तथा साला-बहनोईवत्
मात्सर्य से—सिंहगुफानिवासी साधुवत्
लोभ से—सुहस्तिसूरि-बोधित द्रमकवत्
मान से—दशार्णभद्र-गौतम-सिद्धसेनादिवत
विस्मय से—इलापुत्रवत्
भाव से—भरतचक्रवर्तीवत्
वैराग्य से—जम्बूस्वामीवत्।

## ३२ धर्म के विविध प्रसंग

१ धर्म की वात मे लिहाज नही किया जा सकता। —गाधी

२ मजहव के मामले मे कोई जवर्दस्ती नही होनी चाहिये।
—कुरान २।२५६

३ अत्याचार से कभी धर्म नही वच सकता। —गांधी

४ धर्म की परीक्षा दु ख मे ही होती है। —गांधी

५. धर्मस्य त्वरिता गति ।
धर्म की तीव्र गति है, यह कभी निष्क्रिय नही होता।

६ धर्म-धर्म सब कोई कहे, मर्म न जाणै कोय।
जात न जाणै जीव की, धर्म किसी विध होय ॥

७ अपना उल्लू सीधा करने के लिये शैतान भी धर्म के हवाले दे सकता है। —शेक्सपीयर

८ जैसे कीमती जेवर छिपाकर अन्दर तिजोरियो मे रखा जाता है और कूडा-कर्कट वाहर फेका जाता है, वैसे ही धर्म को गुप्त रखना चाहिये और पापो को सवके सामने दिखा देना चाहिये। पर खेद है कि, लोग पापो को छिपाने की कोशिश करते हैं और धर्म को दिखाने की।

९. लोग कहते है कि अहिसा, सत्य आदि धर्म से काम नही चल सकता तो क्या हिंसा, असत्य आदि पाप से चल सकता है ?

क्या कोई सत्य बोलने का या क्षमा करने का त्याग ले सकता है ?

१० धर्म को तो आज दुनिया ने खिलौना कर लिया।
दूध के बदले मे पानी का बिलौना कर लिया॥

—उपदेश सुमनमाला

मूर्ति के सामने एक पैसा फैंक देने से, गरीब को फटा कपडा या झूठा अन्न देने से किसी सन्यासी को तम्बाकू या गाजा, सुलफा के लिये दो पैसे देने से, गगा-गोमती मे दो-चार गोता लगा लेने से, पीपल को जल पिलाने से या उसकी फेरी लगाने से, तुलसी का एकाध पान चबा लेने से, अगडम-बगडम कुछ जाप कर लेने से, मनो घी अग्नि मे फूक देने से, चीटियो को चून एव बन्दर, गाय, कुत्ता आदि को चने आदि खिला देने से आज दुनिया धर्म मान रही है, किन्तु अज्ञानवश दूध के बदले पानी का बिलौना कर रही है एव धर्म का उपहास कर रही है।

११ पाश्चात्य-सस्कृति अर्थ व काम को मुख्य मानती है एव प्राच्य-सस्कृति धर्म को। इसीलिये पाश्चात्यदेश अर्थप्रधान एव प्राच्यदेश धर्मप्रधान माने जाते हैं। भारत का साधारण ग्राम्य पुरुष भी दो-चार ऐसी धर्म की नयी बातें सुना देगा, जो पहले कभी नही सुनी हो। इसका कारण यहा धर्म साधन है और मोक्ष साध्य है। तथा वहा अर्थ साधन है एव काम साध्य है। यहा धर्मशास्त्र अधिक लिखे गये हैं और वहा अर्थशास्त्र।

१२. धर्मस्थान मे देव और दैनदिन व्यवहार मे राक्षस—यह कैसी धार्मिकता है ?

—आचार्य तुलसी

१३ **धार्मिक एकता का सही मार्ग**—सबके विचारो का एकीकरण सम्भव नही लगता, इसलिये धार्मिक व्यक्तियो मे सहिष्णुता,

सद्‌भावना, आग्रहत्याग, पारस्परिक विचार-विनिमय और मैत्री बढनी चाहिये। —**आचार्य तुलसी**

१४ **अगाध धर्म**—मु ह को वन्द रखना, आख मू द लेना, कान मू द लेना, इन्द्रियो का सयम रखना, कौना-कौना सीधा रखना, तडक-भडक छोड देना, सिधाई-सादगी अपना लेना, धूल की तरह् नम्र बन जाना—इनका नाम है अगाध धर्म।

—**ताओ उपनिषद् ५६**

१५. अनुमतॅअे दअेनयाइ,

अनुख्तअे दअेनयाइ,

अनु-वर्‌शतॅअे दअेनयाइ —**आवां अर्‌द्वी सुर्‌यश्त् १८**

मैं धर्म के अनुसार सोचू, धर्म के अनुसार बोलू और धर्म के अनुसार करू, चलू।

१६. **धर्म का रहस्य**—जो दूसरो को जानता है वह सयाना है। जो अपने को जानता है वह अन्तर्ज्ञानी है।

जो दूसरो को जीतता है वह समर्थ है। जो अपने को जीतता है वह परम समर्थ है। जो सन्तुष्ट है वह श्रीमान् है।

—**ताओ उपनिषद् ३३**

## ३३ सच्चा धर्माचरण

१. शुद्ध धर्माचरण पर धर्माचरण की मुहर नही होती—यही उसकी धर्मशीलता है।
गौणधर्माचरण पर धर्म की छाप रहती है। शुद्धधर्माचरण स्वाभाविक एव गौणधर्माचरण दाव-पेचवाला होता है। धर्म लुप्त होता है तो परोपकार-बुद्धि आती है। परोपकार-बुद्धि लुप्त होती है तो मौका साधने की कला आती है, परन्तु वह धर्माचरण की झूठी नकल है, सत्य की केवल परछाइ है। ज्ञानी सत्य का पल्ला पकडता है, दिखावट का नही।

—ताओ उपनिषद् ३८

२. न भवति धर्म. श्रोतु, सर्वस्यैकान्ततो हितश्रवणात्।
ब्रुवतोऽनुग्रहबुद्ध्या, वक्तुस्त्वेकान्ततो भवति।

—उमास्वाति

श्रोता जन को सब लोगो की बात हितबुद्धि से सुनने के कारण एकान्तरूप से धर्म नही होता। लेकिन अनुग्रहबुद्धि से धर्मोपदेश देनेवाले वक्ता को तो निश्चित रूप से धर्म होता ही है।

३. प्रत्येक धर्म उतना ही सत्य है जितना कि दूसरा धर्म।

—बर्टन

४. आदमी धर्म के लिये झगड़ेगा, उसके लिये लिखेगा,

उसके लिए मरेगा, सब कुछ करेगा, पर, धर्म के लिये जियेगा नही ।

—नेहरूजी

५. **धर्म और सम्प्रदाय**—धर्म एक प्रवाह हैं और सम्प्रदाय उसका बाध । वाध का पानी सिंचाई व अन्य कार्यों के लिये उपयोगी होता है, वैसे ही सम्प्रदाय से धर्म सर्वत्र प्रवाहित होता है । यदि सम्प्रदायो मे कट्टरता, सकीर्णता एव साम्प्रदायिकता आ जाये तो वह स्वार्थसिद्धि का अग बनकर कल्याण के स्थान पर हानिकारक और आपसी सघर्ष पैदा करनेवाला हो जाता है ।

—आचार्य तुलसी

६. आज मत-सम्प्रदाय बढ रहे है , जैसे—

**वैदिक परम्परा मे**—श्रौत, स्मार्त, गाणपत, भागवत, शैव, पाशुपत, माध्व, रामानुज,नारायण, पुष्टिमार्गी, निम्बार्क, सगुण—निर्गुण आदि ।

**बौद्धो मे**—हीनयान, महायान, सौत्रान्तिक, वैभाषिक, माध्यमिक, सिद्धयान, वज्रयान, सहजयान, नाथपथ आदि

**जैनो मे**—दिगम्बर, श्वेताम्वर आदि । फिर दिगम्वरो मे गुमानपथी, वीसपथी, तेरापन्थी, तारणपथी आदि । श्वेताम्वरो मे—देरावासी, स्थानकवासी, तेरापथी आदि।

**इस्लाम मे**—शिया, सुन्नी, कादियानी, सूफी, वाहवी आदि करीव २०० शाखाये है ।

**ईसाइयो मे**—यहूदी, केथोलिक, प्रोटेस्टेन्ट आदि है ।

उपर्युक्त सभी सम्प्रदायो मे प्राय आपसी मतभेद है और एक-दूसरे का खण्डन कर रहे हैं।

७. विश्व के कतिपय धर्म एव उनके अनुयाइयो की सख्या

| | (करोडो मे) |
|---|---|
| ◆ ईसाई धर्म | ८२,००,००,००० |
| ◆ इस्लाम धर्म | ....४१,७०,००,००० |
| ◆ हिन्दू धर्म · | ·· ३१,६०,००,००० |
| ◆ कन्फ्यूशस धर्म | ·३०,००,००,००० |
| ◆ बौद्ध धर्म | १५,००,००,००० |
| ◆ ताओ धर्म | ·· ५,००,००,००० |
| ◆ शिन्तो धर्म | ३,००,००,००० |
| ◆ यहूदी धर्म ·· | · १,२०,००,००० |

—विश्वकोष-४, पृष्ठ ८३

८. सुना है, रूस की राजधानी—मास्को की दिवारो पर—'जनता के लिये धर्म अफीम की गोली है'—ऐसा लिखा हुआ है, यह साम्प्रदायिकता का फल है। अगर धर्म का परिग्रह अफीम है, तो राष्ट्र का परिग्रह क्या शराब नही ?

९. यदि धर्म की उपस्थिति मे भी मनुष्य इतने दुष्ट हैं, तो धर्म की अनुपस्थिति मे न मालूम जनता की क्या दशा होती ?

—फ्रैंकलिन

★

## ३४ धर्मोपदेश किसलिए ?

१. णो अन्नस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, णो पाणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, णो वत्थस्स हेउ धम्ममाइक्खेज्जा णो लेणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, णो सयणस्स हेउ धम्ममाइक्खेज्जा णो अन्नेसिं विरूव-रूवाण काम-भोगाण हेउं धम्ममाइक्खेज्जा अगिलाए धम्ममाइ-क्खेज्जा, नन्नत्थ कम्म-निज्जरट्ठाए धम्ममाइक्खेज्जा।

—सूत्र० श्रु० २ अ० १ सू० १५ से आगे

साधु को अन्न, पानी, वस्त्र, मकान, शयन एव विविध काम-भोगो की प्राप्ति के लिए धर्म उपदेश नही देना चाहिए, केवल कर्मनिर्जरार्थ अग्लानभाव से धर्म कहना चाहिए ।

२. जहा पुण्णस्स कत्थति तहा तुच्छस्स कत्थति, जहा तुच्छस्स कत्थति तहा पुण्णस्स कत्थति ।

—आचारांग २।६

मुनि जिसप्रकार श्रीमन्त को धर्म सुनाता है, उसीप्रकार गरीब को भी सुनाता है, तथा जिसप्रकार गरीव को धर्म सुनाता है उसी प्रकार श्रीमन्त को सुनाता है ।

## ३५ धर्मोपदेश के अधिकारी

१. सखाइ धम्म च वियागरति,
बुद्धा हु ते अतकरा भवति ॥
ते पारगा दोण्हवि मोयणाए,
ससोहिय पण्हमुदाहरति ॥

—सूत्रकृताग १४।१८

जो धर्म को अच्छी तरह समझकर फिर व्याख्यान उपदेश करते हैं, वे ज्ञानी ससार का अन्त करते हैं। वे स्वय मुक्त होकर, दूसरो को भी मुक्त करनेवाले हैं, क्योकि वे सशोधित वाणी बोलते हैं।

२. आयगुत्ते सया दते, छिन्नसोए अणासवे।
जे धम्म सुद्धमक्खाइ, पडिपुन्नमणेलिस ॥

—सूत्रकृताग ११।२४

जो आत्मगुप्त है, सदा इन्द्रिय-दमन करनेवाला है छिन्न-श्रोत एव अनाश्रव है, वही शुद्ध, प्रतिपूर्ण एव अनुपम धर्म बतलाता है।

३ से सुद्ध-सुत्ते उवहाणव च,
धम्म च जे विंदति तत्थ-तत्थ।
आदेज्ज-वक्के कुसले वियत्ते,
स अरिहइ भासिउ त समाहिं ॥

—सूत्रकृताग १४।२७

शुद्ध सूत्रवाला, उपधान—तप करनेवाला, उत्सर्ग-उपवाद रूप धर्म को योग्यता से समझनेवाला, आदेय-वचनवाला, कुशल तथा अर्थ को स्पष्टता से प्रकट करनेवाला—इन गुणो से युक्त साधक ही प्रभु कथित समाधि—साधना का कथन कर सकता है ।

४. आहरणहेउकुसले .. . पभू धम्मस्स आघवित्तए ।

—आचाराग ५।६

उदाहरण एव हेतु देने मे निपुण व्यक्ति ही धर्म का कथन करने मे समर्थ होता है ।

५. सावज्जणवाज्जाण, वयणाण जो न जाणइ निसेस,
वोत्तु पि तस्स न खम, किमग पुण देसण काउं ।

—श्राद्धविधि पृष्ठ १०४

जो सावद्य-निर्वद्य वचनो का रहस्य न समझ सके उसे बोलना भी योग्य नही है, फिर उपदेश-व्याख्यान देना योग्य हो ही कहा से ?

## ३६ विधि-अविधि से किया हुआ धर्म

१. जह भोयणमविहिकय, विणासए विहिकय जोयावेइ।
तह अविहिकओ धम्मो, देइ भव विहिकओ मुक्ख।

—सबोधसत्तरी ३५

जैसे अविधि से किया हुआ भोजन मारता है और विधिपूर्वक किया हुआ जीवन देता है, उसी प्रकार अविधि से किया हुआ धर्म ससार मे भटकाता है एव विधिपूर्वक किया हुआ धर्म मोक्ष देता है।

२ विस तु पीय जह कालकूड,
हणाइ सत्थ जह कुग्गहीय।
एसो वि धम्मो, विसओववन्नो,
हणाइ वेयाल इवाविवन्नो॥

—उत्तराध्ययन २०।४४

जैसे पीया हुआ कालकूट-विष और उलटा पकडा हुआ शस्त्र अपना ही घातक होता है, उसी प्रकार शब्दादि विषयो की पूर्ति के लिये किया हुआ धर्म भी अनियन्त्रित-वेतालवत् साधक को मार डालता है।

३ धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षित।

—मनुस्मृति ८।१५

धर्म को रखनेवाले की धर्म रक्षा करता है और नाश करनेवाले का नाश करता है।

★

# स्वधर्म-परधर्म

१. श्रेयान् स्वधर्मो विगुण., परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधन श्रेय:, परधर्मो भयावह् ।।

—गीता ३।३५

अच्छे अनुष्ठान वाले परधर्म की अपेक्षा अपना गुण-शून्य धर्म भी अच्छा है । अपने धर्म मे मरना भी अच्छा है, क्योकि पर-धर्म भयावह्—खतरनाक है ।

२. वर स्वधर्मो विगुणो, न पारक्य स्वनुष्ठितः ।
परधर्मेण जीवन् हि, सद्यः पतति जातित. ।।

—महाभारत १०।६७

अपना निर्गुण धर्म भी अच्छा है, दूसरो का अच्छे अनुष्ठान वाला भी ठीक नही । परधर्म से जीनेवाला व्यक्ति शीघ्र ही अपनी जाति से गिर जाता है ।

---

टिप्पणी—गीता एव महाभारत के इन दोनो श्लोको का भाव प्रायः एक ही है । आज इन्ही का सहारा लेकर कई विद्वान् कह देते हैं कि जैनियो के पास मत जाओ क्योकि जैनधर्म परधर्म है । भविष्यपुराण मे यहा तक लिख दिया गया है कि—

**गजैरापीडचमानोऽपि, न गच्छेज्जैनमन्दिरम् ।**

अर्थात् एक तरफ मदोन्मत्त हाथी आता हो एव एक तरफ जैन-मन्दिर हो तो हाथी के पैरो के नीचे आकर मर जाना चाहिये लेकिन जैनमन्दिर मे कभी नही जाना चाहिये ।

वास्तव मे गीता-महाभारत मे ये श्लोक उस जगह कहे गये हैं, जिस समय गोत्रहत्या के भय से अर्जुन ने लडने का विचार छोड दिया था। वहा जैनधर्म या वैष्णवधर्म का प्रश्न ही नही है, मात्र अर्जुन को युद्धार्थ उत्साहित करने के लिये कृष्ण कह रहे है कि यद्यपि ब्राह्मणधर्म की अपेक्षा क्षत्रियधर्म विगुण-गुणहीन है फिर भी तुझे उसमे मरना अच्छा है अर्थात् तेरे लिये युद्ध करना ही श्रेयस्कर है।

- अध्यात्मदृष्टि से **स्वधर्म** का अर्थ **आत्मधर्म** है। ज्ञान-दर्शन-चारित्र आदि आत्मा के धर्म हैं। ये निगुण यानी सत्व-गुण, रजो गुण और तमोगुण से रहित हैं, इनमे लीन होकर मरना अच्छा है किन्तु **परधर्म—काम-क्रोध-लोभ** आदि जिनकी क्रियाये मोह के उदय से प्रिय लगती हैं वे खतरनाक हैं, अर्थात् आत्मा को डुबाने वाली हैं।

३ आदा धम्मो मुणेदव्वो। —**प्रवचनसार १।८**

आत्मा ही धर्म है, अर्थात धर्म—आत्मस्वरूप होता है।

१ धम्मविउ उज्जू । —आचाराग ३।१

श्रुत-चारित्ररूप धर्म को समझनेवाला सरल होता है ।

२. धार्मिक के तीन आदर्श है—

स्वधर्म पर प्रेम, पर धर्म पर तितिक्षा, अधर्म पर उपेक्षा ।

३ सर्वेषा य· सुहृन्नित्य, सर्वेषा च हिते रत ।
कर्मणा मनसा वाचा, स धर्म वेद जाजले ! —महाभारत

हे जाजलि ! जो सदा सबका मित्र है और मन-वचन-काया से सभी के हित मे अनुरक्त है, वास्तव मे धर्म को उसी ने जाना है।

४. जो धर्म की वहुत-सी प्रवृत्तियो मे से एक प्रवृत्ति मानता है, वह धर्म को जानता ही नही । —गांधी

५. दश धर्मं न जानन्ति, धृतराष्ट्र ! निवोध तान् ।
मत्त प्रमत्त उन्मत्त, श्रान्त क्रुद्धो बुभुक्षितः ।
त्वरमाणश्च लुब्धश्च, भीतः कामी च ते दश।
—विदुरनीति १।१०६-१०७

हे धृतराष्ट्र ! दस व्यक्ति धर्म को नही जान पाते उन्हे समझो (१) मदिरा से उन्मत्त, (२) प्रमादी, (३) मृगी आदि रोग से मूर्च्छित, (४) खेदखिन्न, (५) क्रुद्ध, (६) भूखा (७) जल्दवाज (८) लोभी, (६) भयभीत, (१०) काम मे गृद्ध ।

६. वावत्तरिकला-कुसला, पडियपुरिसा अपडिया चेव ।
सव्वकलाण पवर, जे धम्मकल न जाणति ॥

वे वहत्तर कलाओ के जानकार पडित पुरुप भी अपडित ही हैं जो सव कलाओ मे श्रेष्ठ धर्मकला को नही जानते । ☆

## ३६ धर्मी

१. सच्चे धर्मी इस दुनिया मे यदि हैं, तो विरले हैं कोई।

—उपदेशसुमनमाला

सच्चा धर्मी वही है—जो एकान्त मे भी पाप नही करता, वही है जो मार सकने पर भी नही मारता, वही है, जो सिर कटने पर भी झूठ नही बोलता, वही है, जो रास्ते मे पडे रत्नो को भी नही उठाता, वही है, जो निन्दा-स्तुति मे रुष्ट-तुष्ट नही होता, वही है, जो पर-देशो मे भी अपने धर्म को नही भूलता, वही है, जो नवयौवना स्त्री को देखकर भी मन को विकृत नही होने देता। श्रीमद् राजचन्द्र ने कहा है—

**निरखी ने नवयोवना, लेश न विषय-निदान।**
**गणे काष्ठनी पूतली, ते भगवान समान॥**

२ जीवन्त मृतवन्मन्ये, देहिन धर्मवर्जितम्।
मृतो धर्मेण सयुक्तो, दीर्घजीवी न सशय ॥

—चाणक्यनीति १३।८

धर्मरहित जीवित मनुष्य को मैं मृतकतुल्य समझता हूँ और धर्मयुक्त मृतक को नि:सन्देह चिरजीवी।

३ धम्मे अणुज्जुत्तो सीयलो, उज्जुत्तो उण्हो।

—आचाराग चूर्णि १।३।१

धर्म मे उद्यमी—क्रियाशील व्यक्ति उष्ण—गर्म है, उद्यमहीन शीतल अर्थात् ठडा है।

४. तव-नियमसुट्ठियाण, कल्लाण जीवियपि मरण पि।
जीवतज्जति गुणा, मया पुण सुग्गइ जति ॥

—उपदेशमाला ४४३

तप-नियम रूप धर्म मे रहे हुये जीवो का जीना और मरना दोनो ही अच्छे है। जीवित रहकर तो वे गुणो का अर्जन करते हैं और मरने पर सद्‌गति को प्राप्त होते हैं।

५ एक धर्मी अनेक पापियो को बचाये रखता है। जैसे—
२१ व्यक्ति बाग मे गये, एक को अलग करते ही बीसो पर बिजली पड गई।

६. अस्ति रत्नमनागस.। —ऋग्वेद ८६।७।३

निष्पाप मनुष्य के निकट रत्न स्वय उपस्थित हो जाते हैं।

७. धर्मे धर्मोपदेष्टारः, साक्षिमात्र शुभात्मनाम्।

—त्रिषष्ठिशलाका० २।३

धर्मात्माओ को धर्म मे प्रेरित करने के लिये उपदेशक साक्षिमात्र ही होते है।

# ४० दृढ़धर्मियों के उदाहरण

१. हकीकतराय—

स्यालकोट मे एक मुसलमान विद्यार्थी ने कहा—सीता ऐसी थी—वैसी थी आदि। हकीकत ने तुरन्त जबाव दिया—जैसी मुहम्मद की लडकी फतिया थी, वैसी ही जनक की पुत्री सीता थी। लडाई हो गयी। मौलवी साहब ने हकीकत को खूब पीटा। काजी साहब ने आदेश दिया—इसको मुसलमान बना दो, अगर न बने तो इसका सिर उडा दो।

हाकिम ने मृत्युदड नही दिया, पर लाहौर मे सूबेदार ने सिर कटवा दिया। बच्चा हँसता-हँसता मर गया पर धर्म न छोडा। —कल्याण बालक अक

२. गुरु तेगबहादुर—

औरगजेब बादशाह ने अनेक हिन्दुओ को जबरन मुसलमान बनाया। गुरु गोविन्दसिंह के पिता गुरु-तेगबहादुर ने दिल्ली मे अपने प्राणो की बलि देकर हिन्दू-जगत को जागृत किया। गुरु गोविन्दसिंह के दो पुत्र भी मार डाले गये पर उन बच्चो ने अपना धर्म नही छोड़ा।

३ जिनदास श्रावक के देव-निमित्त से पाच पुत्र मारे गये फिर भी जिनदास ने धर्म नही छोडा।

४. कामदेव एव अर्हन्नक श्रावक को देवता ने भीषण उपसर्ग दिये, पर वे अडिग रहे।

५ सुभद्रा सती को धर्म छोड़ने के लिए उसके पति और सास आदि ने वहुत कष्ट दिये, पर वह अपने धर्म से नही डिगी।

## ४१ धर्म के ठेकेदार

( १ )

आज बहारो ने गुलिस्ता को लूटने की कोशिश की है,
और सितारो ने आसमा को लूटने की कोशिश की है,
धर्म अब सम्प्रदाय की दीवारे तोड इन्कलाव चाहता है,
क्योकि ठेकेदारो ने भगवान् को लूटने की कोशिश की है।

( २ )

देश को दुश्मनो से नही,
आज गद्दारो से खतरा हो रहा है,
खजाने को चोरो से नही,
पहरेदारो से खतरा हो रहा है,
धर्म की सुरक्षा के लिए,
आज बहुत सावधानी की जरूरत है,
उसे नास्तिको से नही,
ठेकेदारो से खतरा हो रहा है।

( ३ )

कॅरट के अधिक दवाव से
वल्व का तार भी जल जाता है,

३. जिनदास श्रावक के देव-निमित्त से पांच पुत्र मारे गये फिर भी जिनदास ने धर्म नही छोड़ा।

४. कामदेव एवं अर्हन्नक श्रावक को देवता ने भीषण उपसर्ग दिये, पर वे अडिग रहे।

५ सुभद्रा सती को धर्म छोड़ने के लिए उसके पति और सास आदि ने बहुत कष्ट दिये, पर वह अपने धर्म से नही डिगी।

४१ 

# धर्म के ठेकेदार

( १ )

आज बहारो ने गुलिस्ता को लूटने की कोशिश की है,
और सितारो ने आसमा को लूटने की कोशिश की है,
धर्म अब सम्प्रदाय की दीवारें तोड़ इन्कलाब चाहता है,
क्योकि ठेकेदारो ने भगवान् को लूटने की कोशिश की है।

( २ )

देश को दुश्मनो से नही,
आज गद्दारो से खतरा हो रहा है,
खजाने को चोरो से नही,
पहरेदारो से खतरा हो रहा है,
धर्म की सुरक्षा के लिए,
आज बहुत सावधानी की जरूरत है,
उसे नास्तिको से नही,
ठेकेदारो से खतरा हो रहा है।

( ३ )

कॅरट के अधिक दबाव से
बल्ब का तार भी जल जाता है,

आग के अधिक उत्ताप से
फौलाद भी पिघल जाता है,
धर्म के अधिक नजदीक
रहने वालो का जीवन देखकर,
लगता है, उनके मन से
पाप का डर निकल जाता है।

(४)

यदि सितारो ने बगावत कर दी
तो अम्बर का क्या होगा ?
यदि किनारो ने बगावत कर दी
तो समन्दर का क्या होगा ?
धर्म की आड़ लेकर गरीबो को
दिन-दहाडे ठगनेवालो !
यदि इन्सान ने बगावत कर दी
तो पैगम्बर का क्या होगा ?

(५)

मैं यह नही पूछता कि आपने
राम का नाम कितनी वार लिया है,
और यह भी नही पूछता कि
आपने दान-पुण्य कितना किया है,
मुझे तो यह वताएँ कि आपने
धर्म और भगवान के नाम पर

आज तक भोले इन्सान को
धोखा कितनी बार दिया है ?

( ६ )

धर्म की प्राण-प्रतिष्ठा के लिए
सबसे पहले बिछुडे दिलो को जोडना होगा,
जाति, सम्प्रदाय और ऊँच-नीच के
इन झूठे घेरो को तोड़ना होगा,
सत्य की हानि से सचमुच ही
दिलो मे दर्द है यदि, धर्म के ठेकेदारो !
तो इस सामन्तशाही ठाट-बाट को
और मठो-मन्दिरो के मोह को छोडना होगा।

—'खुले आकाश मे' से

आग के अधिक उत्ताप से
फौलाद भी पिघल जाता है,
धर्म के अधिक नजदीक
रहने वालों का जीवन देखकर,
लगता है, उनके मन से
पाप का डर निकल जाता है।

(४)

यदि सितारो ने बगावत कर दी
तो अम्बर का क्या होगा ?
यदि किनारो ने बगावत कर दी
तो समन्दर का क्या होगा ?
धर्म की आड लेकर गरीबो को
दिन-दहाड़े ठगनेवालो !
यदि इन्सान ने बगावत कर दी
तो पैगम्बर का क्या होगा ?

(५)

मैं यह नही पूछता कि आपने
राम का नाम कितनी बार लिया है,
और यह भी नही पूछता कि
आपने दान-पुण्य कितना किया है,
मुझे तो यह बताएँ कि आपने
धर्म और भगवान के नाम पर

५ अधर्मप्रभव चैव, दु.खयोग शरीरिणाम् ।

—मनुस्मृति ६।६४

जो दु ख का सयोग होता है वह अधर्म के प्रभाव से होता है ।

६. अहम्म कुणमाणस्स, अफला जति राइओ ।

—उत्तराध्ययन १४।२४

अधर्म करनेवाले प्राणी के दिनरात निष्फल-व्यर्थ जाते हैं ।

# तीसरा कोष्ठक

## १ अधर्म

१. नाऽधर्मश्चिरमृद्धये । —कथासरित्सागर

अधर्म से स्थायी समृद्धि नही मिलती।

२. अधर्मेणैधते तावत् ततो भद्राणि पश्यति ।
तत: सपत्नान्जयति, समूलस्तु विनश्यति ।।

—मनुस्मृति ४।१७४

अधर्मी पहले अधर्म से बढता है फिर, उससे अपना भला देखता है फिर शत्रुओ को जीतता है किन्तु अन्त मे समूल नष्ट हो जाता है।

३. अधर्मविषवृक्षस्य, पच्यते स्वादु किं फलम् ।

अधर्मरूपी विष वृक्ष के कडुवे फल क्या पकाये जाने पर कभी मीठे हो सकते हैं ?

४. दारिद्ररोगदु:खानि, बन्धनव्यसनानि च ।
आत्मापराधवृक्षस्य फलान्येतानि देहिनाम् ।।

—चाणक्यनीति १४।२

दरिद्रता, रोग, दु ख, बन्धन और कुसस्कार, ये सब प्राणियो के अधर्मरूपी वृक्ष के फल हैं।

आदतन किया जाता है, फिर उसकी जड जम जाती है, फिर आदमी गुस्ताख हो जाता है, फिर हठी, फिर वह कभी न पछताने का मकसद कर लेता है और फिर वह तवाह हो जाता है। —लीटन

११. एक पाप दूसरे पाप के लिए दरवाजा खोल देता है।

१२ एक पाप को दो वार कर दो, वस वह अपराध नही मालूम देगा। —तालमुद

१३. पाप की पहचान मुक्ति की शुरूआत है। —लूथर

पाप की स्वीकृति मुक्ति का श्रीगणेश है। „

१४ छुडवाया जाता नही, वलपूर्वक कोई पाप।
धीरे से धोया हुआ, कपडा होता साफ।
—चन्दनमुनि

१५ धमकियो और सज़ाओ से पाप को नही रोका जा सकता। —रामतीर्थ

१६ जव तक पाप पकता नही, तव तक मीठा लगता है, जव फलने लगता है तव दु ख देता है। —बुद्ध

१७ पावे कम्मे जे य कडे, जे य कज्जई, जे य कज्जिस्सई, सव्वे से दुक्खे। —भगवती सूत्र ७।८

प्राणियो द्वारा जो पाप कर्म किया गया है, किया जा रहा है एव किया जायेगा वह सारा दु ख हेतु अर्थात् ससार मे परि-भ्रमण का कारण है।

★

## २ पाप

१. अशुभ कर्म पापम् । —जैनसिद्धान्तदीपिका ४।१५

अशुभ कर्म को पाप कहते हैं ।

२. पातयति नरकादिष्विति पापम् ।

—आवश्यक-४

नरकादि दुर्गतियो मे पटकता है अत. पाप है ।

३. पासयति पातयति वा पाप । —उत्तराध्ययन-चूर्णि २

जो आत्मा को बाधता है, अथवा गिराता है, वह पाप है ।

४. पाप की चर्चा भी पाप है ।

५. पाप क्या है ? जो दिल मे खटके । —मुहम्मद

६. संसार मे पाप और कुछ भी नही है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का ही दूसरा नाम है ।

—भगवतीचरण वर्मा

७. पापकर्म को अन्धेरे की जरूरत होती है । —गांधी

८. पाप का प्रारम्भ प्रात काल की तरह चमकदार है, लेकिन उसका अन्त रात्री की तरह अन्धकारपूर्ण होता है ।

—टालमेज

९. पाप की उत्पत्ति लोभ से होती है ।

१०. पाप पहले मजेदार लगता है, फिर आसान हो जाता है, फिर हर्षदायक, फिर बारबार किया जाता है, फिर

६. पाप छिपायो ना छिपे, छिपे तो मोटा भाग।
दावी-दूवी ना रहै, रुई लपेटी आग ।।

७ पाडिचेरी जब फ्रास मे था तो वहा सोने का भाव ३५) रुपया प्रति तोला था और भारत मे १००) रुपया प्रति तोला। एक भारतीय ने १० तोला सोना खरीदा। एक तरवूज मे टाकी लगाकर, उसमे छिपाकर ज्योही रेल चढने लगा उसका छोटा बच्चा तरवूज लेने का आग्रह करने लगा। विवश होकर यात्री ने तरवूज उसके हाथ मे दे दिया। खुश-खुश बच्चा उसे लेकर गाडो पर चढने लगा। तरवूज हाथ से छूट गया एव प्लेटफार्म पर गिर कर फूट गया। पुलिस आयी एव यात्री पकडा गया।

८ ए पिचर दैट ऑफन गोज टु दी वैल ब्रेक्स एट लास्ट।
—अग्रेजी कहावत

पाप का घडा फूटे विना नही रहता।

९ पाप पीपले चढी ने पोकारे। —गुजराती कहावत

१०. पापिया रै उपरलो पानो न आवै।
— राजस्थानी कहावत

## ३ पाप को छिपाओ मत !

१ कृत्वा पाप न गूहेत, गूह्मान विवर्धते ।

—शङ्खस्मृति

पाप करके उसे छिपाओ मत । छिपाया हुआ पाप प्रत्युत बढ़ता है ।

२. छन्नमतिवस्सति विवट नातिवस्सति ।
तस्मा छन्न विवरेथ, एव त नातिवस्सति ॥

—उदान ५।५

छिपा हुआ (पाप) लगा रहता है, खुलने पर नही लगा रहता । इसलिये छिपे पाप को खोल दो, आत्मालोचन के रूप मे प्रकट कर दो, फिर वह नही लगा रहेगा ।

३. अपने पापो पर पर्दा डालना अपने भविष्य पर पर्दा डालना है ।

४. कड कडेत्ति भासेज्जा, अकड नो कडेत्ति य ।

—उत्तराध्ययन १।११

पूछने पर किये हुए पाप को छिपाना नही चाहिए । किया हो तो किया कहना एव नही किया हो तो नही किया—ऐसा कहना ।

५. छाद्यमानमपि प्राय:, कुकर्म स्फुटति स्वयम् ।

—शुभचन्द्राचार्य

कुकर्म को चाहे कितना ही छिपाया जाय प्राय: वह अपने आप प्रकट हो जाता है ।

६. पाप छिपायो ना छिपे, छिपै तो मोटा भाग।
दावी-दूवी ना रहै, रुई लपेटी आग।।

७ पाडिचेरी जब फ्रास मे था तो वहा सोने का भाव ३५) रुपया प्रति तोला था और भारत मे १००) रुपया प्रति तोला। एक भारतीय ने १० तोला सोना खरीदा। एक तरबूज मे टाकी लगाकर, उसमे छिपाकर ज्योही रेल चढने लगा उसका छोटा बच्चा तरबूज लेने का आग्रह करने लगा। विवश होकर यात्री ने तरबूज उसके हाथ मे दे दिया। खुश-खुश बच्चा उसे लेकर गाडी पर चढने लगा। तरबूज हाथ से छूट गया एव प्लेटफार्म पर गिर कर फूट गया। पुलिस आयी एव यात्री पकड़ा गया।

८ ए पिचर दैट ऑफन गोज टु दी वैल ब्रेक्स एट लास्ट।
—अंग्रेजी कहावत

पाप का घडा फूटे बिना नही रहता।

९ पाप पीपले चढी ने पोकारे। —गुजराती कहावत

१०. पापिया रै उपरलो पानो न आवै।
— राजस्थानी कहावत

## ४ महापाप

१. अन्यस्थाने कृत पाप. धर्मस्थाने विमुच्यते ।
धर्मस्थाने कृत पाप, वज्रलेपो भविष्यति ।।

अन्यस्थान मे किया हुआ पाप धर्मस्थान का सपर्क साधने से छूट जाता है, लेकिन धर्मस्थान मे किया हुआ पाप तो वज्रलेप हो जाया करता है ।

२. ब्रह्महत्या सुरापान, स्तेय गुर्वङ्गनागम. ।
महान्ति पातकान्याहु., ससर्गश्चापि तै सह ।।
—मनुस्मृति ११।५४

ब्रह्महत्या, मदिरापान, सुवर्ण आदि की चोरी, गुरुस्त्री-गमन और इन पापो के करनेवालो के साथ ससर्ग—ये बडे भारी पातक हैं ।

३. मानव मे अन्याय, बेईमानी या खुदगर्जी से बड़ा कोई पाप नही ।

४. त्रीणि पातकानि सद्यः फलन्ति—स्वामिद्रोह स्त्रीवधो बालवधश्चेति । —नीतिवाक्यामृत २७।६५

स्वामीवध, स्त्रीवध और बच्चे का वध—ये तीन महापाप है, जिनका कुफल मनुष्य को इसीलोक मे तत्काल भोगना पड़ता है ।

५. छिपकर पाप करना कायरता है और खुलकर पाप करना बेहयाई (निर्लज्जता) है ।

६ दूसरों के पाप हमारी आखों के सामने रहते है और खुद के पीठ-पीछे।

—सेनेका

७ पाप करने से पहले सोचने वाले—ज्ञानी है।
पाप करके सोचने वाले—अज्ञानी हैं और
कभी नही सोचने वाले—दुष्ट है।

—फलर

## ५ पापी

१. पापी पापेन पच्यते । —सुभाषितसंचय

पापी अपने पाप से ही दु खी होता है ।

२. पडति नरए घोरे, जे नरा पावकारिणो ।

—उत्तराध्ययन १८।२५

जो मनुष्य पाप करते है वे घोर नरक मे जाते हैं ।

३. थणति लुप्पति तसति कम्मी । —सूत्र० ७।२०

जो प्राणी दुष्कर्म—पाप करते हैं, उन्हे रोना पडता है, दु ख भोगना पडता है और भयभीत होना पडता है ।

४. शुष्क-श्याममुखतावाक्स्तम्भः स्वेदो विजृम्भण अतिमात्र-वेपथु: प्रस्खलनमास्यप्रेक्षणमावेग. कर्मणि भूमौ वाऽनवस्थानमिति दुष्कृतकृत: करिष्यतो वा लिङ्गानि ।

—नीतिवाक्यामृत १५।२५

मुख सूखा एव श्याम होना, वाणी की जडता, पसीना निकलना, उबासी आना, पुन पुन कापना, स्खलित होना, दूसरो का मुह देखना, कार्य मे व्याकुलता, भूमि पर नही ठहर सकना—ये नौ लक्षण उस व्यक्ति के है, जिसने पाप किया है अथवा करनेवाला है ।

५. य सकृत् पातक कुर्यात्, कुर्यादेनत् ततोपरम् ।

—ऐतरेयब्राह्मण ७।१७

जो एकबार पाप कर लेता है वह फिर दूसरे पाप में प्रवृत्त होने लगता है।

६ खण्डीकृतोऽपि पापात्मा, पापान्नैव निवर्त्तते।

—सूक्तरत्नावली

काफी कुछ फटकार देने पर भी पापी पापो से नही हटता।

७. अहिय मरण अहिय, जीविय पावकम्मकारीण।
तमिसम्मि पडति मया, वेर वड्ढति जीवता ॥

—उपदेशमाला ४४४

पापियो का जीना और मरना—दोनो अहितकारी हैं, क्योकि वे मरने पर अन्धकार—दुर्गति मे पडते हैं और जीवित रहकर प्राणियो के साथ वैर वढाते हैं।

८ वादशाहजहागीर के पूछने पर मौलवी कुतुव्बुदीन ने कहा—
काते-उल-शजर=वड, पीपल आदि हरे वृक्ष को काटनेवाला,
वाय-उल-वशर=मनुष्य को वेचनेवाला,
जावेह-उल-बकर=गाय को मारनेवाला,
लामेह-उल-खमर=किसी की स्त्री के साथ कुकर्म करनेवाला।
ये चारो पाप करनेवाले कभी नही वख्शे जायेंगे। उपर्युक्त कथन 'हदीस-शरीफ' मे हैं। —कल्याण गीताक, २२७ से उद्धृत

९ जिनकी आत्माये छोटी हैं, अक्सर वे ही वडे-वडे पापो के निर्माता होते हैं। —गेटे

१० एक पापी सारी नाव को डूवो देता है। —गाधी

११ ले डूवता है एक पापी, नाव को मझधार मे।

—मैथिलीशरण गुप्त

१२. गोहिरा रै पाप सू पीपलो वलै। —राजस्थानी कहावत

## ६ पाप-निवृत्ति का उपदेश

१ पावकम्म नेव कुज्जा, न कारवेज्जा। —आचारांग २।६

पाप कर्म न तो करना चाहिये और न दूसरे से करवाना चाहिये।

२ पावाउ अप्पाण निवट्टएज्जा। —सूत्रकृतांग १०।२१

पापों से आत्मा को हटा लो।

३. से जाणमजाण वा, कट्टु आहम्मियं पयं।
संवरे खिप्पमप्पाण, वीय तं न समायरे॥
—दशवैकालिक ८।२

विवेकी पुरुष जान-अनजान में कोई पाप कर बैठे तो अपनी आत्मा को शीघ्र उससे मोडे और दुबारा फिर ऐसा न करे।

४. पाणी न हंतव्वो, अदिन्न नादातव्व, कामेसु मुच्छा न चरियव्वा, मुसा न भासियव्वा, मज्ज न पातव्व।
—बुद्ध के पंचशील

(१) प्राणी को मत मारो (२) अदत्त मत लो (३) कामविकार में आसक्ति मत रखो (४) झूठ मत बोलो (५) मद्यपान मत करो।

५. पांच पाप छोडो—(१) माता पिता के प्रति उदासीनता (२) जूआ और मदिरापान (३) धन-सम्पत्ति को महत्त्व देना (४) शारीरिक भोग-विलास में पडना (५) निरर्थक वीरता दिखाना-लडाई-झगडा करना। —मैनशियस्

६ मानव ! बाहरी और भीतरी पाप छोड़ दे। जो लोग पाप कमाते है उन्हे उनकी करतूत का बदला अवश्य मिलेगा। —कुरान० ६।१२०

७ पाप के काटो को बुहार सकते हो तो बुहारो, अन्यथा बिछाओ मत !

८. पाप को याद करके जिन्दगी उसके हवाले मत कर दो। —एनीबिसेंट

९. मृत्यु से भागने की अपेक्षा पाप से भागना कही अच्छा है। —टामस केम्पिस

१०. पाप मे फसनेवाला मानव है, उस पर खेद प्रकट करने वाला देवता है और घमण्ड करनेवाला दानव है। —थामस फुलर

११. पाप से घृणा करो, पापी से नहो। —गाधी

१२. राजदण्डभयात् पाप, नाचरत्यधमो जन ।
परलोकभयाद् मध्य , स्वभावादेव चोत्तम ॥

अधम पुरुप राजदड के भय से, मध्यमपुरुप परलोक के भय से और उत्तम पुरुप स्वभाव से ही पाप नही करता।

१३ जे णिव्वुया पावेहि कम्मेहि अनियाणा ते वियाहिया। —आचाराङ्ग ४।३

जो पाप कर्म से निवृत्त हो गये है, वे अनिदान अर्थात् अपने तप-नियम के बदले पौद्गलिक सुखो को नही चाहनेवाले कहे गये है।

*

## ७ पाप का पश्चात्ताप

१. ख्यापनेनानुतापेन, तपसाऽध्ययनेन च।
पापकृन्मुच्यते पापात्, तथा दानेन चापदि ॥

—मनुस्मृति ११।२२७

अपने पापो को प्रकट करने से, पछताने से, तप से, वेद के अध्ययन से और आपत्ति के समय दान देने से पापी अपने पाप से छूट जाता है।

२. यथा-यथा नरोऽधर्मं, स्वय कृत्वानुभाषते।
तथा-तथा त्वचेवाहि स्तेनाधर्मेण मुच्यते ॥

—मनुस्मृति ११।२२८

मनुष्य पाप करके जैसे-जैसे स्वय प्रकट करता है वैसे-वैसे ही उस अधर्म से इस प्रकार छूटता है जैसे कि सर्प काचली से।

३. कृत्वा पाप हि सतप्य, तस्मात्पापात्प्रमुच्यते।
नैव कुर्यां पुनरिति, निवृत्त्या पूयते तु स ॥

—मनुस्मृति ११।२३०

पाप करके पछताने से मनुष्य उस पाप से छूट जाता है और "फिर ऐसा न करूगा" इस निवृत्तिरूप सकल्प से तो वह पवित्र हो जाता है।

४. पच्छाणुतावेण विरज्जमाणे करणगुण-सेढि पडिवज्जइ।

—उत्तराध्ययन २६।६

कृतपाप के पश्चात्ताप से जीव वैराग्यवन होकर क्षपकश्रेणी प्राप्त करता है।

५ जो भूल से की गई बुराई का पश्चात्ताप करते हैं और अपने को सुधारते हैं, सचमुच अल्लाह उन्हे माफकर देता है। —कुरान० १६।११६

६ तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा त जहा—अहो ण मए··· णो बहुसुए अहीए · णो दीहे सामन्नपरियाए अणुपालिए · णो विशुद्ध-चरित्ते फासिए । —स्थानाग ३।३।१७८

तीन कारणो से देवता पश्चात्ताप करते हैं—अहो ! मैंने विशेप श्रुतज्ञान नही पढा, अधिक सयम नही पाला एव विशुद्ध चारित्र का स्पर्श नहीं किया।

७. तीन व्यक्ति पश्चात्ताप करते है—

१. बचपन मे ज्ञानार्जन नही करनेवाले।

२ जवानी मे धनार्जन नही करनेवाले।

३ बुढापे मे पुण्यार्जन नही करनेवाले।

# ८ पाप के प्रकार

१ तीन प्रकार के पाप :—

परद्रव्येष्वभिध्यानं, मनसानिष्टचिन्तनम् ।
वितथाभिनिवेशश्च, त्रिविधं कर्म मानसम् ॥
पारुष्यमनृतं चैव, पैशुन्यं चापि सर्वशः ।
असम्बद्धप्रलापश्च, वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम् ॥
अदत्तानामुपादानं, हिंसा चैवाविधानतः ।
परदारोपसेवा च, शारीरं त्रिविधं स्मृतम् ॥

—मनुस्मृति १२।५-६-७

पाप कर्म तीन प्रकार के है—मानसिक, वाचिक, कायिक ।

मानसिक—पाप कर्म तीन प्रकार का है—पराया धन अन्याय मे लेने की चिन्ता, मन से अनिष्ट की चिन्ता और परलोक नही है, यह शरीर ही आत्मा है—ऐसा मिथ्या आग्रह ।

वाचिक—पापकर्म चार प्रकार का है—कठोर वचन, असत्य-वचन, पीठ पीछे चुगली खाना और बिना मतलब बकवाद करना ।

कायिक—पापकर्म तीन प्रकार का है—बिना दिया हुआ धन लेना, अवैधानिक हिंसा करना और परस्त्रीगमन करना ।

२ शरीरजै कर्मदोषै - र्याति स्थावरता नर ।
वाचिकै पक्षिमृगता, मानसैरन्त्यजातिताम् ॥

—मनुस्मृति १२।९

शारीरिक पाप से मनुष्य स्थावरयोनि, वाचिक पाप से पशु-पक्षी की योनि और मानसिक पाप से चण्डाल आदि की योनि प्राप्त करता है।

३. पाणाइवायमलियं, चोरिक्कं मेहुणं दवियमुच्छं।
कोहं माणं मायं, लोभं पिज्जं तहा दोसं॥
कलहं अब्भक्खाणं, पेसुन्नं रइ-अरइसमाउत्तं।
परपरिवायं माय-मोसं मिच्छत्तसल्लं च॥

—आवश्यक सूत्र ४

(१) प्राणातिपात—हिंसा (२) झूठ (३) चोरी (४) मैथुन (५) द्रव्य-मूर्च्छा (परिग्रह) (६) क्रोध (७) मान (८) माया (९) लोभ (१०) राग (११) द्वेष (१२) कलह (१३) दोषारोपण (१४) चुगली (१५) असंयम में रति (सुख) और संयम में अरति (असुख) (१६) परनिन्दा (१७) कपटपूर्ण झूठ (१८) मिथ्यादर्शन रूप शल्य—ये अठारह प्रकार के पाप हैं।

# ६ पाप-बन्ध

१. जीवाण दोहि ठाणेहि पावकम्म बधइ, त जहा—रागेण चेव, दोसेण चेव । —स्थानाग २।४

जीव दो कारणों से पाप कर्म बाधते है—राग से और द्वेष से ।

२ नवविहा पावस्सायथयणा-पण्णत्ता त जहा—पाणाइवाए जाव परिग्गहे । कोहे-माणे-माया-लोहे । —स्थानाग ६

पापबन्ध के नव हेतु है । यथा—प्राणातिपात यावत् परिग्रह तथा क्रोध, मान, माया और लोभ ।

३ अजय चरमाणो[1] य, पाण-भूयाइ हिसइ ।
बधइ पावय कम्म त से होइ कडुय फल ॥
—दशवैकालिक ४

अयत्न से चलता (ठहरता, बैठता, सोता, खाता, बोलता) हुआ व्यक्ति प्राण-भूतों की हिंसा करता है । उससे पापकर्म का बंध होता है । वह उसके लिये कटुफलवाला होता है ।

४ जय चरे जय चिट्ठे, जयमासे जय सए ।
जय भुजतो भासतो, पाव कम्म न बधइ ॥
—दशवैकालिक ४।८

यतनापूर्वक चलने, यतनापूर्वक खड़ा होने, यतनापूर्वक बैठने

---

१ चिट्ठ-आस-सय-भुंज-भास ।

यतनापूर्वक सोने, यतनापूर्वक खाने और यतनापूर्वक बोलने वाला पाप कर्म का बन्धन नही करता।

५. मरदु व जियदु व जीवो, अयदाचारस्स णिच्छिदा हिंसा।
मयदस्स णत्थि बधो, हिंसामेत्तेण समिदस्स॥

—प्रवचनसार ३।१७

बाहर में प्राणी मरे या जीये, अयताचारी—प्रमत्त को अन्दर में हिंसा निश्चित है। परन्तु जो अहिंसा की साधना के लिए प्रयत्नशील है, समितिवाला है, उसको बाहर में प्राणी की हिंसा होने मात्र से कर्मबंध नही होता अर्थात् वह हिंसा नहीं है।

६. चरदि जद जदि णिच्च, कमल व जले णिरुवलेवो।

—प्रवचनसार ३।१८

यदि साधक प्रत्येक कार्य यतना से करता है, तो वह जल में कमल की भांति निर्लेप रहता है।

# १० अहिंसा

१. सर्वभूतेषु संयम. अहिंसा। —जैनसिद्धान्तदीपिका ६।१

सव जीवो के प्रति सयम रखना, उन्हे दुख न देना एव उनके प्रति मैत्री-भाव रखना अहिंसा है।

२ तत्र अहिंसा सर्वदा सर्वभूतेषु अनभिद्रोह:।

—पातंजलयोगदर्शन भाष्य २।३०

सब प्रकार से, सव कालो मे, सव प्राणियो के प्रति अनभिद्रोह—(मैत्रीभाव) अहिंसा है।

३. कर्मणा मनसा वाचा, सर्वभूतेषु सर्वदा।
अक्लेशजनन प्रोक्ता, अहिंसा परमर्षिभि:॥

—ईश्वरगीता

मन, वचन तथा कर्म से सर्वदा किसी भी प्राणी को क्लेश न पहुंचाना—अहिंसा है।

४ अहिंसा माने अपने भाषण से या कृति से किसी का भी दिल न दुखाना, किसी का अनिष्ट तक न सोचना।

—विवेकानन्द

५. अहिंसा का अर्थ है, अनन्तप्रेम और उसका अर्थ है कष्ट सहने की अनन्तशक्ति। —गाधी

६ धर्म का निचोड़—उसका दूसरा नाम अहिंसा है। ,,

७. अहिंसा का अर्थ ईश्वर पर भरोसा रखना है। ,,

८ जैसे हिंसा की तालीम में मारना सीखना जरूरी है, वैसे ही अहिंसा की तालीम में मरना सीखना जरूरी है।

—गांधी

९ मेरी अहिंसा सारे जगत के प्रति प्रेम मांगती है। ,,

१० धर्म का व्यापकरूप अहिंसा है। दूसरे सब व्रत इसमें मिल जाते हैं। —गांधी

११ एक्कं चिय एत्थ वयं, निद्दिट्ठं जिणवरेहिं सव्वेहिं।
पाणाइवायविरमण - मवसेसा तस्स रक्खट्ठा॥

—जैनसिद्धान्त बोलसंग्रह भाग ३ पृष्ठ १५२

वीतराग देव ने प्राणातिपातविरमण (अहिंसा) रूप एक ही व्रत मुख्य बतलाया है। शेष व्रत तो उसकी रक्षा के लिए ही कहे गए हैं।

★

## ११ अहिंसा की महिमा

१. एसा सा भगवती अहिसा। जा सा भीयाण विव सरण, पक्खीण पिव गमण, तिसियाण पिव सलिल, खुहियाण पिव असण, समुद्दमज्झे व पोतवहण, चउप्पयाण व आसमपय, दुहट्ठियाण व ओसहिवल, अडवीमज्झे व सत्थगमण, एत्तो विसिट्ठतरिया अहिसा·· · तस-थावर सव्वभूय-खेमकरी।
—प्रश्नव्याकरण सवरद्वार १

जैसे—भय भ्रान्तो को शरणदाता, पक्षियो को आकाश, प्यासो को पानी, भूखो को भोजन, समुद्र मे डूबते व्यक्तियो को जहाज, चतुष्पाद—पशुओ को आश्रयस्थान (ठाण) रोगियो को औषधि की ताकत एव अटवी मे भटके व्यक्तियो को सथवाड़ा (साथ) कल्याणकारी होता है—यह अहिसा भगवती त्रस-थावर सभी प्राणियो के लिये इनसभी से भी अधिक क्षेम-कल्याण करने वाली है।

२. अहिंसा निउणा दिट्ठा, सव्वभूएसु सजमो।
—दशवैकालिक ६।९

अहिंसा को प्रभु ने जीवो के लिए कल्याणकारी देखा है। सभी जीवो के प्रति सयम रखना ही इसका स्वरूप है।

३. अत्थि सत्थ परेण पर,
नत्थि असत्थ परेण पर।
—आचाराग ३।४

शस्त्र एक से एक बढकर है किन्तु (अशस्त्र) अहिंसा से बढकर कोई भी शस्त्र नहीं है।

४. तुंगं न मंदराओ, आगासाओ विसालयं नत्थि।
जह तह जयम्मि जाणसु, धम्ममहिंसा समं नत्थि॥
—भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक गाथा ६१

जैसे सुमेरु पर्वत से ऊँचा और आकाश से विशाल विश्व में दूसरा कोई नहीं है, निश्चितरूप से समझो कि इसी प्रकार अहिंसा के समान दूसरा कोई धर्म नहीं है।

५. सव्वाओ वि नईओ, कमेण जह सायरम्मि निवडंति।
तह भगवई अहिंसा, सव्वे धम्मा सम्मिलंति॥
—संबोधसत्तरी ६

सभी नदियाँ क्रमश जैसे समुद्र में विलीन हो जाती हैं, उसी प्रकार सब धर्म अहिंसा में समा जाते हैं।

६. अहिंसा परमोधर्म-स्तथाऽहिंसा परो दमः,
अहिंसा परमं दान-महिंसा परमं तपः।
अहिंसा परमो यज्ञ-स्तथाऽहिंसा परं फलम्,
अहिंसा परमं मित्र-महिंसा परमं सुखम्।
—महाभारत अनु० ११६।२८-२६

सत्य-शील-व्रत-नियमादि सभी सात्त्विक प्रवृत्तियो की माता अहिंसा है ।

८ अहिंसैव हि ससार - मरावमृतसारणिः ।

—योगशास्त्र २।५०

ससाररूप मरुस्थल मे अहिंसा ही एक अमृत का झरना है ।

९. अहिंसैव 'जगन्माता-ऽहिंसैवानन्दपद्धति. ।
अहिंसैव गतिः साध्वी, श्रीरहिंसैव शाश्वती ।।

—ज्ञानार्णव पृ० ११५

अहिंसा ही जगत की माता है, अहिंसा ही आनन्द का मार्ग है, अहिंसा ही उत्तम गति है एव अहिंसा ही शाश्वत लक्ष्मी है ।

१०. परस्परविवादाना धर्मग्रन्थानामहिंसा परमो धर्म इत्यत्र एकरूपता ।

परस्पर विवादवाले धर्मग्रन्थो मे भी 'अहिंसा परमो धर्म' के विषय मे सब एक ही मत है ।

११ परम धर्म श्रुति विदित अहिंसा,
परनिन्दा सम अघ न गिरीसा ।
परहित सरिस धर्म नहिं भाई ।
परपीडा सम नहिं अधमाई ।।

—रामचरित मानस

# अहिंसा के फल

अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरपरित्यागः ।

—पातंजलयोगदर्शन २।३५

अहिंसा की पूर्ण साधना होने पर साधक के निकटस्थ प्राणियों में परस्पर वैर नहीं रहता ।

सारङ्गी सिंहशावं स्पृशति सुतधिया नन्दिनी व्याघ्रपोतं,
मार्जारी हंसबालं प्रणयपरवशा केकिकान्ता भुजङ्गम् ।
वैराण्याजन्मजातान्यपि गलितमदा जन्तवोऽन्ये त्यजन्ति,
श्रित्वा साम्यैकरूढं प्रशमितकलुषं योगिनं क्षीणमोहम् ॥

—ज्ञानार्णव पृष्ठ २८०

४. रूपमारोग्यमैश्वर्य-मर्हिसाफलमश्नुते ।

—बृहस्पति-स्मृति

सुन्दर रूप, नीरोग शरीर और सुख सामग्री—सपत्ति आदि ऐश्वर्य—ये सब अहिंसा के फल हैं ।

५ मोक्ष ध्रुव नित्यमहिंसकस्य । —सूक्तमुक्तावलि

अहिंसक के लिये शाश्वत मोक्ष की प्राप्ति निश्चित ही है ।

६. अफ्रीका मे भाषण करके गाधीजी जा रहे थे। एक आदमी उनके पीछे-पीछे छुरी लेकर चला । साथ वाली बहन के कहने पर गाधीजी ने उससे पूछा । वह बोला—"मैं आपको मारने के लिये आया था लेकिन न मालूम मेरा हाथ क्यो नही चलता ?"

७. वि० स० १९७९ बीकानेर चातुर्मास मे जैन श्वेताम्बर तेरापथ के अष्टमाचार्य श्री कालुगणी शौचार्थ बाहर पधारे थे। उन्हे अकेले देखकर एक आदमी पिस्तोल हाथ मे लिए अचानक वहा आया । उनका मुखारविंद देखते ही उसके हाथ से पिस्तोल गिर पडी एव वह रोता हुआ कहने लगा कि 'कई व्यक्तियो के कहने से लोभवश मैं आपका खून करने आया था ।' यो कहता हुआ क्षमा मागकर चला गया ।

★

## १३ अहिंसा का उपदेश

१ सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता न हंतव्वा, न अज्जावेयव्वा न परिघेयव्वा, न परितावेयव्वा, न उद्दवेयव्वा, एस धम्मे धुवे नीइए सासए।

—सूत्रकृतांग श्रु० २ अ० १ सूत्र १५

किसी भी प्राण-भूत-जीव-सत्त्व को न मारना चाहिये, न उन पर हुकूमत करनी चाहिये, न उनको ग्रहण (अधीन) करना चाहिये, न उनको परिताप देना चाहिये और न ही उन्हें उद्विग्न करना चाहिये। यह धर्म ध्रुव, नित्य और शाश्वत है।

२ पाणे न हाने न च घातयेय, न चानुमञ्‍ञा हननं परेसं।
सब्बेसु भूतेसु निधाय दण्डं, ये थावरा ये च तसन्ति लोके॥

—सुत्तनिपात धम्मिक सुत्त

५. तुमसिनाम सच्चेव, ज हतव्व ति मन्नसि ।
—आचारांग ५।५

जिसे तू मारने योग्य समझता है, वह तू ही है अर्थात् उसकी और तेरी आत्मा एक सी है ।

६ सव्वे पाणा पियाउया, सुहसाया, दुक्खपडिकूला, अप्पियवहा, पियजीविणो, जीविउकामा, सव्वेसि जीविय पिय, —आचारांग २।३

सभी जीवों को अपनी आयु प्रिय है । वे सुख चाहते है, दुःख से द्वेष करते है । उन्हे वध अप्रिय लगता है और जीवनप्रिय लगता है । वे दीर्घ आयु चाहते हैं । सभी को अपना जीवन प्रिय है ।

७ नाइवाएज्ज कचण । —आचारांग २।४

किसी को मत मारो ।

८ आयओ वहिया पास, तम्हा न हता न विघायए
—आचारांग ३।३

दूसरे प्राणियों को आत्मा के तुल्य देख । अतः न तो किसी की हिंसा कर और न दूसरे से करवा ।

९ न हणे पाणिणो पाणे । —उत्तराध्ययन ६।७

किसी भी प्राणी के प्राणों का घात मत करो ।

१० आय तुले पयासु । —सूत्रकृतांग १०।३

[illegible] प्राणियों [illegible] आत्मा [illegible] तुल्य भाव रखे ।

११ [illegible] । —आचारांग ३।२

[illegible]

२०. अश्व मा हिंसी:, गा मा हिंसी, अजा मा हिंसी, अवि मा हिंसी, इम मा हिंसी द्विपादपशुम्, मा हिंसी एकशफ पशुम्, मा हिंस्यात् सर्वभूतानि। —यजुर्वेद १३।४७-४८

घोड़े को मत मारो! गाय को मत मारो! भेड़ को मत मारो! इस दो पैरवाले पशु को अर्थात् मनुष्य अथवा पक्षी को मत मारो! एक खुरवाले घोड़ा-गदहा आदि पशुओं को मत मारो! किसी भी प्राणी की हिंसा मत करो!

२१. मा जीवेभ्य प्रमद! —अथर्ववेद ८।१।७

प्राणियों की तरफ से बे-परवाह मत होओ।

२२. Thou Shalt not Kill —बाइबिल

दाउ शैल्ट नोट किल—हिंसा मत करो।

२३. ऐसा हृदय रखो, जो कभी कठोर नहीं होता। ऐसा मिजाज रखो जो कभी नहीं उकताता और ऐसा स्पर्श रखो जो कभी ईजा नहीं पहुँचाता। —डिकिन्स

२४. जहाँ तक हो सके, एक दिल को भी रंज न पहुँचाओ, क्योंकि एक आह सारे संसार में खलबली मचा देती है।

२५. मुसलमानों को आज्ञा है कि, जिस दिन से हज करने का विचार करे तब से मक्का पहुँचने तक किसी जीव की हिंसा मत करो। यहाँ तक कि जूं को भी मत मारो, उसे हटा दो!

२६. इस जीवन को नष्ट करने का हमें कोई अधिकार नहीं, जिसको बनाने की शक्ति हम में नहीं। —गांधी

२७. तुम्हारे पैर नीचे दबी हुयी चींटी का वही हाल होता है, जो हाथी के पैर नीचे दबने से तुम्हारा। —शेखसादी

२८. दिल के अन्दर है खुदा, दिल से खुदा नहिं दूर है।
दिल को सताना अयमियां! उस रब को कब मंजूर है?
—उर्दू शेर

२९. हिंसा का त्याग क्यों? आत्मा को अहिंसक रखने के लिये, या किसी को न सताने के लिये?

३०. तहकीकात अता की हमने तुमको कौसर!
पस नमाज पढ़ो अपने परवरदिगार की,
और कुर्बानी करो अपने नफ्स की।
—कुरानशरीफ सूर-ए-कौसर

३१. अज वा ब्राह्मणा गावो, आलय शिशव. स्त्रिय.।
येषा अन्नानि भुञ्जीत, ये च स्यु. शरणागता.॥

## १४ दया

१. इम च ण सव्वजीवरक्खणदयट्ठाए पावयण भगवया सुकहिय । —प्रश्नव्याकरण स० १

ससार के सभी जीवो की रक्षारूप दया के लिए भगवान ने यह प्रवचन कहा है ।

२. दयाधम्मस्स खतिए, विप्पसीइज्ज मेहावी ।

—उत्तराध्ययन ५।३०

मेधावी पुरुप दया-धर्म को क्षमा से प्रसन्न—प्रफुल्लित करे ।

३. दया वह भाषा है, जिसे बहरे सुन सकते है और गूंगे समझ सकते है ।

४. पापाचरणादात्मरक्षा दया । —जैनसिद्धान्तदीपिका ६।२

पापमय आचरणो से अपनी या दूसरो की आत्मा को बचाना दया है ।

५. सदुपदेश-विपाक चिन्तन-प्रत्याख्यानादयोऽस्या उपाया ।

—जैनसिद्धान्तदीपिका ६।३

सत् उपदेश, कर्मफल-चिन्तन, प्रत्याख्यान-त्याग आदि-आदि दया के उपाय है ।

६. लोके प्राणरक्षापि । —जैनसिद्धान्तदीपिका ६।४

लोकव्यवहार मे प्राणरक्षा को भी दया कहते है ।

७. मोहमिश्रितत्वान्नात्मसाधनी ।

—जैनसिद्धान्तदीपिका ६।५

## १५ दया की महिमा

१. पर-दु खविनाशिनी करुणा । —धर्मविन्दु

दया दूसरो के दु ख को दूर करनेवाली है ।

२. कोडिकल्लाणजणणी, दुक्ख-दुरियारिवग्गनिट्ठवणी ।
ससारजलहितरणी, एकाच्चिय होइ जीवदया ॥

एक ही यह जीवदया करोड कल्याण करनेवाली है । दु ख, दुरित (पाप) एव अरि (शत्रु) वर्ग को नष्ट करनेवाली है तथा ससार-समुद्र को पार करने के लिये नाव है ।

३. शान्ति तुल्य तपो नास्ति, न सतोषात् पर सुखम् ।
न तृष्णाया: परो व्याधि-र्न च धर्मो दयापर ॥

—चाणक्यनीति ८।१२

शान्ति के समान तप नही, सतोष से बढकर सुख नही, तृष्णा से बढकर कोई बीमारी नही और दया से बढकर कोई धर्म नही ।

४ दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान ।
'तुलसी' दया न छोड़िये, जब लग घट मे प्रान ॥
'तुलसी' दया न पार की, दया आपकी होय ।
तूं नही मारे कोइ नै, तनै न मारे कोय ॥

१२. रूप का क्या देखना, गुण को देखो !
कुल का क्या देखना, शील को देखो !;
अध्ययन का क्या देखना, प्रतिभा को देखो !
तप का क्या देखना, क्षमा को देखो !
धर्म का क्या देखना, दया को देखो।

१३. दया ने मेघकुमार को मनुष्यता प्रदान की।

—ज्ञाता० अ० १

१४. विश्वकर्मा सृष्टि बनाकर उपभोक्ता के रूप में मनुष्य को बनाने लगा। तब सत्य ने कहा—यह स्वार्थवश अन्याय करेगा। शान्ति बोली—सत्य-न्याय के नष्ट होने पर मै कहा रहूगी ? तब छोटी पुत्री दया ने कहा—मैं उसे सन्मार्ग पर ले आऊगी।

—वैदिकरूपक

★

१२ रूप का क्या देखना, गुण को देखो !
कुल का क्या देखना, शील को देखो !;
अध्ययन का क्या देखना, प्रतिभा को देखो !
तप का क्या देखना, क्षमा को देखो !
धर्म का क्या देखना, दया को देखो।

१३. दया ने मेघकुमार को मनुष्यता प्रदान की।

—ज्ञाता० अ० १

१४. विश्वकर्मा सृष्टि बनाकर उपभोक्ता के रूप मे मनुष्य को बनाने लगा। तब सत्य ने कहा—यह स्वार्थवश अन्याय करेगा। शान्ति बोली—सत्य-न्याय के नष्ट होने पर मै कहा रहूगी? तब छोटी पुत्री दया ने कहा—मै उसे सन्मार्ग पर ले आऊगी। —वैदिकरूपक

★

## १६ दयालु

१. मैं किसी बुगले को तीर का निशाना बनाने के बजाय उड़ता देखना चाहता हूँ। किसी बुलबुल को खा जाने की अपेक्षा उसके गीत सुनना चाहता हूँ। —रस्किन

२. जहा पशु मरते हो वहा नमाज मत पढो।

—हजरत मुहम्मद

३. दयालु हृदय खुशी का फव्वारा है, जो अपने पास की हर चीज को मुस्कानो से भरकर ताजा बना देता है।

—वाशिंगटन इर्विन

४ दयाशील अन्त करण प्रत्यक्ष स्वर्ग है। —विवेकानन्द

५. भारी तलवार कोमल रेशम को नही काट सकती। दयालुता और मीठे शब्दो से हाथी को जहा चाहे ले जाओ। —शेखशादी

६ हर एक के लिये दयालु और मृदुल बनो, लेकिन अपने लिये कठोर।

# १७ हिंसा

१. असत्प्रवृत्त्या प्राणव्यपरोपण हिसा ।

—जैनसिद्धान्तदीपिका ७।५

असत्प्रवृत्ति अर्थात् राग-द्वेष एव प्रमादमय चेष्टाओ द्वारा किये जानेवाले प्राणवध को हिसा कहते है ।

२ पञ्चेन्द्रियाणि त्रिविध वल च,
उच्छ्वासनि श्वासमथान्यदायु ।
प्राणा दशैते भगवद्भिरुक्ता-
स्तेषा वियोगीकरण तु हिसा ।।

—सूत्रकृताग टीका १।१।३

पाच इन्द्रिया (श्रोत्र-चक्षु-घ्राण-रस-स्पर्श) तीन वल (मन-वचन-काया) उच्छ्वास-नि.श्वास तथा आयु—भगवान ने ये दस प्राण कहे है—इनको नष्ट करना हिंसा है ।

३. अधर्मः प्राणिना वधः । —महा० शान्तिपर्व

जीवो की हिंसा करना अधर्म है ।

४ हिंसैव दुर्गतेर्द्वार, हिंसैव दुरितार्णवः ।
हिंसैव नरक घोर, हिंसैव गहन तम. ।।

—ज्ञानार्णव पृ० ११३

हिंसा ही दुर्गति का द्वार है, हिंसा ही पाप का समुद्र है, हिंसा ही घोर-नरक है और हिंसा ही सघन अन्धकार है ।

५ यत्किचित् ससारे, शरीरिणा दुख - शोक-भयबीजम् ।
दौर्भाग्यादिसमस्त, तद्धिसासभव ज्ञेयम् ॥
—ज्ञानार्णव पृ० १२०

इस ससार मे प्राणियो के दुख-शोक और भय के कारणभूत जो दौर्भाग्य आदि है, उन सबको हिसा से उत्पन्न होनेवाले समझो ।

६ त से अहियाए, त से अबोहियाए ।
एस खलु गथे, एस खलु मोहे ।
एस खलु मारे, एस खलु निरए ।
—आचाराग सूत्र १।२

यह जीव हिसा अहित करनेवाली है एव अबोध—मिथ्यात्व का कारण है । निश्चय ही यह आठ कर्मों की गाठ है, मोह है, मृत्यु है और नरक है ।

७. एसो सो पाणवहो चडो, रुद्दो, खुद्दो, अणारिओ निग्घिणो, निस्ससो, महब्भओ । —प्रश्नव्याकरण १

यह प्राणवध—जीवहिंसा चण्ड है, रुद्र है, क्षुद्र है, अनार्य है, निर्घृण है, नृशस है एव महाभयवाला है ।

८ अदुवा अदिन्नादाण । —आचाराग सूत्र १।३
अथवा जीवहिसा चोरी भी है ।

९ हिंसा आत्मघाती है, किन्तु उसके सामने यदि प्रतिहिंसा न हो तो वह जिन्दा नही रह सकती । —गाधी

१०. सव्वे जीवा वि इच्छति, जीविउ न मरिज्जिउ ।
तम्हा पाणवह घोर, निग्गथा वज्जयति ण ।
—दशवैकालिक ६।११

सब जीव जीना चाहते हैं मरना कोई भी नही चाहता। अतः निर्ग्रन्थ-साधु भयकर जीवहिंसा का सर्वथा त्याग करते हैं।

११. इस भूमि पर कोई भी ऐसे पशु-पक्षी नही है जो कि तुम्हारे समान ही अपने प्राणो से प्यार न करते हो।

—कुरान ६।३८

१२ पगुकुष्ठिकुणित्वादि, दृष्ट्वा हिसाफल सुधीः।
नीरागस्त्रसजन्तूना, हिंसा सङ्कल्पतस्त्यजेत्॥

—योगशास्त्र २।१९

पगुपन, कोढीपन और कुणित्व आदि हिंसा के फलो को देखकर विवेकवान् गृहस्थ निरपराध त्रस जीवो की सकल्पी-हिंसा का त्याग करे!

१३. जीववहो अप्पवहो, जीवदया अप्पणो दया होइ।

—भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक ९३

जीवो की हिंसा वस्तुत अपनी आत्मा की हिंसा है और जीवदया अपनी आत्मा की दया है।

१४ न हु पाणवहं अणुजाणे, मुच्चेज्ज कयावि सव्वदुक्खाण।

—उत्तराध्ययन ८।८

जीव हिंसा की अनुमोदना करनेवाला सर्व प्रकार के दु खो से कभी मुक्त नही होता।

१५. पाणाणि चेव विणिहति मदा। —सूत्रकृतांग ७।१६

मन्दबुद्धिवाले प्राणियो की हिंसा करते हैं।

★

१८ 

# हिंसा के प्रकार

१ पाणाइवाए दुविहे पण्णत्ते त जहा—
सकप्पओ य आरभओ य। —आवश्यक सूत्र

प्राणातिपात दो प्रकार का कहा है—सकल्पज और आरम्भज। माम, हड्डी, चर्म आदि के लिये द्वीन्द्रियादि जीवो को मारना सकल्पज है और हल-दताल आदि से पृथ्वी को खोदते समय चीटी आदि का मर जाना आरम्भज है।

२ हिंसा तीन प्रकार की है—आरम्भजा, विरोधजा और सकल्पजा।

३. पञ्च शूना गृहस्थस्य, चुल्ली पेपण्युपस्कर।
कण्डनी चोदकुम्भश्च, वध्यते यास्तु वाहयन्॥
—मनुस्मृति ३।६८

गृहस्थी के लिये चूल्हा, चक्की, वुहारी, ओखली और जल का घडा—ये पाच हिंसा के स्थान है, इनको काम मे लानेवाला गृहस्थ पाप से वधता है।

# १६ हिंसा में धर्म नहीं

१. हिंसा नाम भवेद् धर्मो, न भूतो न भविष्यति।

—पूर्वमीमांसा

हिंसा मे धर्म न तो कभी हुआ और न कभी होगा।

२. यदि ग्रावा तोये तरति तरणिर्यद्युदयति—
प्रतीच्या सप्तार्चिर्यदि भजति शैत्य कथमपि।
यदि क्ष्मापीठ स्यादुपरि सकलस्यापि जगतः,
प्रसूते सत्त्वाना तदपि न वध क्वापि सुकृतम्।

—सिन्दूरप्रकरण २६

यदि पानी मे पत्थर तर जाय, सूर्य पश्चिम मे उदय हो जाय, अग्नि ठडी हो जाय और कदाच यह पृथ्वी जगत के ऊपर हो जाय तो भी हिंसा मे कभी धर्म नही होता।

## २० शिकार

१ अभओ पत्थिवा तुब्भ, अभयदाता भवाहि य।
अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं हिंसाए पसज्जसि ॥
—उत्तराध्ययन १८।११

हे राजन्! मेरी तरफ से तुझे अभय है, किन्तु तू भी अभय देने वाला बन! इस अनित्य ससार मे आकर हिंसा मे आसक्त क्यो बन रहा है?

२. कण्टकेनापि विद्धस्य, महती वेदना भवेत्।
चक्र-कुन्तादिशक्त्याद्यै-श्छिद्यमानस्य किं पुन:॥
यावन्ति पशुरोमाणि, पशुगात्रेषु भारत!
तावद् वर्षसहस्राणि, पच्यन्ते पशुघातका:॥
—धर्मसग्रह १७।४६

एक काटे से विधे जाने पर भी घोर वेदना होती है तो फिर चक्र, भाला, शक्ति आदि द्वारा छेदने-भेदने पर न जाने कितनी वेदना होती होगी? हे भारत! पशुओ के शरीर पर जितने रोम होते हैं उतने ही हजार वर्षो तक पशुओ की घात करने वाले दुर्गति मे दुःख सहन करते हैं।

३. मृगयारसिका नित्य, अरण्ये पशुघातका।
परेतास्तान् यमभटा, लक्ष्यीभूतान् नराधमान्॥
—भागवत ८।२२।४६

शिकार के शौकीन जो पशुओ के घातक है, उन प्रेतो-नराधमो को यमराज के सुभट अपना निशाना बनाकर मारते है।

४. पाडु भयो पण्ढ, परीक्षित भौ आयुहीन।
दशरथ दीन दुख पायो अनपार को।
पारथ के साथ यदुनाथ खेले मृगया जो,
धीवर के हाथ मरे मृग ज्यो दुपार को।
नार को गमाय घबराय हाय-हाय कर,
पाय लियो सीतापति फल यो शिकार को।
पार को हरै जो प्राण, ताकी गति होत ऐसी,
तार को न फेर ओ प्रमाण अवतार को

—सप्तव्यसन सधानकाव्य २।६२ शालिग

५ श्रूयते प्राणिघातेन, रौद्रध्यानपरायणौ।
सुभूमो ब्रह्मदत्तश्च, सप्तम नरक गतौ॥

—योगशास्त्र २।२७

आगम मे प्रसिद्ध है कि जीव-हिसा के द्वारा रौद्रध्यान मे तत्पर सुभूम और ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती सातवे नरक के अतिथि बने।

६ हियैरा हुकरालिया, हिरण्या न्हाठा जाय।
जाणै रहस्यां जीवता, मरण दोरो ए माय!
त्या पाछे तपडाय नै घोडा देता ध्याय।
बिन अपराधे मारिया, दया न कीधी काय।
बाप-दादो नहि मारियो, न कर्यो खून विरोध।
गरीबा पर कटकी करी, चाल्या इसा अलोध।

—चित्राम की चोपी से

लावा तीतर लार, केडाऊ हरकोइ हुवे।
सिहा तणी शिकार, कोयक खेले किसनिया!

## सत्य का स्वरूप

१ काय-वाङ्-मनसामृजुत्वमविसवादित्व च सत्यम्।

—मनोनुशासनम् ६।३

शरीर, वचन एव मन की सरलता तथा अविसवादित्व (कथनी-करणी मे एकरूपता) को सत्य कहा जाता है।

२ सत्य यथार्थे वाङ्मनसे। यथा दृष्ट, यथानुमित, यथा श्रुत, तथा वाङ्मनश्चेति।

—पातजलयोगदर्शन, साधनापद सूत्र ३, भाष्य

जैसा देखा-समझा-सुना हो, दूसरो को कहते समय मन-वचन से वैसा ही प्रयोग करना सत्य है।

३ अर्थ सत्य रो वास्तविक, प्रकृतसरलता जाण।
शुद्ध सरलता मे सदा, वसे सत्य भगवान॥
पढ्या लिख्या तर्की मर्फे, करे सत्य री खोज।
रच-रच कर पोथ्या करे, व्यर्थ जगत् मे बोझ॥

—सावधानी रो समुद्र तरंग २

४ यद् भूतहितमत्यन्त-मेतत्सत्य वचो मम।

—महाभारत शान्तिपर्व ३२६।१३

जिससे प्राणियो का अत्यन्त हित हो, वही सत्य है—यह मेरा कथन है।

सत्यमिति अमायिता अकौटिल्य वाङ्-मन-कायानाम्।

—केनोपनिषद् शकरभाष्य ४।८

सत्य अर्थात् वचन-मन-काया की माया-रहितता एव अकुटिलता।

सच्चाई के लक्षण पाच है—

(१) मन मे हो वैसा ही बोलना
(२) बोले अनुसार बरताव करना
(३) प्रतिष्ठा की लालसा छोडना
(४) कर्त्तापन का अहकार न रखना
(५) प्रवृत्ति को काबू मे रखना।

—यूसूफ आसवात

भगवान की ओर मुडना ही एक मात्र सत्य है।

—अरविन्द घोष

नाऽसौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति,
न तत्सत्य यच्छलेनानुविद्धम्॥

—वाल्मीकि० ७।५९ : ३।३३

—महाभारत उद्योगपर्व ३५/५८

वह धर्म, धर्म नही जिसमे सत्य नही और वह सत्य, सत्य नही जो छल-कपट से युक्त हो।

अविकारितम सत्य, सर्ववर्णेषु भारत!

—महाभारत शान्तिपर्व १६२।३

निर्विकार सत्य सभी वर्ण-जातियो मे विद्यमान है।

ऋतस्य पन्था न तरन्ति दुष्कृत। —ऋग्वेद ९।७३।६

सत्य के मार्ग को दुष्कर्मी पार नही कर सकते।

११ सत्यस्य नाव. सुकृत अपीपरन्। —ऋग्वेद ९।७३।१

सत्य की नाव धर्मात्मा को पार लगाती है।

१२ द्रव्यलुब्धस्य नो सत्यम्। —चाणक्यनीति ११।४

धन के लोभी मनुष्य मे सत्य नही रहता।

१३ हिरण्यमयेन पात्रेण, सत्यस्याऽपिहित मुखम्।

—शुक्लयजुर्वेद ४।१७

सत्य का मुख सुवर्ण जैसी चमकीली वस्तुओ से ढका हुआ रहता है।

१४ सत्य पर, पर सत्यम्। —श्वेताश्वतरोपनिषद् ३।७८

सत्य सर्वोत्कृष्ट है और जो सर्वोत्कृष्ट है वही सत्य का स्वरूप है।

१५. तदेव किंचानूचानोऽभ्यूहति आर्षं तद् भवति।

—निरुक्त १३।२

विचारशील विद्वान् तर्कद्वारा जिस निर्णय पर पहुँचता है, उसे आर्ष (सत्य) ही समझो।

१६ God is truth and truth is god

गोड इज ट्रूथ एन्ड ट्रूथ इज गोड —अग्रेजी लोकोक्ति

ईश्वर सत्य है और सत्य ईश्वर है।

१७ जिस प्रकार हीरा केवल पृथ्वी के गर्भ से ही प्राप्त हो सकता है। उसीप्रकार सत्य केवल गभीर चिन्तन द्वारा आत्मा की गहराईओ मे ही मिल सकता है।

१८. खुले दिमागवाले इन्सान को ही
सत्य का दर्शन हो सकता है।

जैसे खुली छत वाले मकान पर ही,
सूर्य का दर्शन हो सकता है।
सम्प्रदाय की चार दीवारी मे बधकर,
सत्य खोजने वालो को बोल दो।
वहा उसकी आत्मा नही,
केवल शरीरका दर्शन हो सकता है।

अपने विचारो के लिए जहाँ,
एकान्त आग्रह होने लगता है।
वहाँ जडता जाग जाती है,
और धर्म सोने लगता है।
अपनी आँखो के सामने,
सम्प्रदाय की कब्र खुदी हुई देखकर।
ठीक समझो वेचारा सत्य,
सौ-सौ आसुओ से रोने लगता है।

—खुले आकाश मे २३-२४

१९. तमाम कमाल का आधार सत्य है— —जोन्सन

२०. सत्य स्वाभाविक वस्तु है और झूठ पीछे सीखा जाता है। यही कारण है कि अवोध वच्चा सत्य वोलता है।

२१. सत्य को यदि दवा भी दिया जाय तो वह स्वत. प्रकट हो उठेगा। —व्रायन्ट

सत्य की कोई मूर्ति एव निश्चित स्थान नही है। यह हर एक चीज मे विद्यमान है। जैसे—सूर्य-चन्द्र मे प्रकाश

अग्नि मे उष्णता, जल मे शीतलता, दूध मे घृत, समुद्र मे गम्भीरता, आकाश मे विशालता और कल्पवृक्ष मे उदारता। उपर्युक्त वस्तुओ मे प्रकाशादि गुण ही सत्य है, अगर इन्हे निकाल दिया जाय तो फिर सूर्यादि मे कुछ भी न रहेगा।

—सकलित

२३. न हेव सच्चानि वहूनि नाना।

—महानिद्देसपालि १।१२।१२

सत्य न तो अनेक हैं, और न नाना—एक दूसरे से पृथक् हैं।

२४. सत्य विना का मनुष्य जीवरहित-शरीर जैसा है।

## सत्य के प्रकार

१. तीन प्रकारका सत्य है—मानसिक, वाचिक और कायिक।

२. चउव्विहे सच्चे पण्णत्ते त जहा—
काउज्जुयया, भासुज्जुयया,
भावुज्जुयया अविसवायणाजोगे। —स्थानाग ४।१

चार प्रकार का सत्य कहा है —
(१) काया की सरलता (२) भाषा की सरलता
(३) भाव की सरलता (४) कथन-आचरण मे समानता।

३. दसविहे सच्चे पण्णत्ते तजहा—
जणवय-सम्मय-ठवणा नामे-रूवे-पडुच्चसच्चे य।
ववहार - भाव - जोगे, दसमे ओवम्मसच्चे य।
—स्थानाग १०।७७

दसप्रकार का सत्य कहा है :—
(१) जनपदसत्य (२) सम्मतसत्य (३) स्थापनासत्य (४) नामसत्य (५) रूपसत्य (६) प्रतीत्यसत्य (७) व्यवहारसत्य (८) भावसत्य (९) योगसत्य (१०) उपमासत्य।

(१) **जनपदसत्य**—जैसे आटे को लोट एव चावल को चोखा आदि कहना।

(२) **सम्मतसत्य**—कमल को पङ्कज कहना, पर मेढक को नहीं, क्योंकि यह विद्वानो को मान्य नही।

(३) **स्थापनासत्य**—मूर्ति को ऋषभ-महावीर आदि कहना।

(४) **नामसत्य**—कगाल को लक्ष्मीपति कहना।

(५) **रूपसत्य**—स्त्रीवेशधारी नट को सीता कहना।

(६) **प्रतीत्यसत्य**—अपेक्षा से छोटा-बडा कहना।

(७) **व्यवहारसत्य**—गाव आ गया, नाला गिरता है आदि कहना।

(८) **भावसत्य**—भवरा काला, तोता हरा आदि कहना।

(९) **योगसत्य**—अध्यापनकाल के अतिरिक्त भी अध्यापक कहना।

(१०) **उपमासत्य**—कमल के समान नेत्र आदि कहना।

४. सत्य के १३ रूप ·

सत्य च समताचैव, दमश्चैव न सशय.।
अमात्सर्यं क्षमा चैव, ह्री स्तितिक्षाऽनसूयता ॥
त्यागोध्यानमथार्यत्व, धृतिश्च सतत स्थिरा।
अहिसा चैव राजेन्द्र! सत्याकारास्त्रयोदश ॥

—महाभारत शान्तिपर्व १६२।८-९

हे राजेन्द्र! निश्चय ही सत्य के ये तेरह स्वरूप है—
(१) सत्य (२) समता (३) इन्द्रियदमन (४) मत्सर का न होना (५) क्षमा (६) लज्जा (७) सहनशीलता (८) दूसरो के दोप न देखना (९) विपयासक्ति का त्याग (१०) परमात्मा का ध्यान (११) उत्तम आचरण (१२) सदा स्थिर रहने वाला धैर्य (१३) अहिसा।

५ सत्य वचन—झूठ न वोलना, निन्दा न करना, वीभत्स-शव्द न वोलना, विकथा न करना।

सत्य कर्म—अहिसा, चौर्य त्याग, अब्रह्मचर्य त्याग।

सत्य विचार—सत्य की आकाङ्क्षा।

सत्य परिश्रम – आत्म-जागृति का उद्यम।

सत्य मनन—हर्ष-शोक मे समभाव रहना।

सत्य आनन्द—शुद्ध ध्यान।

★

## २३ सत्य की महिमा

१. सत्यमेवजयते नानृतम् । —मुण्डकोपनिषद् ३।१।६

जगत मे सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नही ।

२. नास्ति सत्यात् परो धर्मो, नानृतात् पातक परम् ।

—महाभारत शान्तिपर्व १६२।२४

सत्य से बढकर दूसरा कोई धर्म नहीं और झूठ से बढकर कोई पाप नही ।

३. साच बराबर तप नही, झूठ बराबर पाप ।
जाके हिरदे साच है, ताके हिरदे आप ।।
सत्य वचन आधीनता, परतिय मातु समान ।
इतने मे हरि ना मिले, तुलसीदास जजमान ।।

—संत तुलसीदास

४. सत्यप्रतिष्ठाया क्रियाफलाश्रयत्वम् ।

—पातंजलयोगदर्शन २।३६

सत्य की पूर्ण साधना हो जाने पर वचनसिद्धि प्राप्त हो जाती है ।

५. अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धा सत्ये प्रजापतिः ।

—यजुर्वेद १९।७७

प्रजापति ने अश्रद्धा-अविश्वास को असत्य मे और श्रद्धा को सत्य मे स्थापित किया है ।

६. सत्य चेत् तपसा च किम् ?

यदि एक सत्य है तो अन्य तपस्या से क्या है अर्थात् सत्य मे सब तपस्यायें आ गयी।

७. सत्य धर्मस्तपो योग, सत्य ब्रह्म सनातनम्।
सत्य यज्ञ पर. प्रोक्त, सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥

—महाभारत शान्तिपर्व १६२।५

सत्य धर्म है, तप है, योग है, सनातन ब्रह्म है और उत्कृष्ट यज्ञ है। सब कुछ सत्य पर ही टिका हुआ है।

८. सत्येन धार्यते पृथ्वी, सत्येन तपते रवि.।
सत्येन वाति वायुश्च, सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥

—चाणक्यनीति ५।१९

सत्य से ही पृथ्वी स्थिर रहती है। सूर्य तपता है और पवन चलती है। सब कुछ सत्य मे ही प्रतिष्ठित है।

९. जे वि य लोगम्मि अपरिसेसा मता जोगा जवा य, विज्जा य, जभका य, अत्थाणि य, सत्थाणि य, सिक्खाओ य, आगमा य, सव्वाणि वि ताइ सच्चे पइट्ठियाइं।

—प्रश्नव्याकरण संवरद्वार २

लोक मे जो भी सभी मत्र, योग, जप, विद्या, जृम्भक, अस्त्र, शस्त्र, शिक्षा और आगम हैं—वे सभी सत्य पर अवस्थित हैं।

१०. सत्येनाग्निर्भवेच्छीतो-ऽगाध वत्तेऽम्बु सत्यत।
नासि च्छिनत्ति सत्येन, सत्याद् रज्जूयते फणी ॥

सत्य से अग्नि शीतल हो जाती है, अथाह जल थाह दे देता है अर्थात् डुबोता नही, तलवार नही काटती और साप रस्सी के समान बन जाता है।

११ मन सत्येन शुद्ध्यति। —मनुस्मृति ५।१०६

मन सत्य से ही शुद्ध होता है।

१२. सत्येन शुद्ध्यते वाणी। —तत्त्वामृत

सत्य से वाणी शुद्ध होती है।

१३. सत्येनोत्तभिता भूमि। —ऋग्वेद १०।८५।१

पृथ्वी सत्य से ठहरी हुयी है।

१४. आहु. सत्य हि परम, धर्मधर्मविदो जनाः।
—वाल्मीकि० २।१४।३

धर्मज्ञ पुरुष सत्य को ही सर्वोत्कृष्ट धर्म कहते हैं।

१५. सत्य वै चक्षु.। सत्य हि प्रजापतिः।
—शतपथब्राह्मण ४।२।१।२६

सत्य ही चक्षु है और सत्य ही प्रजापति है।

१६. सच्च जसस्स मूल, सच्चं विस्सासकारण परम।
सच्च सग्गद्दार, सच्च सिद्धीइ सोपाण।
—धर्मसग्रह अधिकार० २ श्लोक २६ टीका

सत्य यश का मूलकारण है। सत्य ही विश्वास प्राप्ति का मुख्य साधन है। सत्य स्वर्ग का द्वार है एव सिद्धि का सोपान है।

१७ सत्यमूल सब सुकृत सुहाये,
वेद-पुरानविदित मनु गाये।
धर्म न दूसरा सत्य समाना,
आगम-निगम-पुरान बखाना।—तुलसी रामायण

१८. सत्यमेवेश्वरो लोके सत्ये धर्म सदाश्रित ।

—वाल्मीकि० २।१०९।१३

ससार मे सत्य ही ईश्वर है । धर्म सदा ईश्वर मे ही रहता है।

१९ त सच्च भगव —प्रश्नव्याकरण स० २

वह सत्य भगवान है ।

२० सत्य ही राम है, नारायण है, ईश्वर है, खुदा है, अल्लाह है, गोड है। —गाधी

२१. एक हि सच्च न दुतीयमत्थि । —सुत्तनिपात ४।५०।७

सत्य एक है, दूसरा नही हो सकता ।

२३ त लोगम्मिसारभूय, गभीरतर महासमुद्दाओ थिरतरग मेरुपव्वयाओ, सोमतरग चदमडलाओ दित्ततर सूरमडलाओ, विमलतर सरदनहतलाओ, सुरभितर गधमादणाओ। —प्रश्नव्याकरण स० २

वह सत्य लोक मे सारभूत है, महासमुद्र से भी अधिक गभीर है, मेरुपर्वत से भी अधिक स्थिर है, चन्द्र-मण्डल से भी अधिक सौम्य है, सूर्यमण्डल से भी अधिक दीप्तिमान है, शरद्काल के आकाश से भी अधिक निर्मल है और गन्धमादनपर्वत से भी अधिक सुगन्धिवाला है ।

२४. मणुयगणाण वदणिज्ज अमरगणाण अच्चणिज्ज ।

—प्रश्नव्याकरण स० २

सत्य मनुष्यो द्वारा स्तुति करने योग्य है एव देवो द्वारा पूजा करने योग्य है ।

२५ कडवर्थ ने कहा है—The truth and love are most powerful things in the world दी ट्रूथ एन्ड लव आर मोस्ट पावरफुल थींग्स इन दी वर्ल्ड—अर्थात् सत्य और प्रेम दुनिया मे वडी भारी शक्तिशाली चीजें है।

# २४ सत्य का उपदेश

१. पुरिसा ! सच्चमेव समभिजाणाहि ।
सच्चस्स आणाए उवट्ठिए से मेहावी मार तरइ ।
—आचारांग ३।३

हे पुरुषो ! सत्य का ही सेवन करो । सत्य की आराधना करने वाला बुद्धिमान मृत्यु को तिर जाता है ।

२. सच्चम्मि धिइ कुव्वहा, एत्थोवरए मेहावी सव्व पाव कम्म झोसइ । —आचारांग ३।२
सत्य मे दृढ रहो ! सत्य मे व्यवस्थित बुद्धिमान व्यक्ति सभी पापकर्म का क्षय कर देता है ।

३. सया सच्चेण सपन्ने, मेत्ति भूएहिं कप्पए ।
—सूत्रकृतांग १५।३
सदा सत्य से सम्पन्न होकर जगत के सभी प्राणियो के साथ मैत्रीभाव रखो ।

४. सच्चे तत्थ करेज्जुवक्कम । —सूत्रकृतांग २।३।१४
जो सत्य हो उसमे पराक्रम करके दिखाओ !

५ अप्पणा सच्चमेसिज्जा । —उत्तराध्ययन ६।२
अपनी आत्मा द्वारा सत्य का अन्वेषण करो ।

६. ऋतस्य पथा प्रेत । —शुक्लयजुर्वेद ७।४५
सत्य के रास्ते पर चलो ।

७ सत्य पीयूषवत् पिव ! —चाणक्यनीति ६।१
अमृतवत् सत्य का पान करो !

★

## २५ सत्य के पालन में कठिनाई

१ अव रहीम मुश्किल पडी, गाढे दोऊ काम।
साचे से तो जग नही, झूठे मिले न राम ॥ —रहीम

२ साच कहू तो मारे लट्टी, झूठे जग पतियाही।
गलिया तो गोरस फिरे, मदिरा वइठी बिकाही ॥
—तुलसी

३ कवीरा! साच न चाल ही, झूठा जग पतियाय।
पाच टके की पाघडी, सात टके मे जाय ॥ —कवीर

४ कौन सुने किससे कहे, सच्चे दिली विचार।
आज अहो! बहरा हुआ, सारा ही ससार ॥
साच कहो! हो जायगी, कहते ही तकरार।
आज हर जगह जुड रहा, हा हा का दरवार।
—दोहासदोह

५ साच कह्या मा ही मारै। —राज० कहावत

६ साच बोल 'र' लडाई मोल लेवणी है। ( ,, ,, )

७ भूषणकवि से औरगजेब ने कहा—सच्ची सुनानेवाला नही है। भूषणकवि बोला—हजूर, सुननेवाला नही है। बादशाह—सुननेवाला तो मैं हूँ। तब भूपण ने कहा—वाप को कैद करके एव भाइयो को मारकर आपका नमाज पढना व्यर्थ है। (बादशाह नमाज पढने जा रहा था) पहले उनका पश्चात्ताप कीजिए। सुनते ही शाह ने क्रुद्ध होकर भूपण को निकाल दिया। उसने शिवाजो की शरण ली।

★

## २६ सत्य के विषय में विविध

१. सत्य एक विशाल वृक्ष है। उसकी ज्यो-ज्यो सेवा की जाती है, उसमे अनेक फल आते हुये नजर आते है, उनका कभी अन्त नही आता। —गांधी

२. अषा अॅ्तरॅ—चरइती। श्यओथनाइस् मज्दा वहिश्तॅम्।
—यश्न हा० ५१।१

अषा पर—सत्य पर चलता हुआ मनुष्य अपनी, इस निर्णय करने वाली शक्ति से अपने हृदयकी वडी से वडी इच्छा पूरी कर सकता है।

३. समय मूल्यवान् अवश्य है, किन्तु सत्य समय से भी अधिक मूल्यवान् है। —डिजरायली

४. हजार सभावनाये एक सत्य के बराबर नही होती।
—इटालियन कहावत

५. सत्य ईश्वर की तलवार है, उसका प्रहार बिना असर किये नही रह सकता। —जुन्नून

६. दुनिया की सबसे आलीशान चीजो मे से एक है—स्पष्ट सत्य। —वलवर

७ सत्य को पालना दुनिया का मालिक बन जाना है।
—रामतीर्थ

८ वर्तन का पानी चमकदार होता है, समुद्र का पानी काला-

काला। लघु सत्य मे स्पष्ट शब्द होते हैं, महान् सत्य मे महान् मौन। —टैगोर

९ सूर्य की किरणो को और सत्य को किसी बाहरी स्पर्श से बिगाडना असभव है। —जानमिल्टन

१० सत्य का सबसे बडा अभिनन्दन यह है कि हम उस पर चलें। —एमर्सन

११ सत्य की हमेशा विजय है—ऐसी जिसकी सतत श्रद्धा है उसके शब्द कोष मे 'हार' शब्द ही नही है। —गाधी

१२ सत्य को पहचानने की और पालने की शक्ति मात्र शास्त्रीय योग्यता द्वारा सभव नही। —पेरोसेल्स

१३ साच-झूठ मे चार आगल रो अन्तर —राजस्थानी कहावत

१४. सत्य शिव सुन्दरम्।
The truth the good the beautiful दी ट्रुथ, दी गुड, दी ब्युटीफुल। —प्लेटो
ग्रीस के तत्त्ववेत्ता प्लेटो के मतानुसार 'शिव' और 'सुन्दर' के मूल मे सत्य का होना परमावश्यक है।

१५ सत्य-शिव के विना सुन्दर चीज अच्छी नही लगती, जैसे—ललित अक्षरो मे भी गाली नही सुहाती, फूलो के बजाय बच्चे के कोमल हाथ अच्छे नही लगते और लडाकू सुन्दर स्त्री किसी को पसन्द नही आती, कारण सत्य नही है।

★

## २७ सत्यवचन

१. सत्य वच पावनम् ।  — सिन्दूरप्रकरण २६

सत्य वचन पवित्र है ।

२ काम दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मी,
कीर्त्ति सूते दुष्कृत या हिनस्ति ।
ता चाप्येता मातर मङ्गलाना,
धेनु धीरा सूनृत वाचमाहु ॥

—उत्तररामचरित ५।३०

सत्य वाणी को विद्वान लोग ऐसी गौ कहते हैं, जो कामना की पूर्ति करने वाली है । अलक्ष्मी-दरिद्रता को दूर भगाती है । कीर्ति को उत्पन्न करती है और पापो का नाश करती है ।

३. सच्च वे अमत्ता वाचा ।  —सुत्तनिपात ३।२६।४

सत्य ही अमृत वचन है ।

४. सर्ववेदाधिगमन, सर्वतीर्थावगाहनम् ॥
सत्य च वदतो राजन् ! सम वा स्यान्नवा समम् ॥

—महाभारत आदिपर्व

सब वेदो का अध्ययन और सब तीर्थों का अवगाहन भी सत्य बोलने के बराबर है या नही—यह एक विचारणीय प्रश्न है । (उक्त दोनो कार्यों से भी सत्यवचन बढकर है)

५. ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियम् ।

—सामवेद उत्तरार्चिक १।५।१६।२०

सत्यभाषी की जीभ से अतिमोहक मधुरस झरता है ।

६. सत्य बोलना नही जाननेवाला खोटा सिक्का है ।

७ सत्य बोलते समय दो व्यक्तियो की जरूरत है—कहने वाले की और सुनकर विश्वास करनेवाले की ।

—थोरो

८ सत्य के बोल उल्टे दीखते है यह गूढ पहेली है ।

—ताओ ३।७८

९ सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते ।

—अथर्ववेद ८।४।१२। ऋग्वेद ७।१०४।१२

सत्य-असत्य वचन मे परस्पर स्पर्धा रहती है । वे दोनो एक साथ नही रह सकते ।

★

## २८ सत्यवचन की प्रेरणा

१. सत्यपूता वदेद् वाणीम् । —चाणक्यनीति २०।२

सत्य से पवित्र हुयी वाणी बोलो ।

२. भासियव्व हियं सच्चं, निच्चाउत्तेण दुक्करं ।

—उत्तराध्ययन १६।२३

सावधानीपूर्वक हितकारी-सत्य बोलना दुष्कर है ।

३. धम्मं भणे, नाधम्मं,

पियं भणे, नापियं,

सच्चं भणे, नालिकं । —संयुत्तनिकाय १।८।६

धर्म कहना चाहिए, अधर्म नहीं ।
प्रिय कहना चाहिए, अप्रिय नहीं ।
सत्य कहना चाहिए, असत्य नहीं ।

४. सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ।
प्रियं तु नानृतं ब्रूया-देष धर्मः सनातनः ।।

—मनुस्मृति ४।१३६

मनुष्य को चाहिये कि वह सत्य बोले, प्रिय बोले, अप्रिय-सत्य न बोले और असत्य तो प्रिय भी न बोले — यह सनातन धर्म है ।

५. जो बात कहो साफ हो, सुथरी हो, भली हो ।
कडवी न हो, खट्टी न हो, मिसरी की डली हो ।

६ जो बात कहो, साफ कहो। ऐसी बात मत बोलो जिसके दो अर्थ निकलते हो। —पहेलवी टेक्ट्स

७. साँच बोलो। मन मे जिसके लिये हा हो उसे हा कहो, ना हो तो ना कहो।

—तालमुद बावा मेतजिया अ० ४६

८. सत्य को जानना तो सदा चाहिये पर कहना चाहिये कभी-कभी।

९. साची ने साची कहणी निसकसू, ते पिण अवसर जोय।
—श्रीभिक्षु गणि

## २६ सावद्य सत्य का निषध

१ सच्चेसु वा अणवज्ज वयति ।  —सूत्र० ६।२३

सत्यो मे भी निरवद्य-पाप रहित सत्य श्रेष्ठ है ।

२ सच्चपि होइ अलिय, ज परपीडाकर वयण ।

सत्य वचन भी यदि परपीडाकारी है तो वह असत्य ही है ।

३. सच्च च हिय च मिय च गाहण च ।

—प्रश्नव्याकरण सवरद्वार २

ऐमा सत्य वचन वोलना चाहिए जो हित, मित और ग्राह्य हो ।

४ सच्च वि य सजमस्स उवरोहकारग किंचि ण वत्तव्व ।

—प्रश्नव्याकरण स० २

मत्य भी यदि सयम को हानि करनेवाला हो तो वह किंचिन्मात्र भी नही वोलना चाहिये ।

५. सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो ।

—दशवैकालिक ७।११

जिमसे पाप लगता हो ऐसी मत्यभापा भी नही वोलनी चाहिए ।

६ ओए तहीय फरुस वियाणे ।  —सूत्र० १४।२१

मत्यवचन भी कठोर हो तो वह मत वोलो ।

७ तहेव काण काणे त्ति, पडग पडगे त्ति
वाहिय वावि रोगि त्ति, तेण चोरि र -

इसी प्रकार काणे को काणा, नपुसक को नपुसक, रोगी को रोगी और चोर को चोर नही कहना चाहिये, क्योकि सुनने वालो को इससे दुख होता है।

८ हीनाङ्गानतिरिक्ताङ्गान्, विद्याहीनान् वयोऽधिकान्।
रूपद्रव्यविहीनाश्च, जातिहीनाश्च नाक्षिपेत्॥

—मनुस्मृति ४।१४१

हीन अगवालो की, अधिक अगवालो की, मूर्खों की, बूढो की, कुरूपो की, निर्धनो की तथा हीनजातिवालो की "काना" आदि तुच्छ शब्दो द्वारा अवहेलना मत करो।

९ किसी पर ताना न कसो। जो दूसरो पर ताना कसता है, वह खुद ताने का शिकार बनता है।

—पहेलवी टैक्स्ट्स

## ३० सच्चे व्यक्ति

१. सत्य के पुजारी पर परिस्थिति का प्रभाव नही पडना चाहिये। —गांधी

२. हार गये तो सत्याग्रही को हार मानने मे शर्म नही होनी चाहिये। —गाधी

३. सच्चा आदमी समझौते की अपनी शर्तें निभाने पर ध्यान देता है। अनाचारी केवल अपना स्वार्थ देखता है। —ताओ उपनिषद् ७६

४. सत्याग्रह सत्ता प्राप्त करने के लिये नही, सत्ता को शुद्ध करने और उसका सदुपयोग करने के लिये है। —गांधी

५. अन्त साच ने आंच नही, आ है साची बाच।
हीरा हीरा ही रहे, कदे न होवे काच॥

६. झूठा घड़ता ही रहे, हर दम ओघड घाट।
साचा रे चिन्ता नही, बण्या रहे सम्राट॥
रहे कालजा कांपता, झूठा रा दिन रात।
साचा सोवे शान्ति स्यूं, निर्भय मन रलियात।
—सावधानी रो समुद्र, तरग २

७. Sweet are the Slumbers of the virtuous स्वीट आर दी सलम्वर्स ऑफ दी वरचुअस। —अंग्रेजी कहावत
सच्चा सुख से सोवे।

## ३१ सच्चे व्यक्ति का चिन्तन

१. सत्य वदिष्यामि, ऋत वदिष्यामि, तन्मामवतु तद्वक्तार-मवतु। —ऐतरेय उपनिषद् १।३ शान्तिपाठ

सत्य बोलू गा। ऋत—न्यायसदाचारयुक्त सत्य बोलू गा—वह मेरी व बोलनेवाले की रक्षा करे।

२. वाच सत्यमशीय। —यजुर्वेद ३६।४

मैं अपनी वाणी मे सत्य को प्राप्त करू।

३ सा मा सत्योक्ति परिपातु विश्वत। —ऋग्वेद १०।३७।२

सत्यभाषण द्वारा ही मैं अपने को सब बुराइयो से बचा सकता हूं।

४. हमारे घर मे सत्य की प्रतिष्ठा हो, असत्य हम से दूर हो। —यश्न० ६०।५

५ अगर मैं सच्चा होऊ तो साथी जरूर सच्चे होगे।

—गांधी

सच्चवादी, सादेव्वगाणि य देवयाओ करेंति सच्चवयणे रताण । —प्रश्नव्याकरण संवरद्वार २

• महासमुद्र के मध्य दिशा भूले हुये जहाज सत्य के प्रभाव से स्थिर रहते हैं किन्तु डूबते नही है । सत्य के प्रभाव से जल का उपद्रव होने पर मनुष्य न बहते है, न मरते ही है, किन्तु पानी का थाह पा लेते है । सत्य ही का यह प्रभाव है कि मनुष्य अग्नि मे जलते नही, सरल सत्यवादी मनुष्य तपा हुआ तैल, कथीर, लोहा और सीसा छू लेते है, उन्हे हथेली पर रख लेते है किन्तु जलते नही । सत्य को अपनानेवाले पहाड से गिराये जाने पर भी मरते नही है । सत्यधारी महापुरुष युद्ध मे खड्ग हाथ मे लिये हुये विरोधियो के बीच घिर कर भी अक्षत निकल आते है । घोर वध, बध, अभियोग और शत्रुता से भी वे सत्य के प्रभाव से मुक्ति पा लेते है और शत्रुओ के चगुल से बचकर निकल आते है । सत्य से आकृष्ट हो देवता भी सत्यवादियो के समीप बने रहते है ।

## ३३ सच्चों का सम्मान

१ पडित वनारसीदासजी ने सडक पर पेशाव किया। पुलिसवाले ने एक थप्पड मार दिया। उन्होने शाहजहा के पास पुलिसवाले की प्रशसा करके उसकी तनखाह वढवायी, क्योकि वह सच्चा और कर्तव्यनिष्ठ था।

२ जमीदार का बटुआ गिर गया, उसमे बारह सौ रुपयो के नोट थे। वह एक घसकट्टे के पुत्र को मिला। वह लौटाने हेतु बटुवे के मालिक के पास गया। मालिक ने कहा– मेरे चौदह सौ रुपये थे। तकरार हुयी। मजिस्ट्रेट के पास मुकदमा चला। उसने वह बटुआ घसकट्टे को देते हुये कहा—भाई! इसके बटुए मे तो चौदह सौ रुपये थे, बारह सौ नही, अत. इस वटुए का मालिक यह नही है।

३. वि० स० २००९ की बात है—ताराचन्दजी-केसरीचन्दजी (वीकानेर) ने महाराज करणीसिहजी से सोने की चार सौ तसतरिया खरीदी। सवा आना तोला खाद काटने की शर्त थी। हिसाब करनेवाले ने भूल से सवा मासा के हिसाब से खाद काटकर बिल बना दिया। चौवीस हजार का फर्क पड़ता था। ताराचन्दजी के कहने से हिसाब की गलती बतायी गयी। महाराजाश्रीकरणी सिहजी बहुत प्रसन्न हुये और उन्होने लाखो का और भी सोना उनके हाथ वेचा। ★

## ३८ सत्य के विषय में कहावतें

१. सत्ये नास्ति भय क्वचित् । —सस्कृत

२. सॉच ने आच कोनी । —राजस्थानी कहावत

३ साचा कहणा, सुखी रहणा । ,,

४ साचेरी वावडे, झूठेरी को वावड़ेनी । ,,

५. साच तरे नै झूठ डूबे । ,,

६. सत्य ना बेली राम । —गुजराती कहावत

७. दानत पाक, तेने शानी धाक । ,,

८. खरा ने खेर सल्ला, खोटा ने खल्ला । ,,

९. सुयाणी आगल पेट छुपाववु नही, वैद ने गुरु आगल झूठु बोलवु नहि । ,,

★

## ३५ सच्चाई के उदाहरण

१ ऋषि के पूछने पर सत्यकाम ने कहा—घर-घर मे नौकरी करनेवाली दासी जबाला का मैं पुत्र हूँ। सत्य से प्रसन्न होकर गौतम ऋषि ने उसे ब्रह्मज्ञान का उपदेश दिया। अन्यथा ऐसो को पढाना निषिद्ध था। सारे शिष्य चकित हो गये।

—छान्दोग्योपनिषद् ४।४

२ गोपालकृष्ण गोखले के सारे सवाल सही निकले। मास्टर इनाम देने लगे। उन्होने कहा—मैंने एक सवाल मित्र से पूछा था अत सजा के लायक हूँ।

३ सच्ची कमाई का सोना चारो बाजारो मे फेंका गया, किन्तु वापस घर आ गया।

४ घडीसाज ग्राहम ने अपनी शर्त के अनुसार सात वर्ष मे पाँच मिनट से ज्यादा फर्क पडने पर घड़ी की कीमत लौटा दी।

५ मुनीम ने तीन जहाज तम्बाकू खरीदने के लिये पूछा। सेठ ने कहा—नफा-नुकशान तुम्हारा है। मुनीम ने खास ध्यान नही दिया एव माल खरीद लिया। अत्यधिक नफा हुआ, लेकिन सेठ ने एक पाई भी नही ली।

६. एक सच्चे व्यक्ति ने बजाज के यहा कपडे की एक गठरी रखी। अकस्मात् उसकी दुकान मे आग लग गयी। मालिक ने गठडी मागी। बजाज ने कहा—जल गयी। वह बोला—सत्य की कमाई जल नही सकती। झगडा बढा। सत्यवादी ने राजा के सामने अपनी चद्दर के आग लगाई वह नहीं जली। राजा ने बजाज से उसकी गठडी दिलवाई।

७. सत्यव्रत राजा ने शनि की मूर्ति ली। लक्ष्मी-यश चले गये। सत्य को राजा ने पकडे रखा। उसके प्रभाव से लक्ष्मी और यश वापस आ गये। कहा भी है—

सत मत छोडो ठाकरा! सत छोड्या पत जाय।
सत की बाधी लक्ष्मी, फेर मिलेगी आय॥

८ एक बार नेहरूजी चित्तौड से उदयपुर जा रहे थे। एक गेट का फाटक वन्द था और सिगल गिरा हुआ था। आई. जी पी ने पेटवान से फाटक खोलने को कहा। वह बोला—कायदा नही है। नेहरूजी ने उसकी पीठ ठोकते हुए कहा हमे—ऐसे ईमानदार युवको की ही जरूरत है।

९. अजमेर मे एक व्यापारी १० से ४ बजे तक आनी-रुपया नफे से कपड़ा वेचता था। उसकी नियमितता और सच्चाई के कारण दूकान पर ग्राहको की वड़ी-भारी भीड रहती थी।

१०. एक भारतीय विद्यार्थी इगलैण्ड मे गवालो की वस्ती मे रहता था। खिन्न गवाले की लडकी ने एक दिन कहा—दस पौड दूध घट रहा है। विद्यार्थी बोला—पानी मिला दो। लड़की का पिता क्रुद्ध हुआ और बुरी सलाह देने के कारण उसे वहा से निकाल दिया। एव कहा—तुम भारतीयो की बुद्धि खराब है, इसीलिये भारत पर अग्रेजो की सत्ता है।

११ एक हिन्दुस्तानी लाखो का सामान खरीदने इगलैण्ड गया। उन दिनो वहा चीनी का राशन था। जिसके यहा वह ठहरा, उसने फीकी चाय पिलाते हुये कहा—माफ करना ! चीनी नही है और ब्लैक से लाकर आपका स्वागत करना उचित नही लगता अत. चाय फीकी है।

१२ अमृतसर का एक व्यापारी मित्र से मिलने जर्मनी गया। मित्र ने नमस्कार के अतिरिक्त और कोई बात नही की, कारण वह मालिक की ड्युटी पर था। फिर तीन दिन की छुट्टी लेकर मित्र की खूब सेवा की।

१३. डाक्टर पुरुषोत्तमदास टण्डन के यहा एक दिन डा० राजेन्द्रप्रसाद, पडित नेहरू आदि अनेक नेता आ गये। उन दिनो अनाज का राशन था। चावल थोड़े ही थे। रसोइये ने पूछा—क्या करू ? टण्डन ने कहा हो—जितने तो, चावल वना लो और वाकी वाड़ी से लाकर

उबाल लो। रसोइये ने ऐसा ही किया। खाते समय लोगो ने कहा—यह कैसा भोजन ? टण्डनजी बोले—मै स्वय ब्लैक की चीज नही खाता फिर आप लोगो को कैसे खिलाऊँ ?

१४. अमेरिका के राष्ट्रपति इब्राहम लिकन किसी जमाने मे एक स्टोर मे कारकून थे। विधवा बहिन से एक दिन भूल से दस टुकडे (डबल पैसे) ज्यादा ले लिये गये। बहन अपने गाव की ओर रवाना हो गयी। पीछे से हिसाब करने पर पता लगा। लिकन उसके पीछे-पीछे दस मील दौडे एव दस टुकडे वापिस किये।

१५. एक अमेरिका का प्रवासी यूरोप गया। उसके पास एक कीमती कैमेरा था। उसमे स्वीट्जरलैण्ड के प्राकृतिक दृश्यो के अनेक फोटो भी थे। पेरिस मे मित्र के घर कई दिन ठहर कर वह इगलैण्ड गया। रास्ते मे उसका कैमेरा कही खो गया। उसने मित्र को एक पत्र लिखा। पन्द्रह दिनो बाद कैमेरा मिलने का समाचार मित्र द्वारा प्राप्त हुआ। दो दिना बाद एक आदमी कैमेरा लेकर आ ही गया। पूछने पर वह बोला—इगलैण्ड जाते समय आप मेरी ही टैक्सी मे बैठे थे। मुझे कैमेरा मिला उसके चित्र मैने देखे। एक चित्र मे मोटर थी। उसके नम्बर १७ गुने एनलार्ज करने से पढे गये। पता लगाकर आपके मित्र से मिला एव उनकी आज्ञा से यहा आया

हूँ। प्रामाणिकता पर मुग्ध होकर कैमरे के स्वामी ने आगन्तुक को काफी इनाम दिया।

१६ इगलैण्ड की महिला ने इटली मे घडी खरीदी, किन्तु वह व्यापारी द्वारा कुछ ठग ली गयी। उसने प्रेसिडेट मुसोलिनी को एक पत्र लिखा। प्रेसिडेट ने दिलचस्पी ली एव उस व्यापारी का लाइसेस जब्त कर लिया। व्यापारी ने इगलैण्ड की महिला से माफी मागी। महिला ने मुसोलिनी को पत्र लिखा तब कही व्यापारी की दुकान चालू हुयी।

१७ हरियासर का छोगजी ठाकुर १७ नवर लेसर का पुलिसमैन था। और उसका १८) रुपया मासिक वेतन था। एक बार रात को वह कलकत्ते के लार्ड कैनिग की कोठी पर पहरा लगा रहा था। मेम साहेबा की नीद उड गयी। लार्ड ने पुलिस को घूमने की मनाही की। वह नही माना, क्योकि उसके अफसर का ऐसा करने का हुक्म था। उसकी कर्तव्यनिष्ठा और प्रामाणिकता पर प्रसन्न होकर साहेब ने १७५) रुपये मासिक वेतन पर उसे कप्तान बना दिया।

१८. लार्ड इडन के पास एक अग्रेज की लडकी आया करती थी। कलकत्ते का पुलिस कमीश्नर सरस्ट्वार्क होक वारट लेकर आया। लार्ड का होश उड गया एव उसके पैर पकड लिये। उसी होक के नाम से कल[illegible] साहेब का बाजार बसाया गया।

## ३७ बेईमानी के चित्र

१. ईमानदारी की परीक्षा के लिये पूना के आसपास साने गुरुजी के भक्तो ने गुरुजी के नाम से छपायी हुई पुस्तको की थप्पी और पेटी रखी। शाम को सभालने पर चालीस परसेंट पैसे मिले।

२. वडे स्टेशनो पर टिकट लेनेवालो की लाइन को चीरकर श्रीमन्त पीछे आकर भी स्टेशनबाबू से पहले टिकट ले लेते है। कपडा-अनाज-चीनी आदि का राशन (Ration) लेते समय अधिकारियो से मिलकर बडे आदमी अच्छा-अच्छा माल पहले ही उठा लेते हैं। सरकारी कानून का भग करके साइकल, मोटर व रिक्शा वाले पुलिस की चोकी निकलते ही साइकल आदि की वत्तियाँ बुझा देते हैं। अध्यापक लोग निर्धारित सख्या से अधिक ट्युसन करते हैं। विद्यार्थी परीक्षा के समय नकल करके उत्तीर्ण होने की कोशिश करते हैं। सेठ लोग मुनीम-गुमास्तो से आठ-दस ... अधिक काम करवाते हैं। छुट्टी के दिनो मे ... दुकानो को वद करके अन्दर चोरी से

## ३६ ईमानदार

१. ईमान क्या है ? सब्र करना और दूसरो की भलाई करना । —मुहम्मद साहब

२. आदमी पहले ईमानदार और नेक बने और बाद में तहजीव और खुशनुदी की पालिश चढ़ाये । —कनफ्युशियस

३. जिसे अच्छे काम करने मे सुख हो और बुरे काम करने से दुख हो, वही ईमानदार होता है । —मुहम्मद

४. ईमानदार मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्कृष्टकृति है—फ्री थिकर

५. ईमानदार आदमी का सोचना लगभग न्यायपूर्ण होता है । —रूसो

६. ईमानदार फी जमाना दश हजार मे एक होता है । —शेक्सपियर

७. सुना जाता है कि स्वीट्जरलैण्ड मे ट्राफिक पुलिस नही है । कही-कही रेलवे-फाटक और टिकटनिरीक्षक भी नही है । तिब्वत मे किसी की लकड़ी गिर जाती है तो उसे दूसरा कोई व्यक्ति छूता तक नही । इ गलेड मे समाचार पत्रो की थप्पी एक स्थान पर रखकर उसके पास एक पेटी रख दी जाती है । लोग अखवार ले जाते है और उसकी कीमत के पैसे पेटी मे डाल देते है, सन्ध्या समय मालिक आकर हिसाव कर लेता है ।

★

## ३७ बेईमानी के चित्र

१ ईमानदारी की परीक्षा के लिये पूना के आसपास साने गुरुजी के भक्तो ने गुरुजी के नाम से छपायी हुई पुस्तको की थप्पी और पेटी रखी। शाम को सभालने पर चालीस परसेंट पैसे मिले।

२ वडे स्टेशनो पर टिकट लेनेवालो की लाइन को चीरकर श्रीमन्त पीछे आकर भी स्टेशनबाबू से पहले टिकट ले लेते है। कपडा-अनाज-चीनी आदि का राशन (Ration) लेते समय अधिकारियो से मिलकर बड़े आदमी अच्छा-अच्छा माल पहले ही उठा लेते हैं। सरकारी कानून का भग करके साइकल, मोटर व रिक्शा वाले पुलिस की चोकी निकलते ही साइकल आदि की वत्तियाँ बुझा देते हैं। अध्यापक लोग निर्धारित सख्या से अधिक ट्युसन करते हैं। विद्यार्थी परीक्षा के समय नकल करके उत्तीर्ण होने की कोशिश करते हैं। सेठ लोग मुनीम-गुमास्तो से आठ-दस घटा से अधिक काम करवाते हैं। छुट्टी के दिनो मे व्यापारी आगे से दुकानो को वद करके अन्दर चोरी से काम करते हैं।

रेलवे का पास दूसरे के नाम का होता है, पर उससे दूसरा ही व्यक्ति सफर करता है। धनिक-रोगी हाथ मे आ जाने पर डाक्टर इलाज लम्बा चलाने का प्रयत्न करते है तथा गरीबो को अच्छी दवा नही देते। ऐसे ही वकील-वैरिष्टर लोग श्रीमन्तो के कैसों को उलझाकर उनसे पैसे झाडते है।

३. कमजोरी को मैं बुरा नही समझता, मूर्खता को मै माफ कर देता हूँ, मगर बेईमानी मुझे तीर-सी चुभती है।

—नेहरू

# चौथा कोष्ठक

## १ असत्य

### असत्य का स्वरूप

१ असद्भावोद्भावनमनृतम् । —जैनसिद्धान्तदीपिका ७।७

अयथार्थ भावो को प्रकट करने का नाम अनृत—असत्य है ।

२ मैं क्या हूँ ? सत्य का एक व्यक्त रूप । वह क्या है ? असत्य का एक व्यक्त रूप । दोनो एको मे जो अन्तर है वह 'असत्य' है ।

३. आधा सत्य अक्सर महान् झूठ होता है । —फ्रैंकलिन

४. असत्य का समर्थन आत्मा कभी नही करती और बोलते समय कुछ रोकती भी है ।

५ अप्पणो थवणा, परेसु निंदा । —प्रश्नव्याकरण २

अपनी प्रशंसा और दूसरों की निंदा भी असत्य के ही समकक्ष है ।

६. कतमा च, भिक्खवे, मिच्छा वाचा ?
मुसावादो, पिसुणा वाचा, फरुसा वाचा, सम्फप्पलापो ।
—मज्झिमनिकाय ३।१७।१

भिक्षुओ ! मिथ्यावचन क्या है ? मृषावाद (झूठ), चुगली, कटुवचन और बकवास, मिथ्या वचन है ।

७ कोवाकुलचित्तो ज संतमवि भासति, तं मोसमेव भवति ।
—दशवैकालिक-चूलिका ७।७

क्रोध से क्षुब्ध हुए व्यक्ति का सत्यभाषण भी असत्य ही है ।★

# २ असत्य के भेद और फल

१. दसविहे मोसे पण्णत्ते त जहा—

कोहे माणे माया, लोहे पिज्जे तहेव दोसे य।

हासभये अक्खाइय, उवघातनिस्सिए दसमे।

—स्थानाग १०।७४१ तथा प्रज्ञापना-११

असत्य दस प्रकार का कहा है—

(१) क्रोधनिश्रित (२) माननिश्रित (३) मायानिश्रित (४) लोभनिश्रित (५) प्रेमनिश्रित (६) द्वेपनिश्रित (७) हास्य-निश्रित (८) भयनिश्रित (९) आख्यायिकानिश्रित (१०) उपघातनिश्रित।

२. चार प्रकार का असत्य :—

(१) **सद्भावप्रतिषेध**=आत्मा-पुण्य-पाप आदि का निषेध करना।
(२) **असद्भावोद्भावन**=जीवहिंसा मे धर्म कहना।
(३) **अर्थान्तर**=शास्त्रो का अर्थ बदल देना।
(४) **गर्हा**=परनिन्दायुक्त वचन बोलना।

—दशवैकालिक अ० ४ टीका

३. मुसावाए पंचविहे पण्णत्ते त जहा—कन्नालीए, गवालीए, भोमालीए, नासावहारे, कूडसक्खिज्जे।

—श्रावकप्रतिक्रमण

षावाद-असत्य पाच प्रकार का कहा है—यथा—(१) कन्या-

वर आदि से सम्बन्धित (२) गाय आदि से सम्बन्धित (३) भूमि-मकान आदि से सम्बन्धित (४) धरोहर से सम्बन्धित (५) साक्षी से सम्बन्धित।

४ मन्मनत्व काहलत्व, मूकत्व मुखरोगिताम्।
वीक्ष्यासत्यफल कन्यालीकाद्यसत्यमुत्सृजेत्॥

—योगशास्त्र २।५३

मन ही मन मे बोलना—दूसरो को मन की बात कहने की शक्ति का न होना 'मन्मनत्व' दोष है। जीभ के लडखडा जाने से स्पष्ट उच्चारण ही न कर सकना— मूकत्व' दोष है। मुख मे विभिन्न प्रकार की बाधाएँ उत्पन्न हो जाना 'मुखरोगिता' दोष है। यह सब असत्य भाषण करने के फल हैं। इन फलो को देखकर श्रावक को कन्यालीक आदि स्थूल असत्य भाषण का त्याग करना चाहिए।

५ पञ्च पश्वनृते हन्ति, दशहन्ति गवानृते।
शत कन्यानृते हन्ति सहस्र पुरुषानृते॥

—पञ्चतत्र ३।१०६

पशु-भेड बकरी आदि के विषय मे झूठ बोलनेवाला पाच मनुष्यो की हत्या करता है, गौ के विषय मे झूठ बोलनेवाला दस मनुष्यो की, कन्या के विषय मे झूठ बोलनेवाला सौ मनुष्यो की और पुरुष के विषय मे झूठबोलने वाला हजार मनुष्यो की हत्या करता है।

६ साक्ष्येऽनृत वदन् पाशै-र्बद्‌ध्यते वारुणैर्भृशम्।
विवशः शतमाजाति-स्तस्माद् साक्ष्य वदेहतम्॥

—मनुस्मृति

साक्षी मे जो झूठ वोलता है वह सौ जन्मो तक वरुण की फासी मे वाधा जाता है । अतः साक्षी सच्ची ही देना चाहिये ।

७. Thou shalt not bear false witness against thy neeghbour.

दाउ शैल्ट नोट वीअर फाल्स विटनेश अगेंस्ट दाइ नेवर ।

—वाइविल

अपने पडौसी के विरुद्ध झूठी साक्षी मत दो ।

# ३ असत्य की निन्दा

१. नानृतात् पातक परम् । —महाभारत शान्तिपर्व १६२।२४

असत्य से बढकर दूसरा कोई भी पाप नही है ।

२ एकत सकल पाप-मसत्योत्थं ततोऽन्यतः ।
साम्यमेव वदन्त्यार्या - स्तुलाया धृतयोस्तयो. ॥

—ज्ञानार्णव पृष्ठ १२६

एक ओर जगत के समस्त पाप एव दूसरी ओर असत्य का पाप —इन दोनो को तराजू मे तोला जाय तो बराबर होगें—ऐसा आर्यपुरुष कहते हैं ।

३. नहि असत्य सम पातकपुजा ।
गिरि सम होई न कोटिक-गुंजा ॥[1] —संत तुलसीदास

४ थोडा-सा झूठ भी मनुष्य का नाश कर देता है, जैसे दूध को एक बूंद जहर ।

५ असत्य तो एक नशा है। नशा छुड़ाने पर नशाबाज़ कुछ दिन दु:ख पाता है किन्तु बाद में सुखी हो जाता है।

६ असत्यमप्रत्ययमूलकारणम् । —सिन्दूर० ३१

असत्य अविश्वास का मूल कारण है ।

---

१ गुंजा—चिरमी

. अविस्सासो य भूयाण, तम्हा मोस विवज्जए ।

—दशवैकालिक ६।१३

असत्य प्राणियो के लिये अविश्वास का स्थान है, अत इसे (मायायुक्त असत्य को) छोडो

. मायामोस वड्ढई लोभदोसा । —उत्तराध्ययन ३२।३०

माया-मृषावाद लोभ के दोषो को बढाता है ।

. खड्गधारा मधुलिप्ता, विद्धि मायामृषा तत. ।

—हिंगुलप्रकरण

मायायुक्तमृषा को मधुलिप्त तलवार की धार के समान समझो।

फल यथेन्द्रवारुण्या., कटु मायामृषावच. । —हिंगुल०

मायामृषावाद के फल इन्द्रवारुणी लता के फलो के समान कटु और प्राणनाशक है ।

. दीप न जलता लौ जलती है ।

सत्य सदा जो मौन रहा है, सहजगम्य कैसे हो जाता ?
बाह्यान्वेषी मानव कैसे, उसके अन्तर्दर्शन पाता ?
जबकि युगो से वितथवाद की, जीभ सदा रहती चलती है,
आदर्शों की छाया मे ही पापो की दुनिया पलती है।
दीप न जलता लौ जलती है । —मन्थन

चरन चौंच लोचन रंग्या, चलत मराली चाल ।
छीर-नीर विवरण समय, वक उघरत तत्काल ।।

—संत तुलसीदास

. सकपट झूठ बोलनेवाले को कोई पदवी न देना ।

—व्यवहार सूत्र ३।२६ से ३४ तक

★

४

## असत्यवचन

१. अलियवयण भयकर, दुहकर, अयसकरं वेरकरग।

—प्रश्नव्याकरण २

असत्यवचन ······भय, दु ख, अयश एव वैर का करने वाला है।

२. अमेध्यो वै पुरुषो यदनृत वदति तेन पूतिरन्तरत ।

—शतपथब्राह्मण १।१।१।१

जो मनुष्य झूठ बोलता है वह अपवित्र है। झूठ बोलने से मन मे भीतर गदा रहता है।

३. मुसाभासा निरत्थिया।

—उत्तराध्ययन १८।२६

झूठवाली भाषा निरर्थक है।

४ हिंसग न मुस बूया।

—दशवैकालिक ६।१२

हिंसाकारी असत्य नही बोलना चाहिये।

## ५ असत्यवादी

१. जो झूठ बोलता है, वह नाश को प्राप्त होगा।—बाइबिल

२ ईश्वर झूठो से नाखुश और सच्चो से खुश रहता है।

—बाइबिल

३ बुज़दिलो के सिवाय और कोई झूठ नही बोलता।

—मर्फी

४. मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरते।

—उत्तराध्ययन ३२।३१

दुष्ट आत्मा झूठ के पहले, पीछे एव प्रयोग के समय—ऐसे तीनो ही काल मे दु:खी होता है।

५. अहल्या गृहमागत्य, मुनिरूपधरो नृप.।
गौतमोहमिति प्राह, कामाक्रान्त. शचीपति.।।
कर्णश्चापि महाशूरो, धनुर्विद्योपलब्धये।
गुरोरग्रे महाराज ! विप्रोऽहमिति चाब्रवीत्।।

—ब्रह्मानन्द गीता

इन्द्र भी काम के वश गौतममुनि के रूप मे अहल्या के घर आकर "मैं गौतम हूँ" ऐसे झूठ बोले। महावीर कर्ण भी धनुर्विद्या प्राप्तकरने के लिये गुरु परशुराम के आगे "मैं ब्राह्मण हूँ" ऐसे झूठ बोले।

६ यस्स कस्सचि सम्पजानमुसावादे नत्थि लज्जा ।
नाहं तस्स किञ्चि पाप अकरणीय ति वदामि ।

—मज्झिमनिकाय २।१।१।१

जिसे जान-बूझकर झूठ बोलने मे लज्जा नही है, उसकेलिए कोई भी पाप कर्म अकरणीय नही है, ऐसा मैं मानता हूं ।

७. असतगुणुदीरका य सतगुणनासका य ।

—प्रश्नव्याकरण० २।१

असत्यभाषी लोग गुणहीन के लिए गुणो का बखान करते हैं और गुणी के वास्तविक गुणो का अपलाप करते हैं ।

## ६ असत्य के विषय में विविध

१. आख्या देखी परसराम, कदे न झूठी होय।

२ **आखो देखी बात भी झूठ —**

दासी रानी का दिया हुआ वेश पहिन कर पलग पर सो रही थी। रानी समझकर राजा भी साथ सो गया। उन्हे साथ सोये देखकर रानी ने दिवान से शिकायत की। इधर जागकर दासी भागी, पीछे-पीछे राजा भी चला। रानी को दीवान से बात करती देखकर राजा क्रुद्ध हुआ। दोनो को कैद किया। मौका पाकर दीवान ने भेद खोला एव दासी ने सत्य घटना सुनायी।

३ असत्य मे शक्ति नही होती। उसे अपने अस्तित्व के लिये सत्य का आश्रय लेना पडता है। —**विनोबा**

४. **सत्य के पैर :—**

सत्य को आगे चलता देखकर झूठ को ईर्ष्या हुयी। अपने साथियो—क्रोध लोभ आदि से मिलकर उसने सत्य के पैर काटकर अपने शरीर के साथ लगा लिये। अव तो झूठ सत्य से आगे निकलने लगा एव सत्य के नाम से

पूजा पाने लगा। लेकिन नकली पैर होने से समय-समय पर वह लडखडाने लगा।

५ रूम ते शाह निकालदियो अरु,
दिल्ली तें औरगजेब पठायो,
मारु ते काढदियो जसवत,
उदेपुर वास न राण थपायो।
बुदी के हाडे ने नाक हर्यो,
अथ रहण कु ठोर कही नही पायो,
तिम्मिर खाय पछाड पड्यो तव,
ढूढ के भूठ ढूडाड मे आयो॥

—भावाश्लोकसागर

६ जा दिन ब्रह्माने सृष्टि रची,
कहे तादिन यू ज कियो वटवारो,
पूरव विद्या को वर्ण कियो अरु,
पश्चिमलोक कियो सचवाडो।
दक्षिण द्रव्य निवासकियो,
पुनि उत्तर देवन को अवतारो,
जैपुर भूठ स्यू पूर दियो अरु,
वाको रह्यो मो वस्यो भूठवाडो॥

७ चिणा चाबकर कहे, आज म्हे चावल खाया,
नहीं, छाग पर फून, कहे हेलो स्यू आया।
ऊँची देख दुकान, कहे चुणवाई मोने,

काम काज के माय, बेठवा फुरसत कोने।
झूठी बात बणाय के, फेर गली मे जा घसे,
प्रेमसुख सेवग कहे, इसा लोग जैपुर बसे॥

८. चूरू-निवासी तोलारामजी सुराणा ने जयपुर मे टिगटी लेनी चाही। दुकानदार ने २०) रुपये मागे और आखिर मे आठ आना मे देदी। कितना झूठ?

९. झूठ की चिढ सबको है, पर अपने झूठ की नही।

# ७ असत्य के सम्बन्ध में कहावतें

१ अगस्त्य ऋषि ना वायदा।[1] —गुजराती कहावत

२. दीकरा! मोटो था, परणावीश। ,, ,,

३ सोमवती अमावस ने शुक्रवार। ,, ,,

४ वायदा पर वायदो, तेमा कोण काढे फायदो। ,,

५ वारमणनु कोलु ने तेरमण नी तुवी। ,, ,,

६ वार गाउ नो माडवो ने तेर गाउनो वास। ,, ,,

७ एक पूणी पडी तेमा वार गाम दवाई गया। ,, ,,

८ आधला चोरे चादरडु दीठु। ,, ,,

९ नागु न्हावु, टाढु खावु ने झुट्ठु गावू। ,, ,,

१० चोर रो पकडै, जार रो पकडै, पण झूठा आदमी रो कांई पकडै? —राजस्थानी कहावत

११ नौ हाथ री काकडी 'र' तेरे हाथ रो बीज। ,, ,,

१२. धूल विना धडो नही, झूठ विना झगडो नही। ,,

१३. खोटे खत मे साख कुण घाले? ,, ,,

---

१. अगस्त्यऋषि यात्रार्थ जा रहे थे। विन्ध्याचल ने नीचे झुककर प्रणाम किया। "मै वापस आवू तब तक ऐसे ही रहना"—यो कहकर वे जावा-सुमात्रा की तरफ चले गये और वहीं उनका स्वर्गवास हो गया। फलस्वरूप विन्ध्याचल नीचा ही रह गया एव उत्तरभारत से दक्षिण मे जाने का मार्ग साफ हो गया। (झूठा वायदा करनेवालो के लिये उपरोक्त कहावत है।)

८ चोरी

१. अदत्तादान स्तेयम् । —जैनसिद्धान्तदीपिका ७।८

बिना दी हुयी चीज को लेना स्तेय अर्थात् चोरी है ।

२. जिस वस्तु की हमे आवश्यकता नही है, उसे रखना, लेना भी चोरी है । —गांधी

३ चोरिक्क परहड अदत्त कूरकड''' असजमो 'अपच्चओ-कुलमसी'' इच्छा मुच्छा तण्हा गेही । —प्रश्नव्याकरण ३

चोरी के अनेक नाम है जैसे—चोरिक्य, परहृत, अदत्त, क्रूर-कृत, असयम, अप्रत्यय, अविश्वास, कुलमसी, इच्छा, मूर्च्छा, तृष्णा, गृद्धि, आदि-आदि ।

४ अनिष्टादप्यनिष्टं च, अदत्तमपलक्षणे । —हिंगुलप्रकरण

चोरी करना निकृष्ट से निकृष्ट कुलक्षण है ।

५. अदत्तादाण''अकित्तिकरण, अणज्ज साहुगरहणिज्जं, पियजण-मित्तजण-भेद-विप्पीतिकारक रागदोसबहुल ।
—प्रश्नव्याकरण ३

अदत्तादान (चोरी) अयश का करनेवाला अनार्यकर्म है, सभी सन्तो द्वारा निन्दनीय है, प्रियजन-मित्रजन मे भेद एव अप्रीति उत्पन्न करनेवाला है और राग-द्वेष से भरा हुआ है ।

६. गुणा गौणत्वमायान्ति, याति विद्या विडम्बनाम् ।
चौर्येणाऽकीर्तय. पुसा, शिरस्यादधते पदम् ॥
—ज्ञानार्णव पृ० १२६

चोरी करने से मनुष्य के गुण गौण हो जाते हैं, विद्या निकम्मी हो जाती है और अकीर्ति-बदनामी उसके शिर पर चढ जाती है।

७ दौर्भाग्य च दरिद्रत्व, लभते चौर्यतो नर ।

—उपदेशप्रासाद भाग-१

चोरी से मनुष्य दौर्भाग्य और दरिद्रता को प्राप्त होता है

८ एकस्यैकक्षण दु ख-मार्यमाणस्य जायते ।
सपुत्रपौत्रस्य पुनर्यावज्जीव हृते धने ।

—योगशास्त्र २।६८

९ मारे जानेवाले जीव को, अकेले को और एक क्षण के लिए दु:ख होता है। किन्तु जिसका धन हरण कर लिया जाता है, उसे और उसके पुत्र, पौत्रो को जीवन भर के लिए दु ख होता है।

१० वर भिक्षाशित्व न च पर धनास्वादनसुखम् ।

—हितोपदेश १।१३७

मागकर खाना अच्छा है किन्तु परधन के स्वाद का सुख अच्छा नहीं।

११ इमाम अहमद हम्बल ने एक स्त्री के पूछने पर कहा—शाही रोशनी मे सूत कातना तेरे लिये नाजायज है।

# चोरी के कारण

१. अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययइ अदत्त।

—उत्तराध्ययन ३२।२६

असन्तोष के दोष से दु खी प्राणी लोभ से कलुषित होकर चोरी करता है।

२. चोरी की मा गरीबी है, और बाप अज्ञान है। ज्ञानी व्यक्ति गरीबी मे भी चोरी नही करता।

३. अधनान धने अननुप्पदीयमाने,
दालिद्दिय वेपुल्लमगमासि।
दालिद्दिये वेपुल्ल गते।
अदिन्नादान वेपुल्लमगमासि !

—दीघनिकाय-३।३।४

निर्धनो को धन न दिये जाने से दरिद्रता बहुत वढ गई और दरिद्रता के बहुत बढ जाने से चोरी बहुत बढ गई है।

४. चोरी के चार बाह्य कारण है, जैसे—

(१) **बेकारी**—इसका मुख्य कारण है राज्य की अव्यवस्था।

(२) **फिजूलखर्ची**—इसके कारण हैं दुर्व्यसन और सामाजिक-कुप्रथाये।

(३) **यश कीर्ति**—कीर्ति के लिये लेखक-कवि दूसरो के भाव व पद्य चुराते हैं। राजा या सेठ-साहूकार दूसरो

को लूटकर मौके पर लाखो-करोडो रुपये उडाते हैं। साधु-सन्त भ्रष्ट होते हुये भी साधु के नाम से अपनी पूजा करवाते हैं।

(४) **स्वभाव**—कई व्यक्ति आदत से लाचार होकर भी चोरी करते हैं।

**५ मा-बेटे की कहानी**—

मा की आदत चोरी करने की थी। जिस-किसी के घर जाती, कुछ न कुछ उठा ही लाती। बेटा उसे बार-बार टोकता रहता। एकबार वह विवाह के प्रसग पर माता के सात ननिहाल गया। वहा उसने मा को पूरी तरह सजग रहने के लिये कह दिया। विवाह की सम्पन्नता के बाद बहन-बेटिया विदा होने लगी। मा ने मौका पाकर पाच-सात काचलिया उठा ली। बेटे ने कहा—'मा-मा! चोरी क्यो कर रही हो?' उत्तर मिला—चोरी कहा कर रही हूँ मैं तो स्वभाव के डूजा लगा रही हूँ, अर्थात् आदत की लाचारी पूरी कर रही हूँ।

★

# चोरी के भेद

१. सामी-जीवादत्त, तित्थयरेण तहेव य गुरुहि ।
एवमदत्तसरूव, परूविय आगमधरेहि ॥
—प्रश्नव्याकरण स० ३, सूत्र० २६ टीका तथा धर्मसग्रह २।२० टीका

स्वामीअदत्त, जीवअदत्त, देवअदत्त और गुरुअदत्त—ज्ञानियो ने चोरी के ये चार स्वरूप बतलाये है ।

२. अदिन्नादाणे पचविहे पण्णत्ते त जहा—खत्तखणण, गठि-भेयण, जतुग्घाडण, पडियवत्थुहरण, ससामियवत्थुहरण ।
—श्रावक-प्रतिक्रमण

अदत्तादान—चोरी पाच प्रकार की कही है—

(१) खात खनना अर्थात् भीत फोडना ।
(२) गठडी खोलना ।
(३) ताला तोडना ।
(४) मालिक को जानते हुए उसकी पडी हुयी चीज को उठाना ।
(५) उपस्थिति मे डाका लूट-खसोट आदि द्वारा उसकी वस्तु लेना ।

३. तुलामानयोरव्यवस्था व्यवहार दूषयति ।
—नीतिवाक्यामृत ८।१३

तोल-माप की अव्यवस्था व्यवहार को दूषित करती है ।

४. व ला तन्कु सुऽल् मिक्याल वऽल् मीजान ।
—कुरान १४।११।-४

नाप-तोल में कमी न किया करो।

५. वैलुँल्लिल् मुत्तफ्फिफीन। —कुरान १४।८३.१

बडी खराबी है नाप-तोल मे कमी करनेवालों के लिये।

६ व ला ततवद्दलुऽल् खबीस वित्तय्यिबि।

—कुरान १४।८।२

बुरे माल को अच्छे माल मे मत बदलो।

७ जो शख्स किसी का माल झूठीकसम खाकर मार लेगा वह अल्लाह के सामने कोढी बनकर पेश होगा।

—अबीदाऊद

८. न्याय मे, परिमाण मे, तोल मे और नाप मे कपट न करना। सच्चा तराजू, धर्म के बटखरे, सच्चा एपा और धर्म के तोल तुम्हारे पास रहे।

—पु० बा० तोरा० लैव्य-व्यवस्था १६।३५-३६

९. चोरी के दो प्रकार —

(१) सभ्यचोरी—व्यापार मे की जानेवाली चोरी।

(२) असभ्यचोरी—सेंध आदि लगाना, डाका डालना।

१० चोरी के चार प्रकार —

(१) द्रव्यचोरी—धन आदि चुरा लेना।

(२) क्षेत्रचोरी—खेत, बाग या जमीन दबा लेना।

(३) कालचोरी—वेतन, किराया, ब्याज आदि के लेन-देन मे न्यूनाधिक समय कहना।

(४) भावचोरी—किसी कवि, लेखक या वक्ता के भावों को चुराना तथा आगमों के अर्थ को बदल देना

## ११ चोरी का त्याग

१. अदिन्नमन्नेसु य णो गहेज्जा । —सूत्र० १०।२
विना दी हुयी किसी की कोई भी चीज नहीं लेनी चाहिये ।

२ नायएज्ज तणामवि । —उत्तराध्ययन ६।८
मालिक की आज्ञा विना तृण मात्र भी नहीं लेना चाहिये ।

३. कस्यचित् किमपि नो हरणीयम् ।
किसी का कुछ भी नही चुराना चाहिये ।

४. मा गृध कस्यचिद् धनम् । —यजुर्वेद ३६।२२
किसी के धन पर मत ललचाओ ।

५. Thou Shalt not Steal, दाउ शैल्ट नोट स्टील ।
तुम चोरी मत करो । —वाइविल

६. पतित विस्मृत नष्ट, स्थितं स्थापितमाहितम् ।
अदत्त नाददीत स्व, परकीय क्वचित् सुधी. ।।
—योगशास्त्र २।६६

पडा हुआ, भूला हुआ, चोरा हुआ, घर मे रहा हुआ, कही रखा हुआ, दूसरो का धन अच्छी वुद्धिवाले को कभी न लेना चाहिये ।

७. दत्तमणुन्नायनाम होइ तइय सुव्वया ! महव्वय ।
—प्रश्नव्याकरण सं० ३

हे सुव्रत ! दत्तानुज्ञात-अचौर्य अर्थात् चोरीत्याग नामक तीसरा महाव्रत है ।

८. असविभागी, असगहरुई अप्पमाणभोई..से तारिसए नाराहए वयमिण। —प्रश्नव्याकरण सं० ३

जो असविभागी है—प्राप्त सामग्री का ठीक तरह वितरण नहीं करता है, असग्रहरुचि है—साथियों के लिए समय पर उचित सामग्री का सग्रह कर रखने मे रुचि नहीं रखता है, अप्रमाण-भोजी है—मर्यादा से अधिक भोजन करनेवाला-पेटू है, वह अस्तेयव्रत की सम्यक् आराधना नहीं कर सकता।

९ सविभागसीले सगहोवग्गहकुसले।

—प्रश्नव्याकरण स० ३

जो सविभागशील है—प्राप्त सामग्री का ठीक तरह वितरण करता है, सग्रह और उपग्रह मे कुशल है—साथियों के लिए यथावसर भोजनादि सामग्री जुटाने मे दक्ष है, वही अस्तेयव्रत की सम्यक् आराधना कर सकता है।

१० अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्।

—पातजल योगदर्शन २।३७

अचौर्य महाव्रत की पूर्ण साधना हो जाने पर व्यक्ति दिव्यदृष्टि हो जाता है। पृथ्वी मे रहे हुये गुप्त रत्न भी उसे दीखने लगते है।

११ दुर्लभ चीजों का ज्यादा दाम लगाना छोड दें तो चोरी रुकेगी। —ताओ उपनिषद ३

१२ परिहरति विपत्त यो न गृह्णात्यदत्तम्।

—सिन्दूरप्रकरण

जो चोरी नहीं करता, उसके पास विपत्ति नहीं ठहरती।

# चोर

१. परदव्वहरा नरा निरणुकपा निरवेक्खा।

—प्रश्नव्याकरण स० ३

पराये धन का हरण करनेवाले मनुष्य अर्थात् चोर निर्दय एव परभव के प्रति निरपेक्ष होते है।

२. यावज्जठर भ्रियते, तावत् स्वत्व हि देहिनाम्।
अधिक योऽभिमन्येत, सस्तेनो दण्डमर्हति।

—महाभारत

पेट भरने के लिए जितना पदार्थ जरूरी है उतने पर ही प्राणियो का स्वत्व-अधिकार है। उससे अधिक पर जो आसक्ति रखता है वह चोर है एव दण्ड के योग्य है।

३. जो अपने हिस्से का काम किये बिना भोजन पाते है, वे चोर है।

४ चौरश्चौरापको मन्त्री, भेदक: काणक: क्रयी।
अन्नद स्थानदश्चैव, चौर: सप्तविध' स्मृत.॥

चोर सात प्रकार का होता हे। जैसे—(१) चोरी करनेवाला (२) चोरी करवानेवाला (३) चोर से सलाह करनेवाला (४) चोरी के लिये भेद वतानेवाला (५) चोरी का माल लेने वाला (६) चोरो को अन्न देनेवाला (७) चोरो को स्थान देने वाला।

५. कदम-कदम पर हैं खड़े जग में धन के चोर।
लेकिन विरले ही यहाँ, मिलते मन के चोर ॥

—दोहासंदोह

६. यानशय्यासनान्यस्य, कूपोद्यानगृहाणि च ।
अदत्तान्युपभुञ्जान, एनसः स्यात् तुरीयभाक् ॥

—मनुस्मृति ४।२०२

सवारी, शय्या, आसन, कुआ, बाग और घर—ये सब स्वामी के बिना दिये हुए भोग जायें तो भोगनेवाला बनवानेवाले के पाप का चौथाई हिस्सेदार बन जाता है।

७. शंख-लिखित दो भाई संन्यास लेकर भिन्न-भिन्न झोपड़ियों में रहते थे। एक बार लिखित ने भाई की झोपड़ी से बिना पूछे फल तोड़ लिया। दण्ड में सुधन्वा राजा ने उसके हाथ कटवाये। —महाभारत

८. चौराणामनृतं बलम् ।
चोरों के पास असत्य का बल होता है।

९. चोरे गते वा किमु सावधानः ।
चोरी करके चोर के चले जाने के बाद सावधान होने से क्या लाभ ?

१०. तस्करस्य कुतो धर्मः ।
चोर के पास धर्म कहाँ ?

११. विशन्ति नरकं घोरं दुःखज्वालाकरालितम् ।
अमुत्र नियतं मूढाः, प्राणिनश्चौर्यचर्विताः ॥

—ज्ञानार्णव पृष्ठ १३[illegible]

चोरी करनेवाले मूढ़ प्राणी परलोक में दुःखरूपी ज्वाला से [illegible] घोर नरक में निश्चयपूर्वक प्रवेश करते हैं।

★

# चोरों का सुधार

पडित वनारसीदास जी रात मे सो रहे थे। नौ चोर आये। काली मिरचो की गठडियाँ बाधी। आठो को तो एक दूसरे ने उठवा दी किन्तु नौवा कह रहा था—मेरी भी गठडी उटवाओ। सवके सिर पर गठड़ियाँ लदी थी—यह देखकर वनारसीदास जी उठे और गठड़ी उठवाकर चुपचाप वापिस सो गये। चोर चले तो सही, पर गठड़ी उठवानेवाला कौन था ?—यह पता लगाने पुन: आये। मालिक ने सच्चा हाल कहकर उपदेश दिया। चोर समझे और चोरी का त्याग कर गये।

जयपुर के लाला भैरू लाल जी के यहा पर दर्शनार्थ आये हुये एक भाई ने घड़ी चुरा ली। पता पाकर उसे रास्ते का खर्चा देकर चोरी-त्याग का उपदेश दिया।

मोरबी शहर मे एक ब्राह्मण के घर आटा मागने भिक्षुक आया एव उसने एक तपेली भी चुरा ली। मालिक ने देखकर कहा—भाई ! आटे के साथ घी भी ले लो। उसने कहा—किसमे लूँ ? मालिक ने चुराई हुयी तपेली निकाल कर घी से भर दी। भिक्षुक

शर्मिन्दा हो गया। मालिक ने भविष्य में चोरी न करने का उपदेश दिया।

४. बाबा भारती घोड़े पर सवार होकर कहीं जा रहे थे। खड्गसिंह डाकू लंगड़ा भिखारी बन कर रास्ते में बैठ गया। चढ़ने के लिये घोड़ा मांगा। दयालु बाबा ने दे दिया। चढ़ते ही घोड़े को दौड़ाया और कहने लगा— 'मैं तो डाकू हूँ।' सुनते ही बाबा ने कहा—भाई! यह बात किसी से कहना मत अन्यथा गरीबों का विश्वास उठ जायगा।' डाकू को ज्ञान हो गया और घोड़ा वापिस देकर बाबा से माफी मांगने लगा।

## २० चोर के विषय में कहावतें

| | | |
|---|---|---|
| १ | चोर रा पग काचा। | राजस्थानी कहावतें |
| २ | चोर रै मन मे चानणो (डर) वसै। | ,, |
| ३ | चोर री गति चोर जाणै। | ,, |
| ४ | चोर रा पग चोर ओलखै। | ,, |
| ५ | चोर ने चोर ही पकडे। | ,, |
| ६ | चोर री मा घडै में मुह घाल र रौवै। | ,, |
| ७ | जाए मारै बाणियो पिछाण मारे चोर। | ,, |
| ८ | सौ दिन चोर रा र एक दिन साहूकार रो। | ,, |
| ९ | सौ दिन सासू रा एक दिन बहू रो। | ,, |
| १० | सौ सुनार री र एक लुहार री। | ,, |
| ११ | साहूकार रै वासते तालो है चोर रै वासतै कोनी। | ,, |
| १२ | चोरी रो धन मोरी मे। | ,, |
| १३ | चोर ने चानणो को सुहावैनी। | ,, |
| १४ | चोर चोरी सू गयो तो काई हेराफेरी सू गयो? | ,, |
| १५ | कुत्ते ने चाहीजै अन्न र चोर ने चाहीजे धन। | ,, |
| १६ | चोर ने नही मार कर चोर री मा नै मारो! | ,, |
| १७ | चोर की दाढी में तिनका। | हिन्दी कहावतें |
| १८ | चोर ने कमाया चण्डाल ने खाया। | ,, |

१९ अधेरे मे चोर का बल। हिन्दी कहावतें

२० चोर सबको चोर समझता है। ,,

२१ जिसके हाथ मे डोरी, उसकी क्या चोरी ? ,,

२२ Birds of the Same feather flock together
बर्डस् ऑफ दी सेम फेदर फ्लोक टुगेदर—अंग्रेजी कहावत
चोर-चोर मोसियाई-भाई।

२३ He that Steal an egg will Steal an axe
ही दैट स्टील एन एग विल स्टील एन एक्स ,,
तृण चोर सो वज्र चोर।

२४ Ill got ill Spent (इल गोट इल स्पेन्ट)
चोरी का धन मोरी मे।

२५ सई सोनी सालवी · तेने जम न सके जालवी।
गुजराती कहावत

२६ चोर नी नजर चार, ने वणी नी बे। ,,

२७ सई चोरे कपडु सुनार चोरे रत्ती
हजाम विचारो शु चोरे माथामा काइ नथी। ,,

२८ क्या हम नही जानते कि हम छोटे चोरो को फासी देते हैं और बड़े चोरो को सिर झुकाते हैं।
—जर्मन कहावत

★

२१

# मिलावट

1. सरकारी रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली मे सन् १९५६ मे ४ प्रतिशत मिलावट थी। उसे रोकने के लिए काफी फूड-इन्सपेक्टर तैनात किये गये फिर भी सन् ५९ मे दो हजार खाद्य पदार्थो के परीक्षण मे ७०० पदार्थ दूषित निकले।
2. आज हल्दी मे रामरज, कालीमिरच मे पपीते के वीज, वादाम की गिरियो मे खुरमानी की गुठली, लालमिर्च मे गेरु, सुपारी मे छुहारे व खजूर की गुठली, पिसे हुये मसालो मे बुरादा, मिट्टी, ककर और दूध मे मलाई पैदा करने के लिये स्याही चूस मिलाया जाता है।
3. जहर खाकर भी न मरने पर एक व्यक्ति ने कहा—'हाय अभागा भारत! जहा आत्म-हत्या और मरने के लिये शुद्ध जहर भी नही मिलता।"
4. जमाना है मिलावट का कि चीजो मे मिलावट है।
रहा कुछ भी नही खालिश, कि चीजो मे मिलावट है।१।
न असली घी नजर आया, न खालिश दूध ही चक्खा
अनाजो मे मिलावट है, मसालो मे मिलावट है।२।
कहा बीमारियो ने आओ, मिल करके करे हमला

कि अब कोई नहीं उतरा, दवाओं में मिलावट है ।३।
ये धुंधली आंखें हिलते दांत, यूं फरियाद करते हैं ।
कि अंजन में मिलावट है, और मंजन में मिलावट है ।४।
तरक्की कर रहे हैं दिन-ब-दिन, फिर क्यूं ये बेचैनी ?
वह एटम बम बताता है, तरक्की में मिलावट है ।५।
नहीं होती है हल मुश्किल, करे लाखों जतन कोई ।
वजह यह साफ जाहिर है, विचारों में मिलावट है ।६।
'तबस्सुम' इस मिलावट ने, उजाड़ा आशियां अपना ।
गमों का जिक्र हो क्या अब, कि खुशियों में मिलावट है ७

—उर्दू कविता

★

## २१ मिलावट

१. सरकारी रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली मे सन् १९५६ मे ४ प्रतिशत मिलावट थी। उसे रोकने के लिए काफी फूड-इन्सपेक्टर तैनात किये गये फिर भी सन् ५९ मे दो हजार खाद्य पदार्थो के परीक्षण मे ७०० पदार्थ दूपित निकले।

२. आज हल्दी मे रामरज, कालीमिरच मे पपीते के वीज, बादाम की गिरियो मे खुरमानी की गुठली, लालमिर्च मे गेरु, सुपारी मे छुहारे व खजूर की गुठली, पिसे हुये मसालो मे बुरादा, मिट्टी, ककर और दूध मे मलाई पैदा करने के लिये स्याही चूस मिलाया जाता है।

३. जहर खाकर भी न मरने पर एक व्यक्ति ने कहा—'हाय अभागा भारत ! जहा आत्म-हत्या और मरने के लिये शुद्ध जहर भी नही मिलता।"

४. जमाना है मिलावट का कि चीजो मे मिलावट है।
रहा कुछ भी नही खालिश, कि चीजो में मिलावट है।१।
न असली घी नजर आया, न खालिश दूध ही चक्खा
अनाजो मे मिलावट है, मसालो मे मिलावट है।२।
कहा बीमारियो ने आओ, मिल करके करे हमला

## २२ रिश्वत

१ रिश्वत लेना तो महापाप है ही, लेकिन रिश्वत देकर काम निकलवाना भी पाप है।

२ दौलत को अफसरो और हकीमो के पास इस मतलव से न पहुँचाओ कि जुल्म करके लोगो के माल का हिस्सा हडपलो। —कुरान ४।१०

३ उपहार (भेट) लेना अपनी स्वतन्त्रता खोना है। —शेखशादी

४ जिन उपहारो की बड़ी आशा लगी रहती है वे भेट नही किये जाते, अदा किये जाते हैं। —फ्रैंकलीन

५ दरख्वास्त पर कुछ वजन रखो, वरना यह उड़ जायगी। —आज के राजकर्मचारियो का कथन

## २३ रिश्वत के बयान

१ रिश्वत कहती है कि मेरे बिना कोई देश, काल और स्थान खाली नहीं। मैं भोगदा, कष्टहारिणी और ऐश्वर्यदात्री हूँ। मेरी मुख्य प्रजा पुलिस-अदालतें-कन्ट्रोल-विभाग, परमिट-लाइसेंस आदि है। मैं नोट, खाद्य-घी-दूध-मिठाई, फ्रूट, वस्त्र, आभूषण आदि अनेक रूप में दी जाती हूं। घूँस, रिश्वत, पगडी, सिलामी, डाली, भेंट आदि मेरे अनेकानेक नाम हैं। मैं हंसते हुये मनुष्य को रुला देती हूँ, रोते हुये को हंसा देती हूँ। और मरते हुये को बचा देती हूँ। गरीबों का काम तो मेरे बिना आज होता ही नहीं। ज्यों-ज्यों सरकार मुझे निकालना चाहती है, मैं बढ़ती ही जाती हूँ। सच्चाई और सन्तोष को अपनाने से ही मेरा बहिष्कार हो सकता है।

## २४ रिश्वती राज्यकर्मचारी

१. यथा ह्यनास्वादयितु ह्यशक्य,
जिह्वातलस्थ मधु वा विष वा ।
अर्थस्तथा ह्यर्थचरेण राज्ञः,
स्वल्पोप्यनास्वादयितु न शक्य ॥
मत्स्या यथान्त सलिल चरन्तो,
ज्ञातु न शक्या सलिल पिबन्त ।
युक्तास्तथा कार्यविधौ नियुक्ता,
ज्ञातु न शक्या धनमाददाना ॥

—कौटिल्य-अर्थशास्त्र ६२-६३

जिस प्रकार जोभ पर रहे हुए मधु या विप का स्वाद नही लेना अशक्य है, उसी प्रकार राज्यअधिकारी के सामने धन आ जाने पर उसे नही लेना अशक्य है। जैसे जल मे सचरण करते हुए मत्स्य कब जल पी लेते हैं उसका पता नही चलता, वैसे ही कार्य मे नियुक्त राज्यकर्मचारी कहा अर्थग्रहण कर लेते है, उसका पता नही चलता ।

२ काम नही बनने से एक व्यक्ति ने दरखास्त के नीचे नोट लगा कर ऊपर लिख दिया **मेरा सच्चा सबूत नीचे है।** मजिस्ट्रेट ने देखते ही डिगरी दे दी एव कहा—'यदि तुम्हारे पास ऐसा सच्चा सबूत था तो इतनी देर क्यो की ?'

३. एक व्यापारी का जमीदार के साथ झगडा चल रहा था। व्यापारी ने मजिस्ट्रेट को कीमती पगडी भेट की। पता लगने पर जमीदार ने मजिस्ट्रेट के घर अपनी भैस बाध दी। कोर्ट मे फैसले के समय व्यापारी बार-बार कह रहा था—'हजूर! मेरी पगडी की लाज रखो।' मजिस्ट्रेट दो चार बार तो सुनता रहा, आखिर बोला-"भाई तुम्हारी पगडी तो भैस आकर चाब गई" बस जमीदार के हक मे फैसला हो गया।

४. रिश्वत लेनेवाले अफ्सर की टट्टी जाने के लोटे मे एक व्यक्ति ने असर्फिया रख दी एव वे अफसर के घर पहुँच गईं। कत्ल के केस का फैसला देते समय अपराधी के बाप ने कहा—'टट्टी का लोटा समझ के भी मेरे मुडेनु छड़ दो' अफसर चौंका एव सहम कर उसे छोड दिया।

★

## २५ रिश्वत न लेनेवाले विरले

१ नेमीचन्द जी मोदी कहा करते थे कि इन्दौर नरेश "तुकोजी राव" के केस मे वकीलो-न्यायाधोशो ने लाखो की रिश्वत ली। मैने एक पाई भी नही ली। अत. मुझे सब बेवकूफ कहा करते थे। अन्त मे जिन्होने रिश्वत का पैसा लिया था, वे प्राय· सभी अनेक प्रकार से दु खी हुये। किसी के स्त्री-पुत्र मर गये, किसी के घर मे चोरी हो गयी एव कोई शरीर से लाचार होकर सडने लगा।

२ एक सेठ ने अपना मुकदमा ठीक करवाने के लिये न्यायाधीश को २५ हजार रुपये देते हुये कहने लगा—'ले लो ! ले लो ! ऐसा देनेवाला फिर नही मिलेगा।' न्यायाधीश ने कहा—'अरे ! देनेवाले तो तेरे जेसे ३५३ मिल जायेगे, लेकिन नही लेनेवाला मेरे जैसा कोई एक भाग्य से ही मिलेगा।'

३. पैरिस मे मिस्टर 'कोल' म्युनिसपल मेबर थे, उनकी हालत गरीव थी। एक आदमी ने आकर कहा—म्युनिसपैलिटी यदि एक रेल चलावे तो उसे या फ्रेंच प्रजा को वडा लाभ हो सकता है। सात मेम्वरो मे से तीन तो हमारे पक्ष मे है। यदि एक आप और मिल जाये तो हम जोत सकें। मिस्टर कोल को यह कार्य न्यायपूर्ण नही लगने से वह इन्कार हो गया। आगन्तुक ने ५० हजार का चेक आगे रखा। गरीवी के कारण कोल कुछ उलझन मे पडा। उसकी स्त्री मेरी ने तत्काल कहा—'नाथ ! क्या हमारी प्रामाणिकता ५० हजार मे वेचने की चीज है।' ★

## २६ धोखा और धोखेबाज

१. धोखेबाज को धोखा देने मे दुगुनी प्रसन्नता होती है।

—लाफॉन्टेन

२ दूसरो का गुप्तभेद तुम्हे देनेवाले को कभी अपना मत समझो, क्योकि तुम्हारे साथ भी वह वैसा ही व्यवहार करेगा, जो दूसरो के साथ करता है।

—हजरतअली

३ चालाकी से कोई भी महत्वपूर्ण कार्य नही होगा।

—विवेकानन्द

४ व्यक्ति दूसरो की अपेक्षा स्वय द्वारा अधिक छला जाता है। —ग्रेनविल

४ आप ठग्या सुख ऊपजै, और ठग्या दु ख होय।

—राजस्थानी कहावत

५ दगा किसी का सगा नही है, किया न हो तो कर देखो, और किया उन्हो का घर देखो। —हिन्दी कहावत

७ तीन बाते याद रखो

(१) धोखा देना—नीचता है,

(२) धोखा खाना—मूर्खता है,

(३) धोखे से बचना—चतुरता है।

८ एक व्यक्ति ने सर्प-दश के इ जेक्सन निकाले। १६ रुपये

कीमत रखी, काफी चले। दूसरे ने नकली चलाये, आधी कीमत करदी, पहले का काम वन्द होगया। नगर सेठ के पुत्र को साप ने काटा, नकली इजेक्सन दिया, नही बचा फिर जब उसी का पुत्र सर्पदश द्वारा मरा तब काफी रोया-पीटा एव पछताया।

९. कोई एकबार धोखा दे तो उसकी गलती है, किन्तु यदि दूसरी वार धोखा दे दे तो फिर अपनी गलती है।

१०. गलत होड करके किसी के ग्राहक को छीनना उतना ही वुरा है जितना चोरी करना और डाका डालना।

**—तालमुद, बाबा मेतजिया—यहूदीधर्म**

११. चोर ने चद्दर और पगडी रख कर आटे के भरोसे चूने मे हाथ डाला। चूना उड़कर नाक मे चढा। खासी आने लगी। मालिक ने जागकर चोर की चद्दर और पगडी उठा ली। फिर हल्लाकर दिया, अतः चोर पकडा गया। अव मालिक एव चोर दोनो ही तू चोर—तू चोर कहने लगे। यही हालत आज व्यापारी और राज-कर्मचारियो की है।

# परिशिष्ट

वक्तृत्वकला के बीज
भाग १ से ५ तक मे
उद्धृत ग्रन्थो व व्यक्तियो की नामावली

# १ ग्रन्थ सूची


अङ्गुत्तर निकाय
अगिरास्मृति
अग्निपुराण
अथर्ववेद
अर्थशास्त्र
अध्यात्मसार
अध्यात्मोपनिषद्
अन्ययोगव्यवच्छेद द्वात्रिंशिका
अनुयोग द्वार
अपरोक्षानुभूति
अभिधम्मपिटक
अभिधानराजेन्द्र
अभिधानचिन्तामणि
अभिज्ञान शाकुन्तल
अमितिगति श्रावकाचार
अमृतध्वनि
अमर भारती (मासिक)
[illegible]वेस्ता
[illegible] स्मृति
[illegible]टाग हृदय-निदान
आगम और त्रिपिटक·एक अनुशीलन
आचाराङ्ग सूत्र
आर्थिक व व्यापारिक भूगोल
आप्त-मीमासा
आत्मानुशासन
आवश्यकनिर्युक्ति
आवश्यक मलयगिरि
आवश्यक सूत्र
आत्म-पुराण
आत्मविकास
आतुर प्रत्याख्यान
आपस्तम्बस्मृति
आवा अद्धी सुर्यश्त
औपपातिक सूत्र
इतिहास समुच्चय
ईशोपनिषद्
इस्लामधर्म
इष्टोपदेश
ईश्वरगीता
उत्तरराम चरित्र

उत्तराध्ययन सूत्र
उत्तराध्ययन वृहद्वृत्ति
उदान
उपदेश तरङ्गिणी
उपदेशप्रासाद
उपदेशमाला
उपदेशसुमनमाला
उपासक दशा
ऋग्वेद
ऋषिभासित
ऐतरेय ब्राह्मण
कठोपनिपद्
कथासरित्सागर
कल्याण (मासिक)
कवितावली
कात्यायन स्मृति
किशन बावनी
किरातार्जुनीय
कीर्तिकेयानुप्रेक्षा
कुमारपालचरित्र
कुमार सम्भव
कुरानशरीफ
कुरुक्षेत्र
कुवलयानन्द
कूटवेद
केनोपनिषद्
कौटिलीय अर्थशास्त्र
खुले आकाश मे
गच्छाचार प्रकीर्णक
गरुड पुराण
गृहस्थधर्म
गीता
गीता भाष्य
गुर्जरभजनपुष्पावली
गुरुग्रन्थ साहिब
गोम्मटसार
गौतमस्मृति
गोरक्षा-शतक
घटचर्पटपजरिका
चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र
चन्द-चरित्र
चरक सहिता
चरित्र रक्षा
चरकसूत्र
चाणक्यनीति
चाणक्यसूत्र
चित्राम की चोपी
चीनी सुभाषित
छान्दोग्य उपनिषद्
जपुजी साहिब

जागृति (मासिक)
जातक
जाबालश्रुति
जाह्नवी
जीतकल्प
जीवन-लक्ष्य
जीवन सौरभ
जीवाभिगम सूत्र
जैनभारती
जैनसिद्धान्त दीपिका
जैनसिद्धान्त बोलसग्रह
टॉड राजस्थान इतिहास
टी वी हैण्डबुक
डिकेन्स
डेलीमिरर
तत्त्वामृत
तत्त्वार्थ-सूत्र
तन्दुलवैचारिकगाथा
तत्त्वानुशासन
ताओ-उपनिषद्
ताओ-तेह-किंग
तात्त्विक त्रिशती
तिरुकुरल
[illegible]न बात
तैत्तरीय उपनिषद्
दशाश्रुत-स्कन्ध
दशाश्रुत-स्कन्धवृत्ति
दक्षसहिता
दर्शनपाहुड
दान-चन्द्रिका
दिगम्बर प्रतिक्रमण त्रयी
दीर्घनिकाय
दोहा-सदोह
द्वात्रिंशद् द्वात्रिंशिका
द्रव्य-सग्रह
धन-बावनी
ध्यानाष्टक
धम्मपद
धर्मबिन्दु
धर्मयुग
धर्मसग्रह
धर्मरत्न प्रकरण
धर्मशास्त्र का इतिहास
धर्मों की फुलवारी
तैत्तिरीय ताण्ड्य महाब्राह्मण
तोरा
थेरगाथा
दशवैकालिक सूत्र
दर्शन-शुद्धि
धर्म-सूत्र

न्याय दीप
नन्दी सूत्र
नवी
नविश्ते
नवभारत टाइम्स (दैनिक)
नवनीत (मासिक)
नवीन राष्ट्र एटलस
नारद पुराण
नारद नीति
नारद परिव्राजकोपनिषद्
निर्णयसिन्धु
नियमसार
निरुक्त
निशीथ चूर्णि
निशीथ भाष्य
निरालम्वोपनिपद्
नीतिवाक्यामृत
नैपधीय चरित्र
पचतत्र
पचास्तिकाय
पजावकेशरी
पद्मपुराण
पहेलवी टेक्सट्स्
पब्लियस साइरस
पद्मानन्द पचविंशति
प्रवचन सार
प्रवचन सारोद्धार
प्रवचन डायरी
प्रश्नव्याकरण सूत्र
प्रशमरति
प्रज्ञापना सूत्र
पातजल योगदर्शन
पारस्कर स्मृति
प्रास्ताविक श्लोकशतकम्
पुरानी बाइविल
पुरुपार्थ सिद्ध्युपाय
पुराण
पूर्व मीमासा
बृहत्कल्प भाष्य
ब्रह्मग्रन्थावली
ब्रह्मानन्द गीता
बृहदारण्यकोपनिषद्
बृहस्पतिस्मृति
वाइविल
बुखारी
वीरपश्त्
बुद्ध-चरित्र
वेदीदाद
वौद्ध-साधक
वगश्री

भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक
भक्ति-सूत्र
भगवती-सूत्र
भर्तृहरि नीतिशतक
,, वैराग्य शतक
,, शृंगार शतक
भविष्य-पुराण
भावप्रकाश
भाषा श्लोकसागर
भामिनीविलास
भाल्लवीय श्रुति
भूदान पत्रिका
भोजप्रबन्ध
मज्झिमनिकाय
मन्थन
महाभारत
महानिद्देस पालि
महानिशीथ भाष्य
महानिर्वाण तन्त्र
मनुस्मृति
मनोनुशासनम्
मत्स्यपुराण
महाप्रत्याख्यान
मरकूस
मिलाप

मुण्डकोपनिषद्
मुस्लिम
मेडम द स्नाल
मेगजीन डाइजेस्ट
मोहमुद्गर
यश्न्
यश्त्
यशस्तिलकचम्पू
यजुर्वेद
याज्ञवल्क्य स्मृति
यूहन्ना
योगवाशिष्ठ
योगदृष्टि समुच्चय
योगशास्त्र
योगविन्दु
रघुवंश
रश्मिमाला
राजप्रश्नीय सूत्र
रामचरित मानस
रामसतसई
रामायण
रीड मेगजीन
लूका
व्यवहार चूलिका
व्यवहार-भाष्य

व्यवहार-सूत्र
व्यासस्मृति
व्यास-सहिता
वृहत्पाराशर सहिता
वृहद् द्रव्यसग्रह
वाल्मीकि रामायण
वशिष्ठ-स्मृति
विचित्रा (मासिक)
विवेकचूडामणि
विदुर नीति
विनयपिटक
विवेक विलास
विशेषावश्यक भाष्य
विशेपावश्यक चूर्णि
विश्वकोष
विज्ञान के नए आविष्कार
विसुद्धिमग्गो
विष्णुस्मृति
विश्वमित्र (दैनिक)
वीतराग स्तोत्र
वैद्यक ग्रथ
वैद्यक-शास्त्र
वैद्य रसराजसमुच्चय
वैशेषिक दर्शन
वैदिक धर्म क्या कहता है ?
वैदिक-विचार विमर्शन
शतपथ ब्राह्मण
श्वेताश्वेतारोपनिषद्
शकरप्रश्नोत्तरी
शख स्मृति
शार्ङ्गधर
शान्त सुधारस
शान्तिगीता
श्राद्ध विधि
शास्त्रवार्तासमुच्चय
श्रावकप्रतिक्रमण
शिशुपालवध
शिवपुराण
शिव-सहिता
श्रीमद्भागवत
शील की नववाड़
शुकबोध
शुक्ल युजर्वेद
षट्प्राभृत
स्कन्ध पुराण
स्थानाग सूत्र
सभा तरग
सचित्र-विश्व कोष
सत्यार्थप्रकाश
समयसार

समवायाग सूत्र
सम्बोधसत्तरि
सप्तव्यसन सन्धान काव्य
सरिता
सर्जना
सवैया शतक
स्वप्न शास्त्र
स्वर-साधना
समाधिशतक
सन्मति तर्कप्रकरण
स्टडीज इन डिसीट
सरल मनोविज्ञान
सयुत्तनिकाय
सामायिक सूत्र
सामवेद
सावधानी रो समुद्र
सिद्धान्त कौमुदी
सिन्दूर प्रकरण
सुखमणि सहिता
सुत्तनिपात
सुभाषितावलि
सुभाषितरत्न खण्ड-मजूषा
[illegible]ाषित रत्नभाण्डागार
[illegible] सचय
[illegible]तपाहुड

सुवोध पद्माकर
सुभाषित रत्न सन्दोह
सुश्रुत शरीर-स्थान
सूत्रकृताग सूत्र
सूक्तरत्नावलि
सूक्तमुक्तावलि
सौर परिवार
हुउश् मज्दा
हदीश शरीफ
हरिभद्रीयआवश्यक
हनुमान नाटक
हृदय प्रदीप
हृषिकेश
हितोपदेश
हिगुलप्रकरण
हिन्दुस्तान (दैनिक व साप्ताहिक)
हिन्दसमाचार
क्षेमेन्द्र
त्रिषष्टि शलाकापुरुष चरित्र
ज्ञाता-सूत्र
ज्ञानार्णव
ज्ञान-सार
ज्ञानप्रकाश

□□

# व्यक्ति-नामावली

अफलातून
अबुमुर्ताज
अबीदाउद
अबूवकर केतानी
अल्फान्सीकर
अरविन्द घोष
अरस्तू
आचार्य उमाशङ्कर
आचार्य श्रीतुलसी
आचार्य रजनीश
आर्रकिंग
आरजू
आस्निऔमले
ओडोर पारकर
इपिक्टेट्स
इब्राहिम लिंकन
उमास्वाति
एच, मोर
एन्जिलो
एनीविसेन्ट
एमर्सन
एडीसन
एविड
एलाव्हीलर
एलोसियस
कविराज हरनामदास
कवीर
कन्फ्युसियस
कण्डोर सेट
कागफ्युत्सी
कार्लाइल
कार्लमार्क्स
कामवेल
क्विकक्
कालूगणी
कुन्दकुन्दाचार्य
कूपर
केटो
कैनेथवालसर
कैम्पिस
कैथराल
कोल्टन
खलील जिब्रान
ग्वाल कवि
गाधी
गिवन
गुरु गोरखनाथ
गुरु नानक
गेटे
ग्रेविल
ग्रेनविल
गोल्डस्मिथ
गोल्डो जी
गौतम बुद्ध
जगन्नाथ कवि
जयचन्द
जयशकर प्रसाद
जयाचार्य
जवाहरलाल नेह
जार्ज चेपमैन

| | | |
|---|---|---|
| जान मिल्टन | डाड्रिज | नेपोलियन |
| जामी | डिकेन्स | प्लुटार्क |
| जॉनसन | डिजरायली | प्लेटो |
| जाविदान ए खिरद | डी० जेरोल्ड | पटोरिया |
| जीनपाली | डी० एल० मूडी | पद्माकर |
| जुगल कवि | डेलकार्नेगी | परसराम |
| जुन्नेद | तिरमजी | पीटर वैरो |
| जुन्नून | तुलसीदास | पीपाकवि |
| जूर्वट | थामस केम्पी | पेस्क |
| जेगविल | थामस फूलर | प्रेमचन्द |
| जे फरीश | थेल्स | पेरोसेल्स |
| जे. नोफेन | थैकरे | पोप |
| जे. पी. सी. वर्नार्ड | थोरो | फुलर |
| जे पी हालेण्ड | दादू | फ्रैंकलिन |
| जौक | दीपकवि | वर्टन |
| टप्पर | धनमुनि | बनारसीदास |
| टालस्टाय | धूमकेतु | वर्नार्डशा |
| टामस कैम्पिस | नकुलेश्वर | बलवर |
| टालमेज | नजिन | ब्रह्मदत्त कवि |
| टी एल. वास्वानी | नलिन | ब्रह्मानन्द |
| ड ल जार्ज | नाथजी | बालजक |
| डाइट रॉट | निकोलस | बावरी साहिब |
| हरदयालमाथुर | निपट निरजन | बिल्हण कवि |
| एलेग्जी केरेल | निर्मला हरवशसिङ्ह | बीचर |
| डॉ ग्यास जे रोल्ड | नीत्से | बुल्लेशाह |

बूलकोट
बेकन
बेताल कवि
बैल
वो वो
वोधा
भगवतीचरण वर्मा
भिक्षुगणी
भूधर दास
महात्मा भगवानदीन
मदन द० रियू
महर्षि रमण
मार्कटेन
माण्टेन
माघकवि
मिल्टन
मेरीकोन ए-डी
मुहम्मद-विन-वशीर
मेरी ब्राउन
मेसेंजर
मैकिन्तोस
मैथिलीशरण गुप्त
मोलियर
यशोविजय जी
यूसूफ अस्वात
रज्जवदास
रडयार्ड कियलिग
रहीम
रविया
रवि दिवाकर
रस्किन
रवीन्द्रनाथ टैगोर
रामकृष्ण परमहस
रामचरण कवि
रामतीर्थ
रामरतन शर्मा
रिस्टर
रिशर
रसो
रोम्यारोला
रोशे
रोशफूको
लाफान्टेन
लावेल
लागफेलो
लीटन
लीनलिज
लुकमान हकीम
लूथर
लेलिन
लोकमान्य तिलक
क्लेर
व्यावली
वृन्द कवि
वायरन
वायर्स
वारटल
वाल्टेयर
वाशिंगटन इर्विन
विजयधर्मसूरि
विनोवा भावे
विलकाक्स
विलियमपिट
विलियमपेन
विवेकानन्द
शकराचार्य
शापेनहावर
शिलर
शिवानन्द
शुभचन्द्राचार्य
शेक्सपियर
शेखसादी
स्टैनिलस
स्टील
स्पेंसर

सत्यदेवनारायण सिन्हा
सन्त आगस्तीन
सत ज्ञानेश्वर
सत तुकाराम
सन्त निहालसिंह
सद्गुरुचरण अवस्थी
समर्थगुरु रामदास
सायरस
सिंगुरिनी
स्विट
सिसरो
सुकरात
सुन्दरदास
सूरत कवि
सूरदास
मेलहास्ट
सैनेका
सेमुअल जानसन
सोमदेव सूरि
हजरत अली
हजरत मुहम्मद
हरिभद्र सूरि
हलवर्ट
हयहया
ह्यूम
हाफिज
हावेल
हालीवर्टन
हार्टले
हे एन. भाग
हेनरी वार्ड वीचर
हैजलिट
हैली वर्टन
होमर
होरेश वाल पोल
त्रायण्ट

□ □

## लेखक की महत्वपूर्ण रचनाएं

### प्रकाशित

| | | |
|---|---|---|
| १ एक आदर्श आत्मा | ०-४० | हरकचन्द इन्द्रचन्द नौलखा<br>माधोगज, लश्कर<br>ग्वालियर (म० प्र०) |
| २ चमकते चाद | ०-४० | रतीराम रामस्वरूप जैन<br>पो० कैथलमण्डी (हरियाणा) |
| ३. चरित्र-प्रकाश | २-५० | श्री जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी स<br>बालोतरा (राजस्थान) |
| ४ भजनो की भेंट | ०-६० | ,, ,, |
| ५ लोक प्रकाश | १-२५ | ,, ,, |
| ६ चौदह नियम | ०-२० | आदर्श साहित्य सघ<br>पो० चूरु (राजस्थान) |
| ७. मोक्ष प्रकाश | | ,, ,, |
| ८ जैन-जीवन | ०-६५ | श्री जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी स<br>टोहाना (हरियाणा) |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९. | प्रश्न प्रकाश | ०-८० | श्री जैन श्वे० तेरापन्थी महासभा<br>३, पोर्चगीज चर्च स्ट्रीट,<br>कलकत्ता-१ |
| १० | मनोनिग्रह के दो मार्ग | १-२५ | मदनचन्द सम्पतराय बोरड़<br>दुकान न० ४०, धानमण्डी,<br>श्रीगगानगर (राजस्थान) |
| ११ | सच्चा धन | ०-३० | श्री दलीपचन्द<br>द्वारा : ला० दयाराम बृजलाल जैन |
| १२ | सोलह सतिया<br>(द्वि स ) | २-०० | टोहाना मण्डी (हरियाणा) |
| | सोलह मतियां<br>(तृ स ) | | श्री चादमल मानिकचन्द चौरडिया<br>पो० छापर, (चूरू, राजस्थान) |
| १३ | ज्ञान के गीत<br>(चौथा सस्करण) | १-०० | लाला दयाराम मंगतराम जैन<br>टोहानामण्डी (हरियाणा) |
| १४ | ज्ञान-प्रकाश | १-०० | श्री जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी सभा<br>पो० भीनासर (राजस्थान) |
| १५ | जीवन प्रकाश (उर्दू) | | श्री जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी सभा<br>नाभा (पजाब) |
| १६ | सच्चा धन (उर्दू) | ०-३० | ,, ,, |
| १७ | तेरापन्थ एटले शु ? | ०-६२ | नेमीचन्द नगीनचन्द जवेरी<br>'चन्द्र महल'<br>१३०,शेखमैंमन स्ट्रीट, बम्बई-२ |
| | :ले शु ? | ०-७५ | |
| | वनो ! | ०-७५ | |

| | | |
|---|---|---|
| २० वक्तृत्वकला के बीज<br>(भाग १ से १० तक)<br>प्रत्येक भाग<br>प्रकाशित ५ भाग<br>प्रेस मे ५ भाग | ५-५० | समन्वय प्रकाशन<br>द्वारा मोतीलाल पारख<br>पो० बाक्स न० ४२,<br>अहमदाबाद-२२<br>एव<br>सजय साहित्य सगम<br>दासबिल्डिग न० ५,<br>बिलोचपुरा, आगरा-२ |

# लेखक की अप्रकाशित रचनाएं

हिन्दी
अवधान-विधि
उपदेश-द्विपञ्चाशिका
उपदेश सुमनमाला
जैनमहाभारत
जैन रामायण
दौहा-सदोह
व्याख्यान मणिमाला
व्याख्यान रत्नमञ्जूषा
वैदिक विचार विमर्शन (वडा)
सक्षिप्त वैदिक विचार विमर्शन
सस्कृत वोलने का सरल तरीका

संस्कृत :
ऐक्यम्
एकाह्निक कालूशनकम्
देवगुरु धर्म द्वात्रिंशिका
प्रास्ताविकश्लोक शतकम्
भाविनी
श्रीकालू कल्याणमन्दिरम्
श्रीभिक्षु शब्दानुशासन वृत्तिढि
तप्रकरणम्

गुजराती :
गुर्जर व्याख्यान रत्नावलि
गुर्जर भजन पुष्पावलि

राजस्थानी
औपदेशिक ढाले
कथा प्रवन्ध
ग्यारह छोटे व्याख्यान
छः वडे व्याख्यान
धन वावनी
प्रास्ताविक ढाले
सवैया-शतक
सावधानी रो समुद्र

पंजावी
पंजाव पच्चीसी